रचनाकार

आत्मकथा लिखब सहज-सरल नहि होइछ। अपन जीवनकेँ सर-संबंधी, इष्ट-मित्र, समाजक संग जीवनक आधार (पेशा) केँ डेबैत रहबाक क्रमकेँ प्रस्तुत करब आ सेहो दीर्घ वयसमे स्मरण शक्तिकेँ झकझोरैत बड़ कठिन होइछ। शून्य सँ शिखरक बखान करब बिना लागि-लपेटकेँ शब्द रूपमे उतारब सभ नहि कऽ सकैछ।

कहल जाइछ जे सभ व्यक्तिक जीवन-यात्रा कोनो उपन्याससँ कम नहि होइछ जँ ओकरा व्यक्त कयल जाय। **श्री कामेश्वर चौधरी** अवकाश प्राप्त (आइ.आर.एस. एस. अधिकारी) कयलाक बाद लेखन दिस उन्मुख भेलाह, आ पहिने 'सनेस' कविता संग्रह आ लगले 'अहाँक संग-संग' अपन दाम्पत्य जीवनकेँ पोथीक रूप दऽ चर्चित भऽ गेलाह। आब उपस्थित भऽ रहलाह अछि अपन आत्मकथा 'अपन-अपन दीप' संग। पोथीक रूपमे हिनक ई तेसर कृति छनि। अछि तँ ई छोट सन पोथी, मुदा सहज प्रस्तुति, सरल भाषा, तथ्यगत स्थापना करैत आन आत्मकथा सँ किछु भिन्न अछि। लिखल एहि पोथी पर बहुत किछु जा सकैछ, मुदा पाठक लोकनि सँ अनुरोध जे अपने लोकनि पढ़ि स्वयं एहि पर चर्च करी। नीक लागत।

मधुबनी, ग्राम मेघौल निवासी श्री कामेश्वर चौधरी पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यमे प्रारंभेसँ सहभागी रहलाह। लेखन-पठन-पाठन एवं भ्रमणमे बेस अभिरूचि। समाजक कमजोर लोककेँ उठयबाक हेतु सतत तत्पर।

इंडिका इन्फोमीडिया
नई दिल्ली

ISBN 978-81-988318-7-3
9 788198 831873
मूल्य : 400/-

अपन-अपन दीप : जीवन-यात्रा

कामेश्वर चौधरी

आत्मकथा

अपन-अपन दीप
जीवन-यात्रा
(অপন-অপন দীপ : জীৱন-যাত্ৰা)

कामेश्वर चौधरी

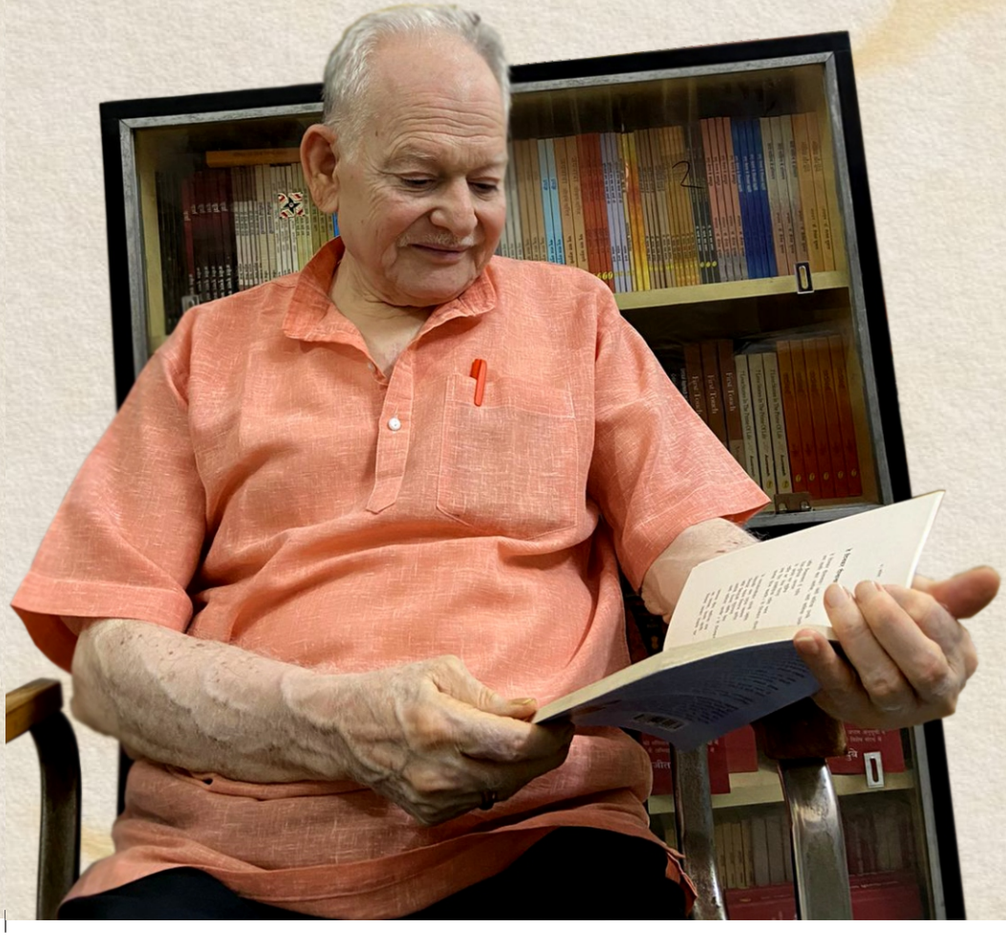

अपन-अपन दीप
जीवन-यात्रा

अपन-अपन दीप

जीवन-यात्रा

कामेश्वर चौधरी

इंडिका इन्फोमीडिया
जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

ISBN : 978-81-988318-7-3

अपन-अपन दीप : जीवन-यात्रा

लेखक : कामेश्वर चौधरी

सर्वाधिकार © : लेखक

संपर्क :
28 सी, एवरशाइन अपार्टमेंट, डी ब्लॉक,
विकासपुरी, नई दिल्ली–110018
मोबा. : 97172 45666
ई-मेल : cmmsnr@gmail.com

प्रकाशक
इंडिका इन्फोमीडिया
डब्ल्यू.जेड. 43ए, गली नं. 1, लाजवंती गार्डेन, नई दिल्ली–110046
मोबा. : 9350951555; ई-मेल : indicainfo@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2025
मूल्य : ₹ **400/-**

सहयोग
शेखर प्रकाशन, पटना

मुद्रक
एक्सट्रीम ऑफिस एड्स प्रा. लि., नांगल राया, जनकपुरी, नई दिल्ली–110046

Apan-Apan Deep : Jeevan-Yatra; A Book of Autobiography in Maithili
by Kameshwar Choudhary
Price: ₹ 400/-

समर्पित

पूज्य पिता स्व. देव नारायण चौधरी (दादा)
एवं
पूजनीया माए सावित्री देवी कें
चरण-कमलमे

अनुक्रम

कविरेकः प्रजापतिः — *नव*

प्राक्कथन — *तेरह*

1. मोन पड़ैए अपन गाम — 1
2. पटनाक पहिल यात्रा — 6
3. प्रणय-सूत्रक बंधन : सझिया जमाए — 12
4. बी.एच.यू.मे प्रवेश — 15
5. कर्मक्षेत्रक यात्रा — 25
6. दिल्लीक यात्रा — 29
7. बम्बई प्रवास — 32
   - 7.1 सामाजिक/सांस्कृतिक जीवन
   - 7.2 सामाजिक समूह आ नेटवर्क
8. दिल्ली आगमन — 45
9. भूमण्डलीकरणक बिहाड़ि — 50
10. भारतीय रेलवेक सेवा-यात्रा — 53
    - 10.1 रेल भवन आ जीवनतारा भवनक सामंजस्य
    - 10.2 पू.रे. जमालपुर लोको कारखानामे प्रतिष्ठापन
    - 10.3 सेवा मध्य प्रशिक्षण
    - 10.4 रेल मंत्रालयमे प्रतिनियुक्ति
11. पूर्व मध्य रेलमे प्रस्थापना — 67
    - 11.1 पू.म.रे.क सामान्य प्रबन्धन
    - 11.2 पू.म.रे.क सामग्री पूर्ति शृंखला प्रबन्ध

11.3 पू.म.रे.क भंडार नियंत्रकक कार्यभार
11.4 पटना केन्द्रीय अस्पतालक निर्माण
11.5 रेल निरीक्षणक संस्कृति
11.6 पू.म.रे. हाजीपुरक जीवन चर्चा
12. पारिवारिक जीवन 83
12.1 दाम्पत्य जीवन
12.2 स्मिताक विवाह
12.3 दाइक दुनिया
13. दिल्ली पुनरागमन 95
14. रेल सेवासँ अवकाश 99
14.1 सौरभक विवाह
15. अवकाश प्राप्त यायावर 104
16. विदेश यात्रा 110
16.1 सिंगापुरक यात्रा
16.2 स्वीटजरलैंडक यात्रा
17. उद्योग मंत्रालयमे योगदान 115
18. इराक मुण्डन 120
19. भारतमे लॉकडाउन 122
20. भरत वाक्य 126

कविरेकः प्रजापतिः

सृष्टिक आदिकालहिसँ लोकेषणा मानवक सहज प्रवृत्ति रहल अछि। एही प्रवृत्तिक वशीभूत लोक जनसामान्यक अपेक्षा किछु नूतन आ विशिष्ट कर्तृत्व द्वारा स्वयंकेँ विशिष्ट प्रमाणित करबाक प्रयत्न करैत रहैत अछि। साहित्यिक संरचना सेहो लोकक विशिष्ट व्यक्तित्वक परिचायक रहल अछि आ मानवकेँ जरा-मरणक भयसँ मुक्ति दिअयबामे सक्षम बुझना जाइत रहल अछि। आचार्य भर्त्तृहरिक उक्ति प्रसिद्ध छनि–

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्॥

मुदा काव्यरसिक होयब पृथक् बात थिक आ कवि होयब पृथक्। कवित्वक हेतु नैसर्गिकी प्रतिभा प्राथमिक आ अनिवार्य तत्त्व थिकैक, तखने बहुश्रुति किंवा अभ्यासो सहायक भऽ सकैत छैक। एही तथ्यकेँ लक्ष्य कऽ कऽ अग्निपुराणकार कहने होयताह–

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥

स्पष्ट अछि जे कवित्वक हेतु दुर्लभ प्रतिभाक अनिवार्यता छैक जे ईशाधीन कहल जा सकैछ, परम तत्त्वक अधीन कहल जा सकैछ।

प्रतिभावान लोक अपन प्रतिभाक सदुपयोग द्वारा मानव कल्याणक विभिन्न मार्गकेँ प्रशस्त करैत आयल छथि जाहिमे एकटा मार्ग काव्य-रचनो रहल अछि जकर उद्देश्य पर विमर्श करैत आचार्य मम्मटक समन्वयवादी मान्यता सर्वाधिक लोकग्राह्य रहल अछि। हुनक उक्ति छनि–

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥

हिनक एहि उक्तिक अनुसार काव्य-रचनाक सर्वाधिक महत्वपूर्ण आ प्रथम उद्देश्य थिक यशोभिलाषाक पूर्ति अथ च लोकेषणाक परितृप्ति। लोकरंजन, लोकशिक्षण, अर्थप्राप्ति ओ अन्य काल्पनिक उद्देश्य सब अनुषंगी उद्देश्यटा मानल जा सकैत अछि आ एकरा सभक प्राप्तिक अन्यान्यो बहुशः संसाधन सहज प्राप्तव्य छैक। मुदा अक्षय कीर्त्ति काव्य-रचनेसँ सम्भव छैक, एकर साधकक यशः काया जरा-मरणक भयसँ मुक्त रहैत अछि।

आधुनिक मैथिलीमे काव्य रचनाक दूटा प्रमुख उद्देश्य दृष्टिगोचर होइत अछि– मातृभाषानुरागक विज्ञप्ति ओ यशस्विताक लाभ। अधिकांश प्रतिभावान मातृभाषानुरागी मैथिल काव्य-रचना दिस उन्मुख रहलाह अछि। एहन रचनाकार लोकनिक तीन गोट कोटि स्पष्टतः दृश्यमान रहल अछि। प्रथम कोटिमे ओहन रचनाकार लोकनिकेँ राखल जा सकैछ जे सब मातृभाषानुरक्तिवश निरपेक्ष भावेँ रचनाशील रहलाह, दोसर कोटिमे ओहन रचनाकार लोकनिकेँ परिगणित कयल जा सकैत छनि जे सब वृत्तिपक्षीय विवशतावश रचनाशील भेलाह आ तृतीय कोटिमे ओहन रचनाकारकेँ स्थान प्रदान कयल जा सकैत छनि जे सब एकमात्र लोकेषणाक सिद्धयर्थ रचनाशील भेलाह। एहन रचनाकार लोकनि 'काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्'क अनुगमन कय रचनाशील भेलाह आ कतोक तँ प्रभूत यशस्विता लाभक संगहि पर्याप्त अर्थलाभो पयबामे सफल भेलाह।

अन्तिम कोटिक रचनाकार लोकनिमे विवेकानन्द ठाकुरजीक नाम अत्यन्त आदरक संग लेल जा सकैत छनि जनिक स्वीकारोक्ति 'साठिम वर्षमे कविता लिखबाक जे जुआरि उठल, से उठले रहल' अत्यन्त प्रसिद्ध भेल। वयसक चतुर्थ चरणमे हिनक जे मातृभाषानुराग जाग्रत भेलनि तकर परिणामस्वरूप मैथिलीकेँ 'एकसरे ठाढ़', 'चानन घन गछिया', 'श्वास-श्वासमे विश्वास', 'जे मुँह अपन', कथा-उपकथा सदृश पोथीक उपहार प्राप्त भेलैक आ हिनक 'चानन घन गछिया' साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भऽ अखिल भारतीय स्तरीयता प्राप्त कयलकनि।

तहिना केदारनाथ चौधरी सेहो वयसक चतुर्थ चरणमे चमेली रानी, माहुर, करार, हीना, अयना आदि उपन्यास ओ संस्मरण विधाक पोथी 'अबारा नहितन' लिखि नहि केवल मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ समृद्ध करबामे सफल भेलाह, अपितु हिनक पोथी सभ ततेक लोकप्रिय भेल जे ओकरा सभक अनेक संस्करण दर संस्करण होइत रहल आ ई विश्वम्भर फाउण्डेशन पुरस्कार सहित प्रबोध साहित्य सम्मानसँ समलंकृत भऽ पर्याप्त यशस्वी भेलाह।

ई. नमोनाथ झा सेहो तेसर बुद्ध, सातम आसमान, दोसर अहल्या, पवित्र माटि

आदि औपन्यासिक कृतिक प्रणयन-प्रकाशन सक्रिय जीवनसँ अवकाशोपरान्ते कऽ प्रसिद्ध भेलाह। रवीन्द्रनाथ टैगोर ओ साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ विभूषित श्री जगदीश प्रसाद मण्डल अपन वयःक्रमक तेसर सोपान पर चढ़लाक बाद मैथिली लेखन दिस आकृष्ट भेलाह तँ विभिन्न विधाक शताधिक पुस्तकाकार रचना प्रस्तुत कऽ एकटा तेहन मानदंड ठाढ़ करबामे समर्थ भेलाह जकर जोड़ लागब असम्भवे बुझना जाइछ। गद्य विधाक बहुआयामी रचनाकार श्री रवीन्द्र नारायण मिश्र तथा पद्य विधाक माध्यमे मैथिलीक संपोषणमे निरत श्री राजकिशोर मिश्र आदिकेँ एही कोटिमे परिगणित कयल जा सकैत छनि। कालक्षेपणक हेतु मैथिली लेखनक क्षेत्रमे वरिष्ठ नागरिक लोकनिक ई सक्रियता सब मैथिलीक विकास-प्रकाशक हेतु स्वागत योग्य पदक्षेप थिक। संविधान-सम्मत भाषा मैथिलीक गरिमा ओ मिथिलाक सांस्कृतिक अस्मिताक रक्षाक दृष्टिञे समस्त मैथिलीभाषी समाजक सहयोग वांछनीय रहल अछि जकर किंचित प्रतिपूर्ति एहू माध्यमसँ भऽ रहल अछि।

मैथिली रचनाकार लोकनिक एही श्रेणीमे श्री कामेश्वर चौधरीजीकेँ समाहित कयल जा सकैत छनि जे मातृभाषानुरागसँ ओत-प्रोत रहैत अयलाह अछि आ 2024 इसवीमे 'सनेस' कविता-संग्रह लऽ कऽ प्रस्तुत भेलाह। शीघ्रे अपन भक्ति गीत, लोकगीत, बाल कविता तथा यति, गति, प्रवाहपूर्ण नव कविताक विषय, शिल्प ओ शैलीक अनुगमन द्वारा श्रेष्ठ कविक रूपमे अपन परिचिति स्थापित कऽ लेलनि। हिनक सहृदयता, चिन्तन, कविचातुर्य ओ दार्शनिक भाव-भंगिमा कोनो पाठककेँ रससिक्त करबामे सर्वथा समर्थ अछि। द्रष्टव्य अछि हिनक किछु पाँती, यथा–

तटस्थ भऽ गेल छी/ समुद्रक पानि जकाँ
पहाड़क आकृति जकाँ/ नदीक प्रकृति जकाँ
सूर्यक अभिव्यक्ति जकाँ/ चन्द्रक मौलिकता जकाँ
तरेगनक दृष्टि जकाँ/ गाछ-वृक्षक स्वभाव जकाँ।

सम्प्रति हिनक 'अपन-अपन दीप' पोथी प्रकाशन-पथपर अग्रसर भऽ रहल छनि। ई आत्म-संस्मरणपरक पोथी थिकनि। एहिमे ई अपन विगत जीवनक सार-संक्षेपकेँ, ओकर कटु-मधु अनुभूतिकेँ सहज, सरल ओ प्रसादगुणसंपन्न शब्दावलीक माध्यमे प्रस्तुत कय आत्मविश्लेषणमे प्रवृत्त भेल छथि। आत्मनिष्ठताक संग रचित एहि पोथीमे हिनक वैयक्तिक जीवनक एकटा दीर्घ कालखण्डमे भोगल यथार्थकेँ आत्यन्तिक इमानदारीक संग प्रस्तुत कयल गेल अछि जे अपन सरस शैली ओ भावुकतासँ संतृप्त रहबाक कारणे सहजे लोकचित्तकेँ आकर्षित करबाक सामर्थ्य

रखैत अछि। ततबे नहि, ई पोथी तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक ओ प्रशासनिक क्षेत्रमे व्याप्त परिवेशक दस्तावेजो थिक आ एकटा अनुशासित ओ संयमशील उच्च पदस्थ पदाधिकारीक जीवनक उच्चावच्च संघर्ष-पथक बानगी सेहो, जे अपन आदर्श जीवन-पद्धतिक कारणे प्रेरणा-पुरुषक रूपमे जीवन-यापन करैत अयलाह। पोथीमे कतहु कथातत्त्वक प्रधानता अछि तँ कतहु निबंधात्मकताक, मुदा सर्वत्र रचनाकारक सर्जनात्मक प्रतिभाक दृष्टान्त भेटैत चलैत अछि।

वयःक्रमक चतुर्थ चरणमे श्रीचौधरीक गद्य ओ पद्य दुनू विधामे गत्वरता आश्वस्तिकारक अछि। अपन नैसर्गिकी प्रतिभाक प्रसादात् जहिना ई क्लास वनसँ नीचाँ नोकरी नहि करबाक अभिलाषाकेँ पूर्ण करबामे सफल भेलाह तहिना जँ मातृभाषानुरागक प्रति आरम्भहिसँ प्रतिबद्धता देखौने रहितथि तँ भाषा-साहित्येतर क्षेत्रमे वृत्ति धारण करितहुँ उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास', श्री अशोक कुमार ठाकुर, श्री मंत्रेश्वर झा आदि सदृश नामी-गिरामी साहित्यकारक रूपमे परिगणित भेल रहितथि ताहिमे कोनो सन्देह नहि कयल जा सकैछ। तथापि एखनो हिनकासँ ब्रह्मानन्द सहोदरमे निमज्जित करौनिहार प्रजापतिक अपेक्षा तँ कयले जा सकैछ जनिका सम्बन्धमे साहित्यशास्त्रीय उक्ति अछि–

अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथा वै परिवर्तते॥

जिमूतवाहन व्रत; 14 सितम्बर, 2025 **– योगानन्द झा**

कबिलपुर, लहेरियासराय - 846001 (बिहार)
मोबा. : 93344 93330

प्राक्कथन

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'—एहि वेदवाक्यकेँ गुणैत, जीवन-पथकेँ समयक डोरिसँ नपैत कतेक दूर आबि गेल छी? गामक अन्हरियामे हथोड़िया दैत, आ शहरक भुकभुकाइत इजोरियाकेँ तकैत-तकैत, माए-बाप, सर-समाज, दोस-महिमकेँ छोड़ि नव-नव परिवेशमे घुमैत रहलहुँ। एकसँ एक सङ्गी-साथीकेँ अँकैत बीति गेल सात दशकक अन्तराल।

सभक सङ्ग होइछ एकटा दीप। महात्मा बुद्ध कहलनि, 'अप्प दीपो भव'। अपन दीप स्वयं बनू। तेँ अपन सब क्रिया-कलापमे आ देश-विदेशक यायावरी यात्रामे अपने दीप बारऽ पड़ैछ। ओकरे प्रकाशमे ताकऽ पड़ैछ अपन जीविका, जिजीविषा आ यज्ञक समिधा। राष्ट्र निर्माणमे अपन भूमिका बुनैत, परिवारक पोषण करैत, अपन दीपकेँ हवामे हौंकैत, नदीक कछेरमे नावकेँ खेबैत, तकैत रहलहुँ लाइट हाउस (प्रकाश स्तम्भ)जे बेरा पार लगाबए।

गाम-घरक सहयोग पाबि, महानगरक आ पैघ शहरक इजोत आ भभटपन देखबाक खूब मौका भेटल। अनजान घर, असम्वेदनशील लोक, माङ्ग आ आपूर्तिक आधार पर गप्प-सप्प बढ़ैत गेल आ छूटल गेल सम्वेदनाक क्षण।

शिक्षाक तलाशमे गाम, पटना, काशीक यात्रा अविस्मरणीय रहल। काजक क्रममे सिन्दरी, दुर्गापुर, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता आ पटनामे आश्रय भेटल। जमालपुर आ हाजीपुरमे संघर्ष सहित रेल निर्माणमे आसक्ति मनलग्गू रहल, जकरा बिसरब असम्भव।

आर्थिक आ राजनैतिक परिवर्त्तनक बीच भारत सरकारक वाणिज्य एवम् उद्योग मंत्रालयमे 'लोकक्रय आ मेक इन इंडिया' उद्योगक सम्वर्धन लेल, परामर्शकर्त्ताक भूमिकामे आनन्द भेटल। भारतक करीब 51 मंत्रालय आ 72 विभागक नाड़ी देखबाक मौका भेटल।

भारतमे अर्थनीतिक बदलाव, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक क्षरण आ लोक व्यवहारमे कृपणता आ कृत्रिमीकरण, सभक लहरि देखाइछ। जानि नहि पओलहुँ जे जीवनक क्षण कोना सिनेमाक रील जकाँ ससरैत रहल। मुदा अपन दीप संगहि रहल जे समय-समय पर इजोत दैत गेल आ पता नहि चलल जे एतेक दूर कोना आबि गेलहुँ। अपन दीपक इजोतमे अपन समाज आ देशक लेल इजोत देबाक अभिलाषामे भगजोगनीयों जकाँ प्रकाश निःसृत भऽ सकय, तकर कामनाक सङ्ग थीक ई पोथी 'अपन-अपन दीप'।

बहुत दिन सँ (अपन जीवनकालहिमे) शेखर प्रकाशनक अधिष्ठाता स्वर्गीय शरदिन्दूजी उसकबैत रहलाह कि हम अपन आत्मकथा लिखी जेना आदरणीय मंत्रेश्वर झा जी आ श्रद्धेया शेफालिका वर्मा जी लिखलन्हि। इंडिका इन्फोमीडिया द्वारा हमर प्रथम काव्य 'सनेस'क प्रकाशन बाद हम एहि प्रकल्पमे लगलहुँ। अंग्रेजी आ हिन्दीमे कतेको छिटपुट रचना पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल। मुदा मैथिली भाषाक गद्यमे हमर ई प्रथम प्रयास छल। शरदिन्दु जीक रहैत एकर टंकण पूरा भऽ गेल छल। मात्र अंतिम मसौदा देखक छल। गामे रही तऽ पता चलल जे ओ नहि रहलाह। एहिसँ पूर्व जखन टंकण में विलंब भऽ रहल छल तखन संस्मरण सँ एकटा लघु अंश पोथीक रूपमे अवतरित भेल 'अहाँक सङ्ग-सङ्ग'। ई हमर दाम्पत्य जीवनक 50 वर्षक उपाख्यान छल। जखन शरदिंदुजीक देहावसानक सूचना भेटल तऽ हम आहत भऽ गेल रही। ओहि कर्मठ व्यक्ति आ मैथिली भाषाक अभियानीक काज कोना पूरा करी? टंकित मसौदा ताकय में हुनक पुत्र राजा और सहयोगी टूटू जीक भूमिका अहम रहल। हुनका सभकेँ धन्यवाद!

पांडुलिपि लऽ कऽ हम सीधा संपादक श्री अरविन्द गुप्ताजीक प्रकाशन-गृह इंडिका इन्फोमीडियाक कार्यालय पहुँचलहुँ जतऽ पांडुलिपिक पुनर्वीक्षण आ संपादनक दुरूह काज प्रारंभ भेल। एहिमे हुनक सहयोगी संपादक आ संस्कृत भाषाक विद्वान रामानुजजीक सहयोग सेहो भेटल। पुस्तकक प्रस्तावना आ अंतिम प्रूफ-पठन हेतु दरिभङ्गा स्थित मैथिलीक विद्वान लेखक आ संपादक श्री योगानन्द झाजी सँ आग्रह कयल गेल। हुनक सहर्ष स्वीकृति भेटल; आ तखन पुस्तक एहि रूपमे आबि सकल। सहयोग लेल अहाँ सभकेँ हार्दिक आभार! पुस्तक तैयारीमे निरन्तर सहयोग लेल जीवन-संगिनी अंजीराकेँ सेहो धन्यवाद! शेखर प्रकाशनक टीमकेँ धन्यवादक संग पुनःस्मरण।

— कामेश्वर चौधरी

अध्याय–1

मोन पड़ैए अपन गाम

कथा तेहने जेना साधारण गामक सामान्य परिवारक एकटा जीव अपन जिनगीकेँ गढ़ैत दरभंगा, पटना, बनारस होइत बटखर्चा लेने दिल्ली, बम्बइ, कलकत्ता जाए प्रवासीक प्रथम पीढ़ी बनि अपन माँटि-पानि दिश तकैत रहल। ई खेरहा छी सभ मिथिलावासीक जे गामक परिवेशमे जन्म लऽ बिना कोनो सहाराक अपन भविष्यक तलाशमे निकलि जाइछ, छोड़ि अपन गाम-घर। भारतीय गणतंत्र आ स्वतंत्र देशक संविधान (1952) बनलाक प्रथम दशाब्दीसँ लऽ कऽ एखन धरि गामक मौलिक संरचना नहि बदलल। जँ बदलि गेल तऽ मनुक्खक मोल, आव्रजनसँ गामक सभ्यता आ तकनीकसँ भरल बाजारवाद। बभनटोली, कायस्थटोली, गोटोली, चमरटोली, संन्यासीटोल आ जोलहटोलीमे बँटल गाम। हमर गामक पश्चिम दिश बाबा उग्रनाथक स्थलवला भवानीपुर, पूबमे राजे, गङ्गौली, इसहपुर, नवटोल आ सरिसबपाही, दक्षिणमे 'बलिया' आ उत्तरमे घस-सिसबा आ हनुमाननगर इत्यादि। एहि बीच भेल हमर गाम 'मेघौल'। हमरा घरक देवाल सीमा अछि 'मेघौल' आ 'भवानीपुर' पञ्चायतक।

हमर जन्मक तेसर दिन हमरा गाममे आगि लागि गेल आ सौंसे गाम ओहि अगिलग्गीमे जरि कऽ सुड्डाह भऽ गेल। ई कहैत छलीह हमर दाइ। हमर छोट जानके पलानी घरक पश्चिम गोठुल्ला लगक बसबिट्टीमे राखि देल गेल जतऽ एकटा कुकुर ओकर ओगरवाही करैत रहल भरि राति। नष्ट भऽ गेल छल अन्न आ कपड़ा-लत्ता सब। बहुत कबुला-पातीक बाद कामरूप कामाख्यासँ आएल एकटा बंगालिन बटोहीक भविष्यवाणी आ घोषणाक बाद हमर पिताक दोसर पत्नी सावित्री देवीसँ जन्म, तेँ नाम राखल गेल–कामेश्वर। ई माता कामाख्याक पुजारिन रखलनि।

पाँचटा पोखरि, उत्तर आ दक्षिण टोल तक बहैत एकटा नाली, ताहि लागल प्राइमरी इसकूल। इलाकाक विद्यार्थी सभ आबय। इसकूलक बुढ़बा मास्टर साहेब

मुख्य शिक्षक छलाह। हुनकर ख्यातिसँ प्रभावित सब परिवार अपन बच्चाकेँ हुनकेसँ पढ़ाबैत छल। धानक अलावे कुसियारक खेती खूब होइत छलैक। घर-आङनमे ढेकीक ढक-ढक, उक्खरि आ समाठक ठक-ठकसँ भोरे-भोर उठि जाइ। बाड़ीमे बनल धानक मचान। ताहि लग चूल्हि परसँ निकलैत धानक उसिनियाँक गन्ध।

गामक काते-काते कुसियारक कोल्हुआर, जतऽ गुड़ आ राब बनैत छल। बाँकी कुसियार 'सकरी' चीनी मिलकेँ पठाओल जाइत छल। एकरा लेल 'पूर्जी' बँटैत छलाह हमर दादा (पिता) देबू बाबू, गाममे सिकरेटी (Secretary) साहेबसँ जानल जाइत छलाह। बिना पुर्जीक कुसियारक गाड़ीके सकरी मिलक राटन पर प्रवेश नहि छलैक। पूरा गामक घर खढ़सँ छाड़ल छल। माटिक देबाल, फूसक छत आ ताहि ऊपर फड़ैत छल कुम्हर, कदीमा आ तिलकोड़। आलू, कोबी आ भाँटाक लेल खेत अलग छल। बाकी तरकारी भवानीपुरसँ कुजरनी आनैत छलीह। गाय, महींस आ बड़द रहैत छल दरबज्जा पर। तेँ दूध-दहीक कोनो कमी नहि। पानिक लेल पोखरि (स्नान लेल) आ इनार (भोजनक लेल)।

बहुत दिनक बाद बिजली आयल छल। हमर दादा सेहो लेलनि ओकर लाइन, कारण जे एकटा पक्का घर (दू कोठरीक) बनि रहल छल। अपने सेहरा परक खेतमे भट्ठा लागल आ तकर 'पजेबा'सँ घर बनल। गामक सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति बोधबाबू आ गंगेशबाबू (मुखियाजी)क बाद हमरो घर बनल पक्का। ताहिसँ पहिने हमरा गाममे प्रतिवर्ष अगिलग्गी लागए। आगि लगिते सभ लोक जनउक हारसँ दुनू हाथकेँ जोड़ि 'हनुमान चालीसा' पढ़ऽ लागय। किछु गोटे बाबा उग्रनाथ महादेवक प्रार्थना करथि जे सभके एहिसँ त्राण करथि।

गर्मीक मासमे जखन आम फड़ैत छल, तखन बुढ़िया गाछी, जिराति आ पोखरिक भीड़ परक आमक रखबारी दिन-राति करऽ पड़य।

गामकेँ चिरैत एकटा रोड उत्तरे-दक्षिणे छल। मनीगाछीक लेल पुबरिया रोड आ पण्डौलक लेल पछिमबरिया रोड आ एकपेड़िया। आब तऽ भवानीपुरक 'उगना हाट' तक पूरा रोड बनि गेल। पहिले कठही बैल-गाड़ी छल जे गामक मुख्य सवारी। बादमे टायर गाड़ी आ रिक्शा चलऽ लागल। रोडक विस्तार भेलाक बाद स्कूटर, मोटरसाइकिल आ पेट्रोल/डिजलक गाड़ी सब आम भऽ गेल अछि।

उपनयन आ विवाहक उत्सव गामेमे होअए। मुंडन होइत छल कुशेश्वर, विदेश्वर आ उग्रनाथ स्थानमे। सार्वजनिक पूजामे सरस्वती पूजा इसकूल पर होइत रहए। फगुआ आ दिवाली मुख्यरूपेँ होइत छल जखन लोक आनन्दे विभोर रहैत छल। जूड़िशीतलमे बसिया भात आ बड़ी। उतरबरिया गामक संग लड़ाइक प्रतिस्पर्धा होइत

छल साँझक समय। शरद् पूर्णिमाक राति दप-दप इजोरियामे नव-विवाहित वरक ओतऽ मखान आ पानक प्रसाद भेटैत छल। राति भरि इजोतेमे घूमी। कहबी छलैक जे ओहि राति धानमे स्वातीक बुन्द खसैत अछि जाहिसँ चाउर बनैत अछि। भोरहरियामे पुरनी पोखरिक कातमे जुटान होइक। अपियारीक माछ पूरा टोलमे बाँटल जाइत छलैक, अपन-अपन बखरा।

पढ़ैक अलावे हम किछु-किछु पद्य लिखऽ लगलऊँ। हमर कविता 'ताजमहल' इसकूलमे प्रसिद्ध भेल। ओना कविताक डायरी हमर असालतन मास्टर साहेब—कक्का श्री महेश चौधरी नुका कऽ राखि लेलनि। हमरा पिताजीकेँ कहलथिन जे ई कविता करऽ लागत तऽ पढ़ि नहि पाओत। ओ फेर भेटल नहि।

हमरा गामक एक-डेढ़ किलोमीटर पश्चिम अछि प्रसिद्ध गाम भवानीपुर, जतऽ उग्रनाथ महादेवक विशिष्ट मंदिर अछि। एकहि पंचायत हमर गाम आ भवानीपुरमे छल। संगी-साथी दुनू गामक सामान्य समूह छल आ हमहूँ मध्य विद्यालय भवानीपुर जाए पढ़लहुँ। प्राइमरी तक भवानीपुरसँ कतेको छात्र हमरा गाम अबैत छलाह। 'शिवराति'क मेला जखन लागय तँ हमरो माए आ दाइ सब जलभरिया जाइत छलीह। इलाकामे शिवरातिक मेला नामी छल। एहि अवसर पर ग्रामीण सब दू-तीन राति नाटक सेहो करैत छलाह। एकटा नाटक 'उगना' सब बेर मंचित होअए। एक बेर हमरा भेल जे इएह नाटक हमरो गाममे होइत तँ नीक। हम अपन वरिष्ठजन सबकेँ कहलियनि। सब तैयार भेलाह। नाटकक किताब नहि छल तेँ हम अपन स्मरणसँ कागज पर सब डाइलोग लिखि देलहुँ। आङनक स्त्रीगणसँ साड़ी माँगि ओकर रङ्गमञ्च बनौलहुँ खाली जगह पर। सब गोटे अपन-अपन पार्टक अभ्यास केलनि। तीन-चारि दिनक बाद हम सब 'उगना' नाटकक मञ्चन कयलहुँ। मनमोहन विद्यापति बनलाह, मोद, सुधा, योगा भैया उगना। किछु कालक बाद कोनो कारणवश हमरा उगना बनऽ पड़ल। ओना हम 'रामा' बनल रही। नाटक एतेक लोकप्रिय भेल जे सब धिया-पुता, पैघ-छोट ओकरा दोहराबय कहथि।

माध्यमिक वर्गमे जिला सभक छात्रवृत्ति परीक्षा भेल हमर। छात्रवृत्ति भेटल 20/- रु. प्रति मास। भवानीपुरसँ माध्यमिक विद्यालय तक पढ़लाक बाद आठम वर्गमे हमर प्रवेश उच्च विद्यालय 'बलौड़'मे भेल। हमर सबक कका, बौआ (श्री राजवंशी चौधरी) स्वयं प्राइमरी-माध्यमिक शिक्षकसँ अवकाशप्राप्त छलाह। हुनके देल गेल हमर अठमामे प्रवेशक जिम्मा। हुनकर पुराण शिष्य छलाह, चनौरक महेश बाबू जे कर्मठ एवम् अनुशासनप्रिय छलाह। जन्मक तिथि ठीकसँ बूझल नहि रहनि तेँ लिखलनि—6 जून, 1952। ओहि समय बेशी बच्चाक जन्मतिथि जून-जुलाइ अथवा जनवरी

रहैत छलैक। गामसँ तीन-चारि किमी. दूर 'बलौड़ हाइस्कूल'। बीचमे मनीगाछी पुरानी बजार आ 'फनियाँ गुमटी'। तकरा बाद एकपेड़िया, धानक खेते-खेते हमर सभक इसकूल, पक्का देवाल आ खपड़ैलक छत। बाग-बगीचा सहित खेलबा काल क्लाससँ बाहर माध्यमिक विद्यालयक मैदान। हमरा पढ़ाइमे खूब मोन लागय। बलौड़ हाइ स्कूलक हेड मास्टर छलाह श्री कामेश्वर लाल दास—झोंझी पड़ौलक। हुनका डरेँ विद्यार्थी सब अपन-अपन क्लासे धेने रहय। हुनकर छोट पुत्र 'धीरेन्द्र' हमर सहपाठी छलाह। पहिल छमाही परीक्षामे ओ प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि। हुनकर पैघ भाए सेहो ओतहि अंग्रेजीक शिक्षक; पिताजी प्राचार्य छलथिन। हुनकर अंग्रेजी आ गणितक प्रतिभा देखि आश्चर्य लागय। आन विषय जेना हिन्दी, मैथिली, संस्कृत, विज्ञानमे हमरो नीक अंक भेटल। हमरा गाममे पढ़ौनिहार नहि छल। ओहि समय ट्यूशन प्रथा आ कोचिंग संस्थान नहि छलैक। ओना एक्का-दुक्की शंकाक समाधान हमर वरिष्ठ ग्रामीण छात्र सब करा देथि—कन्हाइ मल्लिक, सुशील मल्लिक आ गोपालजी झा इत्यादि। दाइ भोरे (जखन चरिबज्जी ट्रेन आ सकरी मिलक भोम्हा बाजय) उठा दिअय। तखन हम संस्कृत आ अंग्रेजीक शब्द याद करी।

वार्षिक परीक्षामे हमर स्थान प्रथम भऽ गेल क्लासमे। लागल जे एहि पदकेँ रखैक लेल आओर परिश्रम करऽ पड़त। एक दिन हमरा हेड मास्टर साहेब अपना चैम्बरमे बजओलनि जतऽ महेश बाबू आ पं. श्री बचनू झा (संस्कृत टीचर) सेहो छलाह। गाम-पता पुछलाक बाद हमरा हेड मास्टर साहेब कहलनि जे "तोँ जुत्ता आ चप्पल किऐक ने पहिरि कऽ अबै छैं स्कूल"। ओहिसँ पूर्व हमरा ने केओ टोकने छल आ ने जरूरति पड़ल रहए। महेश बाबू चुप रहलाह मुदा बचनू बाबू हमरा दिशसँ उत्तर देलथिन। एकरा एकर जरूरति कतऽ पड़तैक? मैट्रिक पास केलाक बाद कोनो छोट-छीन विद्यालयमे मास्टरी पकड़ि लेत। ओतऽ देखल जेतैक। महेश बाबू कहलनि जे तोरा जे छात्रवृत्ति (20 रु.) भेटैत छौक ताहिसँ जुत्ता कीनि ले। अगिला सप्ताह बिना चप्पल वा जुत्ताक स्कूल अन्दर नहि आबऽ देबौक। हम दादाक संग सकरी जाए एकटा चप्पल किनलहुँ। बाकी रुपैयाक किताब-कॉपी। तकरा बाद पढ़इमे जुटि गेलहुँ। एतावता 11वाँ वर्ग धरि बलौड़ स्कूलमे प्रतिवर्ष हमर स्थान क्लासमे प्रथम रहल। इलाकाक कतिपय मेधावी छात्रक संग भेटल। हमरा संग चनौरक श्री इन्द्रानन्द सिंह झा, श्री क्षेमानन्द सिंह झा, भंडारिसमक, जटाशंकर, मकरन्दासँ दिनेश ठाकुर रहलाह। हमरासँ कनिष्ठ वर्गक चन्द्रमोहन झा (बलिया) छलाह जे अपना वर्गमे प्रथम करथि। बलियाक ग्रामीण छात्र सभकेँ हमरासँ बेशी हेमक्षेम रहनि।

1967मे हम मैट्रिक परीक्षा दऽ गामेमे रहैत रही। समय पूरा छल। एक दिन हमर दाइ कहलनि जे 'बोध भैया' जे हमरा गामक सबसँ धनिक लोक छथि, हुनकर बेटी रंजनाक विवाह भेल छनि। हुनकर जमाय (दहौड़ावाला) जिनका सब 'बाउ' कहैत रहथिन्ह, हमरा गामेमे छलाह। दाइक प्रेरणासँ हम हुनका भेट कैलियनि। ओ पटना यूनिवर्सिटीमे इतिहाससँ एम.ए. करैत छलाह। बड़ी काल गप्प केलाक बाद पुछलनि, 'मैट्रिकक बाद की करब?' हमरा उत्तर नहि छल। ओ कहलनि जे जँ नीक अंक आबय तँ पटना विज्ञान महाविद्यालयमे प्रवेश लेल प्रयास करू। कतिपय श्रेष्ठ छात्रक नाम कहलनि। हमरा जेना गड़ि गेल दिमागमे आ हम पटना साइंस कॉलेजमे प्रवेशक आवेदन पत्र पोस्ट द्वारा मङ्गा लेलहुँ। ओना लगमे सी.एम. कॉलेज, दरभंगा सेहो नामी छल। ओझाजीक प्रेरणासँ हम पटना साइंस कॉलेजक लेल उत्कृष्ट अभिलाषी भऽ गेल रही। बोर्डमे नीक स्थान छल, तेँ प्रवेश सेहो भऽ गेल। हमर बैचक टॉपर मैथिल छलाह—माँउबेहटक श्रीउमानाथ झा। कन्हौलीक श्रीअमरनाथ झा, आ तरौनीक रामसेवक चौधरीजी सेहो ओतहि भेटलाह।

***

अध्याय–2

पटनाक पहिल यात्रा

हम 1967 इ.मे मैट्रिक परीक्षा पास केलाक बाद पटनाक लेल यात्रा केलहुँ जतऽ विज्ञान महाविद्यालयमे प्री-यूनिवर्सिटी क्लासमे प्रवेश भेटल। पटनामे रहब कतेक समस्याप्रद छल, से सोचनहि ने रही। हमर दाइ कहलनि जे हनुमाननगरक पिसियौत भेदी भैया (श्रीगीतानाथ झा) पटनामे इंडियन नेशनमे काज करैत छथि, हुनके ओतऽ जाइ आ बादमे कतहु होस्टलक जोगाड़ करी। दाइ जोगाड़ लगा कऽ हमरा दरभंगामे पटना जाइबला ट्रेनमे बैसा देलनि, जाहिमे भेदी भैयाक पत्नी (भौजी) सेहो अपन छोट बालकक संग छलीह। हुनकासँ आग्रह केलथिन जे "एक दू मास अपने घर पर रखियौक। हम खेबा-खर्चा आ पाइ कैंचा दऽ देब"।

दरभंगा टीशनसँ पटनाक ट्रेन खुजैबला छल कि हम कानऽ लागल रही। पहिले बेर गामसँ दूर, शहरक यात्रा छल। माए, दाइ आ दादा सब छूटल जा रहल छलाह। दरभंगा टीशन परक हल्ला–पान, बिड़ी, सिकरेट आ चाय गरम, जेना कानमे झऽरऽ पड़ऽ लागल। देखिते-देखिते ट्रेन चलि पड़ल आ दाइ हमरासँ दूर भऽ गेलि।

ट्रेनसँ उतरि पहलेजाघाट पहुँचि गङ्गा नदीमे स्टीमर पर सवार भऽ गेल रही। पहलेजाघाट खास दूर छल। स्टीमर पर सवारीक हमर पहिल अनुभव। डेक पर ठाढ़ बहुत लोक। अन्हार रातिमे बिजलीक इजोत। गङ्गा मैया अपना छाती पर झुला रहल छलीह स्टीमरकेँ। पहुँचि गेलहुँ महेन्द्रू घाट। की मनोरम यात्रा छल। ओतऽसँ रिक्शा पकड़ि गेल रही भेदी भैयाक घर तक। हुनकर कोठरी छलनि छोट मुदा ओसारा नमहर। हुनकर पैघ पुत्र पीताम्बर आ छोट सुधाकर। भौजी मजकिया छलीह। ओसारा पर जखन कोइलाक चूल्हा पजाड़ि छोड़ि देथि तँ हमरा कहथि 'ओगरैत रहू'। हम पीताम्बरक संग पटना शहर-बाजार देखऽ चलि जाइत रही सब दिन। ओ हमरा पटनाक गली-गलीसँ परिचय करबैत छलाह।

'विज्ञान महाविद्यालय, पटना' जाए प्रवेश लेलहुँ। अगिला दिन कओलेजक पढ़ाइ शुरू भेल। पहिल दिन प्रशासनिक भवन गेलहुँ। प्रिंसिपल डा. नागेश सुब्बाराव नागेन्द्रनाथ प्रसिद्ध गणितज्ञक बोर्ड लागल छल। कनिञे दूर पर जालसँ घेरल एकटा देबाल पर क्लासक रूटीन। सभ विषयक नाम संक्षेपमे–जेना फिजिक्स (P) केमिस्ट्री (C) आ गणित (M)। सभ विषयक पढ़ाइ अलग-अलग बिल्डिंगमे होइत छल। तेँ सभक समय-सारिणी ओहि ठाम देल रहय। हमरा क्लासमे तीनटा सेक्शन छल–ए, बी आ सी। प्री-यूनिवर्सिटी तकक सभ विषयक क्लासक सारिणी छल। हम सारिणी देखि अक-बका गेल रही। एक तँ केओ जान-पहचान नहि, दोसर विषय-सारिणी अजीब। एतेक विषयक मेल आ रूप नहि देखने रही। छात्र सभ अपन-अपन क्लास दिश बढ़ल गेल, हमरा अपन क्लासक अंदाजे ने रहय जे कतऽ जाइ। केओ बुझबऽवला नहि। हमरा बकौड़ लागि गेल। ओतहि भेटलाह 'रामसेवक' चौधरीजी आ हुनक पैघ भाइ साहेब जे पटनेमे पढ़ैत छलाह। हमरा लग सहटि अएलाह। हमरा सान्त्वना देलनि। रामसेवकजीक कक्षा 'बी' सेक्सनमे छलनि आ हमर 'सी'मे, लेकिन हमरा हुनकर भाइ साहेब सारिणी पढ़नाइ सिखा देलनि। रामसेवकजी हमरा पहिने पण्डौलमे भेटल छलाह, जतऽ हमर मैट्रिकक परीक्षाक केन्द्र रहए। परीक्षामे ओहो संग छलाह। दू-तीन दिन बाद हम समय-सारिणीकँ बूझऽ लागल रही आ संगी-साथी सेहो बनि गेल रहए। छात्र सभ साइकिल रिक्शा, स्कूटर आ केओ-केओ अपन गाड़ीसँ अबैत रहए। हम दिन भरि क्लास कऽ कऽ अशोक राजपथ होइत पैदले 'भेदी भैया'क डेरा तक पहुँचि जाइ। ओहि समय हम धोती आ हाफ शर्ट पहिरैत रही। अण्डरवियरक प्रचार नहि रहैक। चप्पल तँ पहिने कीनिञे नेने रही।

एकसँ एक शिक्षक। डा. नागेन्द्रनाथ (गणित), प्रो. एम.एन. वर्मा आ डा. राजमोहिनी अरोड़ा आदि। डा. महेन्द्र ठाकुर, डा. रामखेलावन राय हिन्दी पढ़बैत छलाह आ श्रीरामधारी सिंह 'दिनकर'क परिचित छलाह। एक बेर दिनकरजीक भाषण करौलन्हि जाहिमे ओ गीत, कविता आ गजलके परिभाषित केने रहथि। 'रश्मिरथी' बहुत लोकप्रिय रचना छल। 'परशुराम की प्रतीक्षा' प्रकाशित भेले रहए। हुनकर 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' कविता-पाठ छात्र समुदायकेँ उद्वेलित कऽ देने छल।

1968 इ. बिहारक मुख्यमंत्री छलाह महामाया बाबू जे शासनक विरोधमे छात्र आन्दोलनकेँ अपन आगिसँ फूकि रहल छलाह। हुनकर 'जिगर के टुकड़े' सब विद्यार्थीके आन्दोलित कऽ दैक। कोनो बेर हो, हम सब क्लासमे रही कि बाहरसँ नारा लगाबऽ लगैत छल हुनकर सहयोगी सभ।

पटना यूनिवर्सिटीमे हमर विषय छल पी.सी.एम. आ संगहि बायोलॉजी। अंग्रेजीक सङ्ग हिन्दी (50%) मैथिली (50%) सेहो पढ़ी। मैथिलीक लेल पटना कॉलेज जाए पड़ैत छल। प्रो. दिनेश कुमार झा एवम् डॉ. अमरेश पाठकजी पढ़बैत छलाह। डा. इन्द्रकान्तझाजी सेहो पढ़ाबथि। ओ लोकनि हमरा बड्ड मानैत छलाह। हमर लिखल कॉपी पूरा क्लासमे घुमबैत छलाह। हमरा संग माँउबेहटक उमानाथ झाजी छलाह जे बिहार बोर्डमे प्रथम स्थान प्राप्त कयने छलाह। ओ हमरा लग आबि एक दिन कहलनि—"अहीँ छी कामेश्वर चौधरी? अहाँके बिहार बोर्डक परीक्षामे मैथिलीमे 85% अंक आएल अछि जे उच्चतम अछि।" ई सूचना ओ श्री काँचीनाथ झा 'किरणजी'सँ लेने छलाह जे ओहि वर्ष मैथिलीक कॉपी जँचने रहथि। हमरा नहि बूझल रहय जे हमरा मैथिलीमे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त भेल छल।

'विज्ञान महाविद्यालय' पटनामे एकसँ एक छात्र आ शिक्षक। मिथिलांचलसँ हमर संग छलाह रामसेवकजी, अमरनाथ झा, उमानाथ झा, कृष्णकुमार झा, शचीन्द्र चौधरी (नेहरा), कैलाश चन्द्र झा। अनिल झा सेहो भेट करथि। थोड़बे दिनक बाद हमरा न्यूटन हाउसमे एकटा सीट भेटि गेल, रूम नं.16मे। तीन छात्रक संग। एहि बीच एक बेर गाम सेहो चल गेल रही, सभसँ भेट करैक लेल। गामसँ घुरैत काल भवानीपुर मंदिर गेल रही। यमसमक गायक महेन्द्रझा जी (रवीन्द्र महेन्द्रक जोड़ी) बेशीकाल भेटथि। हुनकर लोटा-थारी परक तान आ रवीन्द्रक गीत बड़ नीक लागए। ओतहि भेटलाह यमसम गामक रवीन्द्रजी जे कहलनि—"अहाँ पटना जाइ तँ मिण्टो हॉस्टलमे सुबोधजी रहैत छथि, हुनका लेल गामसँ एकटा किताब आ चूड़ा देतीह हुनकर माए, से हुनका पहुँचा देबनि।" हम जहिया मिण्टो हॉस्टल (पटना कॉलेज) लग गेलहुँ तँ बड़ मोसकिलसँ हुनकर कमरा भेटल। ओ बड़ आपकतासँ गप्प केलनि। इतिहासक छात्र छलाह। आइ.ए.एस. परीक्षाक तैयारीमे जुटल छलाह। ओ हमर वेशमे धोती पर कटाक्ष केलनि—'आब पेण्ट पहिरब सीखू। एतुक्का वेष-भूषा सैह छैक'।

एक दिन जूलोजिक प्रयोगशालामे डॉ. राजमोहिनी अरोड़ा भेटलीह। ओ हमरा मानैत छलीह। लेकिन ढाबुस बङ्ग कँ देखि हमर मोन ओकियाय लागल छल। ओ हमरा लग एलीह आ सान्त्वना देलनि जे पढ़ाइक विषय छैक। ओ हमर वेष पर सेहो मन्तव्य देलनि—अहाँके पेण्ट नहि अछि? हम कहलियनि 'हमरा धोती नीक लगैत अछि आ पहिने फुलपेण्ट नहि पहिरने रही।' ओ कहलनि 'देखू तँ, धोतीसँ अहाँक अंग ठीकसँ झाँपल नहि अछि।' हमरा लाज भऽ गेल रहय।

हम पीताम्बरकेँ संग लऽ दूटा फुलपेण्ट संगहि सिया लेलहुँ। एकटा कारी आ

दोसर कत्थी रंगक। पहिल दिन जखन पेण्ट पहिरने रही तँ अशोक राजपथ पर चलैत काल लागए जे सब बटोही हमरे दिश तकैत अछि। तहियासँ प्रयास करैत हम फूलपेण्ट पहिरब शुरू केने रही। ओना गाम जाइ काल सकरीयेमे बदलि ली आ धोती पहिरि गाम जाइ। कारण हमर कका एकबेर हमर ग्रामीण कीर्तिनारायणझाजी (प्रोफेसर आइ.एस.एम. धनबाद)कँ पेण्ट पहिरलापर बड्ड रेबाड़ देने रहथिन। 'अहाँ की अंग्रेज छी जे अपन वेष नहि पहिरैत छी?' कीर्तिनारायणजी सेहो सकरी वा मनीगाछी आबि पेण्ट उतारि देथि आ तखने गाम जाथि।

पटना विज्ञान महाविद्यालयमे दृष्टि खूजऽ लागल। ओतहि पहिले-पहिल क्रिकेट खेल देखलहुँ। हमरा गाममे एहि खेलक चलन नहि छल। मात्र किछु गोटे रेडियो पर एकर कॉमेण्ट्री सूनथि। हमरा गामक फिल्डमे फुटबॉल मैच होइत छल। हमहूँ खेलाइत रही। कहियो बैकसँ कहियो सेण्टर फौरवार्डक जगह। हमरा बूट नहि छल तेँ सकरी, दहौड़ाक खेलाड़ीसँ चोट लागि जाए। हमरा गामक चानीक कप इलाकामे प्रसिद्ध भऽ गेल छल। ग्रामीण सभमे बेशी जोश छलनि।

पटनामे राजनैतिक लहरिसँ अछूत नहि रहलहुँ। ओतऽ बेशी छात्र पटनियाँ, मगही आ भोजपुरी बाजए। हम सभ मैथिली बाजी। कॉमन भाषा हिन्दी रहए। होस्टल (न्यूटन हाउस)मे हमर बगलक रूममे छलाह अति मेधावी वरिष्ठ छात्र सब, जाहिमे प्रकाशजी (पी.सी. झा), मङनूझाजी (फिजिक्स), वेदानन्द झा (फिजिक्स) प्रेरित करैत छलाह। दोसर साल हमरा संग छलाह शचीन्द्र (जे डाक्टर भेलाह PMCHमे) आ शत्रुघ्न पाठकजी। रामसेवकजी पटना शहरमे रहैत छलाह सेहो आबि जाथि। आ शचीन्द्रजीक आनल चुड़लाइ सब खा जाथि। हमहूँ संग दियनि। शचीन्द्रजी पढ़ैमे बीहर छलाह आ मच्छरदानी तर जाए अतिरिक्त पढ़ाइ करैत छलाह। अजयशंकरझाजी आर.एस.एस.मे व्यस्त रहैत छलाह।

कहियो-कहियो पटना साइंस कॉलेजक छात्रक झुण्ड आबय। ओहिमे चौअन्नी चन्दा समाजवादी सब लिअय। ललका रसीद। समाजवादक प्रचारक छलाह वरिष्ठ छात्र सभ जाहिमे लालू प्रसाद यादव, नीतीश कुमार, रामजतन सिंह इत्यादि प्रमुख छलाह। नीतीश कुमार (वर्तमान मुख्यमंत्री, बिहार) BSc. Engg.मे पढ़ैत छलाह। मुदा ओतऽ मोन नहि लागनि। तेँ क्लास करऽ लेल किछु दिन धरि विज्ञान महाविद्यालये अबैत रहथि। हम सब जाइ Bihar College of Engg. नाटक देखक हेतु। न्यूटन हॉस्टलमे पहिल वर्ष नेतरहाटसँ आएल अलख निरंजन प्र. सिन्हा, अभय शंकर झा आ गोपाल कमल संगहि छलाह। साँझ कऽ भोजनोपरांत टहलैत काल अंग्रेजी बाजक तैयारी होइत छल।

समाजवादी पाटीसँ निकलि प्रजा सोसलिस्ट पार्टी गठन भऽ गेल छल। समाजवादी सेहो बिहारमे पसरल छलाह। समाजवाद आ साम्यवादमे अन्तर नहि बुझाए। पूँजीवादी संस्कृतिसँ सभके निराशा छल जखन कि छात्रक बीच एहि सभक सैद्धान्तिक वार्ता कम्मे होइत छल। बिहारक जातिवादक रूप आ जागरण पटनेमे देखल।

दू साल पटनामे कोना बीतल से पता नहि चलल-मूर्धन्य छात्र सभक संग, सिनेमा क्रिकेट आ नव-नव संगीक संग।

राष्ट्रीय छात्रवृतिक खेप भेटल जाहिसँ एकटा हाथक घड़ी किनने रही। एच.एम. टी. कम्पनीक जनता घड़ी। प्रायः 50 टाका दाम छल। एक बेर परीक्षाक समय न्यूटन हाउसमे कातक शीशाक खिड़की खोलि दिनमे सूतल रही। बेरमे उठैत छी, तँ टेबुल परसँ घड़ी नदारत। बहुत तकलहुँ, नीचाँ-ऊपर आ काते-कात पूरा रूममे। नहि भेटल ओ घड़ी। गणितक परीक्षा अगिला दिन रहय। लागल जे हमर दुनियें हेरा गेल। हम हबोढेकार भऽ कानऽ लगलहुँ। बगलक रूमक छात्र सब आबि गेला, बोल भरोस देलनि। प्रकाशजी हमरासँ सीनियर छलाह-बी.एस.सी. प्रतिष्ठाक छात्र जे बादमे Chairman (Custom) पदसँ रिटायर्ड भेलाह। ओ हमरा अपन घड़ी दऽ देलनि आ कहलनि जे 'अहाँ परीक्षा धरि एकर उपयोग करू'। ओना किछु दिनक बाद एकटा 4-5 बाहरी छात्रक गिड़ोह पकड़ायल छल जकरा लगसँ बहुत सामान प्राप्त भेल छलैक। ओकर सभक प्रवेश न्यूटन हाउसमे वर्जित भऽ गेलैक। हमर घड़ी नहि भेटल। दू वर्षक कटु-मधु अनुभवक बाद प्रथम श्रेणीसँ पास कऽ हम पटना यूनिवर्सिटी छोड़ि देलहुँ। माएक कहलासँ दरभंगामे सी.एम. कॉलेजमे फिजिक्स ऑनर्सक पढ़ाइ शुरू कयल। ओना बागमतीक धाराक कात किलाघाटमे छात्रावास भेटल रहय। कतेको वरिष्ठ छात्र सभ आ प्रो. सुधाकरझाजी जे ओकर संचालक छलाह, ओत्तहि भेटलाह। कहियो-कहियो गीत-कविताक गोष्ठी चलैत छल। हम ओहिमे रमि गेल रही। गाम जयबाक मौका प्रतिमास भेटैत छल। कतेको बेर गाममे बियाहक चर्च होइत रहए मुदा हम किनको मूँह पर माँछी नहि बैसऽ दैत छलियनि। एक बेर तँ टटुआरक एकटा कुटुम्ब तमसा कऽ कहि देलनि जे 'अहाँ की रजिस्ट्रार साहेबसँ बेसी पढ़ि लेब? ओहो छात्रे जीवनमे विवाह केने छलाह। आब रजिस्ट्रार बनल छथि'।

हमर उमेर करीब 17 वर्षक छल मुदा कखनो बियाहक इच्छा नहि रहए। एक दिन दैनिक समाचार पत्रसँ इंजीनियरिंगमे प्रवेशक विज्ञापन देखि हम अपलाइ कऽ देने रही—'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय इंजीरियरिंग संकाय' मे। काशी आ बनारसक बड़ नाम सुनैत रही। ताहि लेल सर्टिफिकेट सभक छाया प्रति राजपत्रित (गजेटेड)

अधिकारीसँ एटेस्टेड कराय पठाबक छल। ताहि संग एकटा डाक्टरी सर्टिफिकेट सेहो जे कोनो एम.बी.बी.एस. डाक्टर द्वारा देल गेल हो। एकरा लेल मनीगाछी ब्लॉकमे लाइनमे ठाढ़ भऽ अपन नम्बर लगाबऽ पड़य। ताहि पर सर्टिफिकेट एटेस्टेड करयबाक फीस सेहो छल। डाक्टरसँ सर्टिफिकेटक 5 रु. अलग-दोसर ठाम। दू दिन घूरि अयलहुँ। तेसर दिन ककरो कहला पर सकरी गेलहुँ। एकहि ठाम दूनू काज भऽ गेल। डा. राम बाबू सकरी सदर अस्पतालक डाक्टर छलाह आ राजपत्रित कर्मचारी सेहो। हमरा सभक गाम आबथि, कॉल पर, कहियो-कहियो। बड़ पैघ समाजसेवी आ डाक्टरीक नीक प्रैक्टिस।

हुनका अपन गामक परिचय देलियनि। तुरत बैसाय हमरे पेनसँ हमर सर्टिफिकेट/मार्कसीटके सत्यापित कऽ देलनि। अलगसँ मेडिकल सर्टिफिकेट सेहो दऽ देलनि। हमर मार्क्ससीट भियारैत रहलाह आ बैसल लोक सभक समक्ष हमर प्रशंसा करऽ लगलाह। ओहिसँ निकलि जखन हम गाम गेलहुँ तँ हमर पेन ओतहि छूटि गेल रहय, तकर आभास भेल। ओ एकरा जोगाकय हमरा लेल रखने छलाह।

***

अध्याय–3

प्रणय सूत्रक बन्धन : सझिया जमाए

एक बेरि हम दरभंगासँ गाम गेल रही। सप्ताही छुट्टी मे। दादा कहलनि 'अहाँक विवाह ठीक भऽ गेल अछि'। जोगा भैया हमर पितियौत भाइसाहेब आ काशी (मसियौत भाइ, जे कटैयामे मास्टर छलाह) सकरी गेल छलाह। ओतए डा. राम बाबू ओतए हेमन बाबू (डा. शम्भू बाबूक छोट भाइ) लऽ गेलथिन आ ई सब हमर विवाहक प्रस्ताव गछि लेलथि। आब हम की करब? हम असहज भऽ गेल रही। नहि फुरल जे की करी। पिता जी (दादा) हमर बड़ सज्जन लोक छलाह। इस्कूलसँ आबी तँ पूछिथि–'की पढ़ै छी'। जे कहियनि, ताही पर 'हँ' कहथि। नीकसँ पढ़ू। जे मोन होअए से पढ़ू। हमरा हुनकर विवशता पर विरोध करक साहस नहि भेल। "परसू विवाहक दिन अछि"–ओ कहलनि। हम एक दिनक समय लऽ दरभंगा गेलहुँ आ अपन कपड़ा-लत्ता लेने आबि गेलहुँ। दादाके बियाहक बारेमे एतबे टा बूझल छलनि जे 'कथा पक्ष' नेहरा गामक छथि। डा. रामबाबूक परिवारक। दरभंगा मेडिकल कॉलेजमे कार्यरत डा. शम्भू बाबूक छोट भाइ श्रीतंत्रनाथ चौधरीक (एल.आइ.सी. कर्मचारीक) पुत्री। काशी भैया बजलाह हुनकर छोट भाइ केदार बाबू अमेरिकामे रहैत छथि। भऽ सकैये जे विवाहक बाद हिनको ओतहि ने लऽ जाथिन।

जखन विवाहक दूबि-धान पड़ि गेल तखन हमरा ओहिमे व्यवधान करैक कोनो विचार नहि भेल। उखरिमे मुँह देल तँ मूसरिक कोन डर। आब जे होअए आगाँ। कनियाँक बारेमे जे पूछल गेल तँ बच्चा भाइ (हमर पितिऔत जे नेहरामे बिजली मिस्त्री छलाह) कहलखिन जे ओहि अङनासँ जतेक बच्चा निकलल से गोरे-गोरे अछि। बच्चा भाइ भेला हमर सभक पितियौत पैघ भाइ। ओ 'खलीफा' नामसँ प्रसिद्ध छलाह, कारण इलाकामे कुश्ती खेलाए लेल जाइत छलाह। हमरा विवाहक समय ओ बिहार विद्युत विभागमे लाइनमैनक पद पर छलाह आ नेहरेमे ड्यूटी छलनि। ओ सेहो जोर दऽ

देलथिन। एतावता हमर विआह ठीक भऽ गेल आ एक दिनक बाद बरियाती विदा भऽ गेल रहए। दिनांक 13.07.1970, दिनमे चारि बजे बरियाती विदा भऽ गेल कारण ओशुद्धक अंतिम दिन छल ओहि सालक।

बरखाक दिन। बरियाती सभ (15 गोटे करीब) टायर गाड़ी आ साइकिल पर विदा भेल छलाह। हमरा लेल सकरीमे रिक्शा ठीक कएल गेल। हाथ धरऽ आएल छलाह हमर मझिला सार झलकूजी। विवाहक लेल वरक हाथ धरैमे हुनकर विशेषज्ञता रहनि। ओ हमरा संग आगाँ बढि गेलाह। बरियाती पाछेँ रहि गेल। ओहि क्रममे दहौरा (हमर मातृक)मे हमर बाबा छूटि गेलाह। हुनका सङ्ग लेब बिसरि गेल बरियाती सब। नेहराक दरगाह लगक बाजार पर पानिक बुन्नी शुरू भऽ गेल छल। रिक्शा बामा मोड़लक। यादव बाबू आ दीपकजी सभक बड़का घर आ सामने विशाल मैदान जेना गेन खेलबाक लेल बनल हो। ताहिसँ पूब एकटा पोखरि आ ओकर मोहार पर महादेवक मंदिर। यादव बाबूक घर लग रिक्शासँ उतरि पैदल चलि पड़लहुँ। थालक डरे हाथमे चट्टी लऽ लेलहुँ आ पहुँचि गेलहुँ सीधे ओहि दलान पर जतऽ बरियातीक लेल चौकी पर सुजनी सजाओल छल। मुहुर्त्तक हरबड़ीक कारण हमर परिछन शुरू भऽ गेल, बरियातीक एलासँ पहिने। टोल-परोसक स्त्रीगण सभ हमर परीक्षण केलनि आ नाक पकड़ि आगाँ बढ़ौलनि। भगवतीक घर जाए 'कन्या निरीक्षण' सेहो भेल। तकरा बाद लगक ओसारा पर बनल यज्ञवेदी लग हमरा स्थापित कएल गेल। चारू दिश अनजान स्त्रीगण-समाज। बगलमे बैसलि एकटा बाल युवती लाल-महरून रंगक स्लैक्स (चुस्त सलवार) आ उज्जर कुर्तीमे घेरल। मुँह पर मुस्की आ बड़बोल जकाँ बाजलि—"हम अहाँक सारि हैब"। मीराक ओ रूप कोनो फिल्मी हिरोइनसँ कम नहि। चारू कात पसरल सारि सब अपन-अपन मुद्रामे—पूनम, नूतन, चन्दा आ गुड़िया। पाछासँ कन्हा पकड़ने तीन सालक किरण। विवाहक विधि आरम्भ आ खतम, कखन भेल से नहि बुझलहुँ। ओकरा बाद कोहबर घरक भीड़, मौहक आ चतुर्थी। रङ्ग-बिरङ्गक स्त्रीगण समाज। हमर पत्नी (12-13 वर्षक) छठा पास कऽ सतमामे छलीह। भेट भेलीह—बचकानी वयस, साड़ीमे।

चतुर्थी दिन हम जखन दलान पर रही तँ हमरा गामसँ भरिया आएल छल—माछ-दहीक भार। सङ्गहि एकटा 'टेलीग्राम' सेहो नेने आएल छल।

हेमन बाबू (सझिला कका) बियाहक मुख्य कर्त्ता-धर्ता छलाह। वैह सभ कन्याक विवाह करौलनि। ओ पुततइमे कचहरीक देखभाल आ गामक सब क्रिया-कलापमे सक्रिय छलाह। हुनका संग टेलीग्राम पर चर्चा करिते रही जे की करी। ओ अपन सर्वश्रेष्ठ भाइसाहेब डा. शम्भू बाबू लग एकर चर्चा शुरू कए देलनि। टेलीग्राम छल

बनारससँ बी.एच.यू.मे हमर प्रवेश भऽ गेल, तेँ बनारस जाए ओकर प्रक्रिया पूरा करक लेल। हम सोचैत रही जे बी.एस-सी. फिजिक्स ऑनर्सक पढ़ाइ पूरा करी आ तकरा बाद किछु। नूनू कका (डा. शम्भू बाबू) कहलनि जे “बी.एच.यू. जाए बी. टेक.क लेल एडमीशन लऽ लियऽ। बादमे किछु सोचब”। हुनकर वचन अकाट्य छल तेँ हम बी.एच.यू.क लेल तैयार भऽ गेलहुँ। हम हुनक संयुक्त परिवारक ‘सझिया जमाए’ रही।

गाम आ दरभंगा जाए अपन मैट्रिक (बिहार बोर्ड) आ प्री यूनिवर्सिटी आ बी. एस-सी. पटना (पटना साइंस कॉलेज)क सर्टिफिकेट आ मार्कसीट सभ अनलहुँ। एकटा हथलग्गू चमड़ा बैगक एक फाँकमे सर्टिफिकेट सभ आ दोसर फाँकमे धोती, कमीज आ किछु टाका राखि, विदा भऽ गेलहुँ। सकरीसँ दरभंगा होइत समस्तीपुर जंक्शन। ओतऽ भेटल बनारसक रेलगाड़ी।

***

अध्याय–4

बी.एच.यू.मे प्रवेश

बनारस रेलवे स्टेशन उतरि एकटा रिक्शा तकलहुँ आ बी.एच.यू. दिश विदा भेल रही। बनारसी रिक्शावाला बेरि-बेरि पानक थूक फेकए आ बात-बातमे गारि बाजए। तहिना रोड पर चलैत एक्का आ टमटमवला।

बी.एच.यू.क परिसरक प्रवेश द्वार पर पं. महामना मालवीयक बड़ पैघ पाथरक मूर्ति छल। अन्दरमे दायाँ भाग पाथरक ऑफिस आ बायाँ भाग महिला छात्रावास छल। पहिल कओलेज छल मेडिकल कॉलेज, दायाँ पर 'धन्वन्तरि' होस्टल। बादमे बिड़ला, ब्रोचा इत्यादि। प्रौद्योगिकी संस्थान (IT BHU)क सामने मोर्वी, धनराज गिरि, लिम्बडी, राजपुताना, आ विवेकानन्द छात्रावास। हम बी.एच.यू.क प्रशासनिक ब्लॉक जाए अपन फीस आदि जमा कऽ देलहुँ। पौने दस टाका दरसँ मासिक ट्यूशन फीस आ करीब 20 रु. प्रवेश शुल्क। साल भरिक फीस जमा भऽ गेल। द्वितीय वर्ष मेकेनिकल इंजीनियरिंगमे प्रवेश भऽ गेल। छात्रावास सेहो भेटि गेल। ओतऽसँ बिड़ला मंदिर होइत ओकर पाछू मोर्वी छात्रावास पहुँचलहुँ।

लाल धोती आ हाफ बुशशर्ट पहिरने, हाथमे चमड़ाक बैग जाहिमे कागज-पत्तर आ धोती आदि छल। अपन रूम तकलहुँ। संगहि रूम पार्टनर पी.सी. जैन जे इलेक्ट्रोनिकक छात्र छल,सँ भेट भेल। मोर्वी होस्टलक परिसरमे वरिष्ठ छात्र सभक प्रकोप–रैगिंगक लेल नव छात्रकेँ पकड़ि मुर्गा बनबैत छल। हमरा केओ नहि टोकलक। शायद लाल धोतीक प्रभाव छल जाहिसँ हम विद्यार्थी कम आ पारिवारिक लोक बेशी लगैत रही। तेँ बचि गेलहुँ। मुदा पेण्ट पहिरि दोसर छात्रक संग जखन मेसक लेल निकललहुँ तँ सीनियर सब पकड़ि लेलक। ओहि सीनियरमे एकटा दरभंगावासी श्रीवास्तवजी छलाह। हमर परिचय सुनैत ओ जोरसँ अँग्रेजीमे अनाप-सनाप बाजऽ लागल छलाह। ओ हमर सार डा. अजय चौधरी (बड़का भैया) जे एम.बी.बी.

एस. (डी.एम.सी.एच.)क छात्र छलाह, हुनकर दरभंगाक संगी छलाह। बाकी छात्र सब आरा, बनारस आ दक्षिण भारतक छलाह। कमराक दछिनबरिया ताखकेँ देखा पुछलियनि—ओ कोन देश अछि? ए.बी.सी.डी.क मतलब पूछऽ लगलाह जे ओहिठाम प्रचलित रहय, आरा, बलिया, छपरा आ देवरियाक (या दरभंगाक) रूपमे। मिस आ किसमे अन्तर पूछल गेल। अजीबोगरीब प्रश्न, बेशी सेक्ससँ सम्बन्धित। ओना ओही ग्रुपक छात्र सब हमरा सेकेण्ड इयरक सबटा किताब (सेकेण्ड हैण्ड) दऽ देलनि। तेँ अपन खर्च नहि लागल। मात्र स्लाइड रूल अपना खर्चसँ किनने रही।

बी.एच.यू.क छात्रावासमे अपन मेस छल, जकरा लेल मासिक किश्त देबऽ पड़य। एकटा व्यक्ति ओकर ठीका नेने छल जकरा 'महाराज' कहल जाइत छलैक। एकटा छात्र प्रतिमास चुनल जाइत छल जे ओकर नियमन करैत छल-खर्चा आ गुणवत्ता। प्रति दिन लंच, रात्रि भोजनमे रोटी-भातक संग तरकारी। रवि दिन कऽ विशिष्ट भोजन नॉन भेज, रवि दिन साँझमे छुट्टी। सब छात्र भागि जाइत रहथि। सिनेमा देखय या लंकेटिंग लेल। विश्वविद्यालयक सामने बाहर लंका नामक बजार छल। ओकर दुहू कात किताब, मिठाइ, कपड़ा, स्पोर्टसक दोकान सब। लड़का-लड़की सब मुक्त रूपेँ चक्षु-व्यापार करैत। तकरे कहल जाइत छल 'लंकेटिंग'। लंकाक अंतिम छोर पर रहए एकटा बनारसी 'लस्सी'क लोकप्रिय दोकान, जकरा 'पहलवानक लस्सीसँ' प्रसिद्धि रहैक। ओतऽ भीड़ खूब जमय साँझ कऽ।

मोर्वी होस्टलसँ बनारस शहर या बजार दूर छल। हमरा होस्टलमे एकटा छात्र सेकण्ड हैण्ड साइकिल बेचबाक प्रस्ताव देलक। मूल्य 80 रु. छल। ओहिमे दुनू पहिया आ चेन ठीक छल, मात्र एकटा पैडल टूटल छल। हम ओकरा कीनि लेलहुँ। दोसर पैंडल जोड़ि ओकर उपयोग, लगक संकाय आ बजारक लेल करऽ लगलहुँ। कहियो-कहियो दुर्गाकुण्ड तक सिनेमा हॉल सेहो जाइ। B. Techक तेसर वर्षमे पता लागल जे बी.एच.यू. कला संकायमे विदेशी भाषाक पढ़ाइ साँझ कऽ होइत छैक। ओहिमे साँझक समयक उपयोग बेशी छात्र-छात्रा करैत रहथि। ओतऽ फ्रेंच भाषा विभागमे डा. प्रभाकर झा (श्री सुभद्रझाजीक पुत्र) हेड छलाह। सुभद्र बाबूक नाम सुनने रही पटना आ दरभंगामे, मैथिली आ भाषा विज्ञानक विशिष्ट नाम, नागदह छलनि गाम। हम फ्रेंच विभागमे प्रवेशक लेल आवेदन कयलहुँ आ प्रवेश भेटि गेल। प्रभाकर बाबू फ्रेंचक किताब 'आलाएन्स दऽ फ्रांकेस' आ 'दोंदो'क लोकप्रिय किताबक नाम लिखओलन्हि। रोमन अक्षरक शब्दावली, संस्कृतसँ मिलैत व्याकरण आ संगीतमय फोनेटिक्स। खूब नीक छल ओकर अभ्यास। किछुए दिनमे लेख आ कथा सीखऽ लगलहुँ। सालक परीक्षामे हमर क्लास विश्वविद्यालयमे द्वितीय स्थान पर

छल। प्रभाकर बाबू चीन्हि गेलाह आ प्रोत्साहन देबऽ लगलाह। दू सालमे हम एकर डिप्लोमा इन फ्रेंचक परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भऽ गेलहुँ, प्रथम श्रेणीमे उच्च अंकक संग।

बी.एच.यू.क वातावरण बहुत रमणीय छल। देशक सभ प्रदेशसँ आएल छात्र जेना—आसाम, बिहार, बंगाल, ओड़ीसा, तमिलनाडू, कर्णाटक, केरल, दिल्ली, हिमाचल, उ.प्र.क तँ बहुतायत छल। गुजराती-मराठीक मेस अलग चलय। वातावरण सर्वदेशीय छल। राजनैतिक बसात सेहो उद्वेलित करैत रहैत छल। ओहि समय छात्र-आन्दोलनक विशेष रूप भेटल जाहिमे का.हि.वि. विद्यालयक भूमिका अग्रणीय छल। बीच-बीचमे हड़ताल सेहो भऽ जाइत छल आ पुनः छात्रावास बन्द। अनिश्चित कालक हड़तालमे महीनो दिनक अनायास छुट्टी।

बी.एच.यू.क निवर्तमान छात्र श्री बी. मजूमदार (धातुकी अभियंता) सक्रिय छलाह, जे श्री राजनारायणक सहयोगी आ कट्टर लोहियावादी छलाह। ए.बी.भी.पी. क सेहो विशेष प्रभाव छल। स्व. अरुण जेटली (जे बादमे भारत सरकारमे विधि एवम् वित्त मंत्री भेलाह) अपन वरिष्ठ भरत शर्माक (जे दिल्ली यूनिवर्सिटीक अध्यक्ष छलाह)क संग अयलाह। दिल्ली विश्वविद्यालयकँ बी.एच.यू.क विशेष सहयोग भेटैक। बी.एच.यू.मे ए.बी.भी.पी.क प्रभुजी (पी.एन. श्रीवास्तव) सेक्रेटरी बनलाह आ हरिकेश बहादुर, M. Techक छात्र, काँग्रेस दिशसँ छात्र संघक अध्यक्ष। दुनू गोटे आइ.टी., बी.एच.यू.क छात्र छलाह। विज्ञान आ कला संकाय पिछड़ि गेल छल।

हमरा लोकनि (20/25 छात्र) काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे बिहारक छात्र सभक एकटा संगठन बनौलहुँ जकर अध्यक्ष बनलाह प्रो. डा. काशीनाथ सिंह, भूगोल विभागक अध्यक्ष। ओकर संबिधान बनौलनि प्रसिद्ध संबिधान विशेषज्ञ डा. मनोरंजन झा जे 'राजनीति' विभागक अध्यक्ष छलाह। जमशेदपुर (टाटा नगर) आ हजारीबागक बहुत छात्र सेहो एकर सदस्य छलाह—बिहार-झारखण्ड ताबत एके रहय।

हमरा बाद, दोसर बैचमे बिहारक बहुत छात्र आबि गेल छलाह। ओ सब ए.बी. भी.पी., काँग्रेस आ समाजवादी खेमामे बँटि गेल छलाह। 1974 इ. जाइत-जाइत बी. एच.यू., राष्ट्रीय छात्र आन्दोलनक केन्द्र बनि गेल छल। 1975मे लागल आपातकालसँ पहिने राजनारायण इलाहाबाद हाइकोर्टमे इन्दिरा गाँधीक विरुद्ध मुकदमा ठोकि देने छलाह आ जीति गेल छलाह।

एम्हर पटनामे जयप्रकाशजीक 'सम्पूर्ण क्रांति' आन्दोलन जोर पकड़ने छल। ओतुक्का छात्र नेता सब सेहो आबथि। न्यूज पेपरमे आर्यावर्तक अलावे दी सर्च लाइट विशेषरूपेँ सक्रिय छल। सम्पूर्ण क्रांतिक नारा पसाही जकाँ पूरा देशमे पसरि गेल।

5 फरवरी, 1916 (वसन्त पञ्चमी दिन) बी.एच.यू.क स्थापना भेल छल जखन लॉर्ड हार्डिंग-II तात्कालीक वाइसराय छलाह। पं. मदनमोहन मालवीयजीक परिकल्पनासँ चन्दा माङ्गि ई विश्वविद्यालय बनाओल गेल। दरभंगा महाराजक विशेष आ अग्रणी योगदान 9 लाख टाका भेटल। मालवीयजीक चन्दा चाहे निजाम हैदरावादक हो वा वाराणसीक भिखारिनक (चारि आना चन्दा) हो, बहुत तरहक कथा प्रचलित रहय। कहल जाइत छल जे मालवीयजी देश-विदेशक सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सभकेँ ताकि 206 विषयक पाठ्यक्रम आरम्भ करौलनि। ओहिमे तकनीकी शिक्षा, इंजीनियरिंग, मेडिकल एवम् फाइन आर्ट्स आ म्यूजिक इत्यादिकेँ विशेष महत्व देलनि। बी.एच.यू. कैम्पसमे खेल-कूदक विशेष इन्तिजाम छल। सभ अध्ययन संकाय आओर होस्टलक बीच पैघ मैदान छल जे खेलक लेल उपयुक्त रहए। बेशीकाल शनि-रवि दिन खुला मैदानमे सिनेमा देखाएल जाइत छल। करीब 1300 एकड़मे बसल बी.एच.यू.क परिसर अर्धवृत्त जकाँ छल। एहिमे पू. काशी नरेश प्रभुनारायण सिंह, रामनगरक राजा विशिष्ट रूपेँ योगदान देने रहथि।

हमरा लोकनि इंस्टीच्यूट टेक्नालॉजी (आइ.टी.) बी.एच.यू.क छात्र रही। पहिने ई संस्थान BENCO (बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज) नामसँ प्रचलित रहय। तखन यांत्रिक आ विद्युत संगहि पढ़ाओल जाइत छल। आइ.टी., बी.एच.यू.मे सब विषय जेना यांत्रिक, विद्युत्, इलेक्ट्रानिकी, धातुकी तथा फारमेसी पढ़ाओल जाइत रहल। सभ विभागक अपन अलग कैम्पस/छात्रावास। मेसमे कतेको विषयक छात्र मिलि जाइत छल।

डा. गोपाल त्रिपाठी (केमिकल इंजिनीयर) आइ.टी., बी.एच.यू.क डाइरेक्टर छलाह। बहुत प्रभावशाली व्यक्तित्व। ओ आइ.टी., बी.एच.यू. केँ आइ.आइ.टी. नहि नामित होमऽ देलनि जाहिसँ बी.एच.यू.क केन्द्रीय विश्वविद्यालयक स्तर धूमिल भऽ जाए। तेँ ओकर विरोध कयलनि। जखन ब्राण्ड 'आइ.आइ.टी.' बेसी लोकप्रिय भऽ गेल, तकरा बाद 2012मे बी.एच.यू., 'आइ.आइ.टी.' घोषित कयल गेल। डा. कर्ण सिंह जे बी.एच.यू.क प्रथम चांसलर रहल छलाह ओ कहलनि जे राज्यसभामे बहुत विवादक बाद (I.I.T., BHU)क ओहो समर्थन देलनि, कारण लोकसभा पारित कऽ देने छल।

आइ.टी., बी.एच.यू.मे एकसँ एक प्रशिक्षक छलाह जेना डा. गोविल जे हमरा सबकेँ यांत्रिकी पढ़ाबथि। डा. बी. भट्टाचार्य विद्युत अभियंत्रणाक शिक्षक छलाह। डा. टी.आर. अनन्तरमण भटनागर पुरस्कारसँ अलंकृत आ देशक सर्वश्रेष्ठ धातुविद छलाह। आओरो कतेको शिक्षक हुनका संग छलाह। भारतमे पहिल (EBM) एलेक्ट्रोन बीम माइस्क्रोप

बी.एच.यू.मे आयल छल। डा. बी.एच. राव (थर्मोडाइनामिक्स), डा. एन.के. दास तालुकदार, डा. रामकृष्णन (प्रोडक्शन), प्रो. बनर्जी (थर्मोडाइनामिक्स) डा. विक्रम सिंह (कम्पन)क। बी.एच.यू.क अध्ययन-महिमा पर एकटा किताबे बनि जाएत।

एहि बीच दू बेर कलकत्ता जाए हम जी.के.डब्लू. (गेस्ट कीन विलियम्स) कम्पनी (Guest Keen Williams) हावड़ा आ हिन्दुस्तान मोटर (एच.एम.) उत्तरपारामे यांत्रिकीक व्यवहारिक पक्ष पर ट्रेनिंग लेलहुँ। जी.के.डब्लू. अपना आपमे सर्वश्रेष्ठ कारखाना छल जकरा गेस्टकीन आ विलियम्स दुनू अंग्रेज 17th शदीमे कलकत्ताक लगपास अपना नामसँ GKW फैक्ट्री बनौलनि। हिन्दुस्तान मोटर 'अम्बेसेडर' गाड़ी बनाबय मात्र बीसटा एक मासमे। बिड़ला समूहक कारखाना छल। सब सरकारी विभागमे एकरे चलती। बादमे ओकर क्षमता बढ़ल। सालमे 5000 गाड़ी। मुदा 1991क बाद भारतमे कएकटा कारखाना खुजि गेल, मात्र मोटरगाड़ी बनेबाक।

विश्वविद्यालयक परिसरमे एकटा विशाल केन्द्रीय पुस्तकालय–'हेडगवार पुस्तकालय' रहय। ई बी.एच.यू.क सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय अछि। रातिमे कहियो-कहियो 10 बजे तक ओतए पढ़ी। बिड़ला विश्वनाथ मंदिरक गेट ओकरा सामने रहय। तकरा पाछाँ हमर मोर्वी होस्टल। खूब चहल-पहल रहैत छल।

शिक्षाविद् डा. कालू लाल श्रीमाली जखन उपकुलपति (वाइस चांसलर) छलाह, तखन छात्र आन्दोलन तीव्र छल। एहि चलते बी.एच.यू. परिसरक छात्र सभ प्रजातांत्रिक रूपेँ जाग्रत छलाह। ओही समय एच.ओ.डी. (विभागाध्यक्ष) सभक लेल चक्रीय व्यवस्था बनल। दू वर्षक बाद एच.ओ.डी. बदलि जाथि आ दोसर प्रोफेसर विभागाध्यक्ष (HOD) बनि आबि जाथि। बी.टेक फाइनलमे जाइत-जाइत सब छात्र अपन परीक्षाक समय-सारिणी छात्र-विमर्शसँ स्वयं बनाबथि, नहि कि विश्वविद्यालयक प्रशासन द्वारा बनाओल जाइ। हमरा सबहक अंतिम क्लासमे अध्यक्ष डा. विक्रम सिंह कहलनि जे जतऽ कार्यरत रही ओतुक्का राजनीतिमे अवश्य भाग ली आ नेतृत्वक क्षमता विकसित करी, जाहिसँ दोसर केओ विस्मृत नहि कऽ सकय।

***** ***** *****

बी.एच.यू.क परिसर जाग्रत, संगीतमय आ आनन्दमय छल जतऽ स्वच्छन्द भऽ पढ़ी, खेली आ संगी सभक गप्प-सप्प करी।

जेना मिथिलांचलमे कोनो कार्यक्रमक आरम्भ 'जय-जय भैरवि असुर भयावनि'वला गीतसँ होइछ तहिना, बी.एच.यू.मे कोनो कार्यक्रम (गीत-संगीत, ड्रामा, सिनेमा) होअय तँ 'कुल गीत' गाओल जाइत छल।

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर
ये सर्व विद्या की राजधानी।

यदा कदा बिस्मिल्ला खान आबथि अपन शहनाइ-वादनक लेल। ताहिसँ पूर्व सेहो 'कुल गीत' होइत छल। आइ.टी.मे जखन आइ.टी. डे मनाओल जाइत छल तँ प्रतिवर्ष ड्रामा होइत रहए। ताहूमे प्रथम रहए कुलगीत। उद्योगपति 'मोदी ग्रुप'क बी.एच.यू. मे विशेष योगदान रहए। मोदी प्रयोगशाला (रसायन विज्ञान) हुनके सभक देन छलनि। वी.के. मोदी हमरा सबसँ सीनियर छलाह। जखन ओ चतुर्थ वर्गक छात्र छलाह तखन एकटा नाटकमे भाग लेलनि। जँ लऽ कऽ लड्डू खेबाक रोलमे हनुमान बनल केओ आओर छल, तेँ ई रूसि रहलाह। हिनक जिद्द रहए जे लड्डू खाइवला पात्र हुनकें भेटए। हुनकर (मोदी ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज)क योगदान बी.एच.यू.क लेल विशिष्ट छल। हुनके बाबाक नामे रासायनिक विभागक 'मोदी प्रयोगशाला' छल।

एकटा चटर्जी महोदय जे खनन विभागक वरिष्ठ छात्र छलाह, बड्ड नीक माउथ ऑर्गेन बजाबथि। 'रमैया बस्ता बैया'क धुनि सबकेँ स्तब्ध कऽ दैत छल। राजकपूरक फिल्मक गीत—"आवारा हूँ, आवारा हूँ

या गर्दिश में हूँ, आसमान का तारा हूँ।...
दुनियाँ, मैं तेरे तीर का या तकदीर का मारा हूँ।
—'राधे जमुना के तीर'
—तू गंगा की मौज, मैं जमुना की धारा,
हो रहेगा मिलन, हमारा-तुम्हारा, रहेगा मिलन।'
—'ऐ मेरे दिल कहीं और चल।'

मोर्वी होस्टलमे एकटा हमर सभक छोट ग्रुप छल। हमरा सङ्ग छलाह विनोद सिंह, मेटलर्जीक छात्र (जे बादमे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयमे पी.एच-डी कऽ कऽ, यू.एस.ए. चलि गेलाह आ क्रोमएल्वा-मे प्रेसीडेण्ट भऽ गेलाह। ओ एखन यू.एस.ए.मे बोइंगक सलाहकार छथि)। संगहि छलाह, विनोदझाजी (रसायन), सरदार अमरजीत सिंह (खनन) आ देवेन्द्र कुमार सिंह (धातुकी)। हमरा सभक रूम अगले-बगल छल। साँझ कऽ सब एके संग ओसारा पर बैसी। विनोदझाजी पुरान फिल्मी गीत गबैत छलाह। हुनक 'जिन्दगी का सफर, ये कैसा सफर' आ 'रमैया बस्ता बैया' एखनहुँ मोन पड़ैत अछि। घनश्याम पन्त क गीत 'मुझको इस रात की तन्हाइ में आवाज ना दो' एखनहुँ मोन पड़ैत अछि।

हमर गीत 'जिक्र होता है जब कयामत का, तेरे जलबों की बात होती है।' आ 'दिल आज शायर है, गम आज नगमा है।', सभ मोनसँ सुनैत छल। सभ केओ

कओलेजक बाद बिछुड़ि गेल। विनोद सिंह अमेरिका चलि गेलाह, विनोदझाजी आइ. सी.आइ., गोमियामे ज्वाइन केलाह। हुनकर बियाह क समयमे (12.2.1977) हम सिन्दरीमे रही। ओतहिसँ गोमिया गेल रही। ओतऽसँ टाटानगर गेल रहए बरियाती। हुनकर मामा श्री भोगेन्द्रझाजी पी.डी.आइ.एल. सिन्द्रीमे महाप्रबंधक (GM) छलाह। सरदार अमरजीत सिंह BCCL ज्वाइन केलनि। देवेन्द्र सिंह जे दरभंगाक छलाह, हुनक पिताक टिस्कोक एम.डी. (R.S. Pande)सँ नीक सम्बन्ध छल। हुनका विश्वास छलनि जे हुनकर जॉब टाटामे अवश्य लगतनि। हुनकर गणित कमजोर छल तेँ विनोदझाजी हुनका पढ़ाबथि जाहिसँ क्लासक मोकाबला करथि।

बी.एच.यू. छात्रावासमे हम एकसरे छात्र रही जकर विवाह भऽ गेल छल। पत्नी (अंजीरा) गाममे छलीह। 13.3.1970 कऽ विवाह आ 27 फरवरी 1974 दिन द्विरागमन। ओहि बीच चिट्ठी-पत्री चलैत रहल। पैसा-कैंचासँ कोनो सहायता करैक योग्य नहि रही। द्विरागमनमे हमर ससुरजी एकटा फिलिप्सक रेडियो देलनि जकर उपयोग बहुत दिन धरि कएल।

बी.एच.यू.क महिला कॉलेजमे एकटा छात्र मेला/उत्सव (फेट) लागल रहए। हम सब गेल रही देखऽ। छात्रा सब मेला लगौने छलीह। ओहिमे एकटा 'मैथिल' छात्रा छलीह, जिनकर परिवार बनारसेमे छलनि। हुनकर पैघ भाइ कृषि संकायमे एम.एस. सी.क छात्र छलाह। मेलामे परिचयक बाद कैक बेर होस्टल अयलाह। एक दिन हम होस्टलसँ बाहर गेल रही कि ओ मिठाइ आ निमकी सब लऽ कऽ होस्टल आबि गेल छलाह। हमरा अनुपस्थितिमे विनोद सिह, विनोद झाजी, प्रेमचन्द्र जैन आ अमरजीत सिंह मिठाइ खा गेलाह। हुनकर प्रस्ताव छलनि जे ओ बहिनक विवाह हमरासँ कराषथि। हमर सब संगीके बूझल छलनि जे हमर विवाह भऽ चुकल छल, मुदा मिठाइ क लोभे ओ सब एकरा नुका लेलनि। जखन हम छात्रावास एलहुँ तँ हमरो एकटा मिठाइ देलनि आ सबटा गप्प सेहो कहलनि। हमरा दुःख भेल जे किऐक ने सत्य बात हुनका कहल गेल जे हम विवाहित छी।

एक बेर गामसँ हमर दाइ बनारस आएल छलि। बिड़ला विश्वनाथ मंदिरमे रुकलीह। हुनका लग हमर होस्टलक पता नहि छल। ओ आमक छिट्टा अनने रहथि, संगहि एकटा पुर्जी, जाहिमे हमर नाम क्लास सेकेण्ड इयर इंजीनियरिंग लिखल छल। संयोगसँ कोनो छात्र के देखौला पर हमर मोर्वी होस्टलक पता आ हमर रूम नं. भेटि गेलनि। ओ होस्टल आबि आमक छिट्टा रूममे पसारि देलनि। हमर संगी सब प्रसन्न छलाह आ सबटा 'आम' लऽ गेलाह, अपना संग दाइकेँ खूब आदर केलकनि। दाइ कतऽ रहत से चिंता भेल। मुदा ओ कहलनि जे हम सँझुका गाड़ीसँ गाम चलि जाएब।

प्रतिवर्ष होस्टल बदलय। तेसर क्लासमे लिम्बडी आ चारिममे 'राजपुताना', फाइनल इयरमे धनराजगिरि। सब होस्टलमे अपन-अपन ग्रुप। धीरे-धीरे पढ़ाइ गहन होइत गेल।

अंतिम वर्षमे हमर विशिष्ट विषय रहल Machine Tools आ Airconditing। मेसिन टूल्स सर्वप्रथम बी.एच.यू.मे आरम्भ भेल छल। IIT, खरगपुरक डा. अमिताभ सेन गुप्ता एकर किताब लिखने छलाह। IIT कानपुरमे डा. बी.एल. धूपर एहि पर कार्यरत छलाह। हमर प्रोजेक्ट छल मशीनक आत्मप्रेरित कम्पन (CHATTER) जाहिसँ वस्तुक गुणवत्ता प्रभावित होइछ। CNCक प्राथमिक वर्जन पढ़ाओल जाइत छल। एच.एम.टी., बंगलोर एकर मशीन बनाबक प्रक्रिया शुरू केने छल। एच.इ.सी. राँचीमे भारी मशीन जेना प्लेनर, मिलिंग मशीन इत्यादि बनैत छल। एकटा प्रोजेक्ट छल Screw Conveyor जे फैक्ट्री सभक सामग्रीक प्रवाह लेल उपयोगी छल। चाहे सीमेण्ट प्लाण्ट हो, स्टील प्लाण्ट वा, कोइला, कुसियारकेँ नीचाँसँ ऊपर पठेबाक हो, Screw Conveyor मुख्यरूपें उपयोगी होइत छल।

हमर दोसर विशेष विषय छल एयर कण्डिशनिंग जकर मुख्य प्रशिक्षक छलाह डा. एच.एन. गुप्ता। हवाक विभिन्न रूपक अध्ययन, डी.बी.टी., डब्लू.बी.टी., आर्द्रता आ वायु वेग सेहो। बाहरी गैस (अमोनियाँ, फ्रियोन)क उपयोगसँ रेफ्रीजरेशन आ वातानुकूलन होइत छल। हमर प्रोजेक्ट छल—कोल्ड स्टोरेजक। आन विषय जेना मशीन डिजाइन, प्रोडक्शन, आटो मोबाइल इत्यादि सामान्य छल। अंतिम वर्षक पढ़ाइक बाद बी.टेक. (यांत्रिक अभियंत्रणा)क डिग्री भेटल जाहिमे हमर अंक करीब 80% छल। प्रतिष्ठा सेहो भेटल। वर्ष 1974मे हम स्नातक बनि गेलहुँ।

बी.टेक.क बाद हम गाम नहि गेलहुँ। बोकारोमे हमर एकटा साढ़ूजी (श्री के.के. झा) इंजीनियर छलाह। 'बच्चा', हमर भातिज (बी.एस.एल.) बोकारो स्टील सिटीमे कार्यरत भऽ गेल रहए। हुनके लोकनिक आग्रह पर बोकारो बिदा भऽ गेलहुँ। संगहि एकटा छोट-छीन किताब मेटेरियल साइन्सक संग लऽ लेलहुँ। 15 दिनक बाद हमर प्रतियोगिता परीक्षा छल एम.टेक. प्रवेशक। बोकारो जाए प्लाण्टक भिजिट आ लोक सबसँ भेट-घाँट केलहुँ। बहुतो गोटे भेटलाह। विशाल स्टील प्लाण्ट जाहिमे ब्लास्ट-फरनेश दिन राति चलैत छल। प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरूक परिकल्पना छल, एच.इ.सी., बी.एस.एल., एच.एम.टी., डी.एस.पी. आ भिलाइ स्टील प्लाण्ट। भारतक स्वतंत्रताक बाद देशक औद्योगीकरण आरम्भ भेल। सिन्दरीक खाद कारखाना संगहि दुर्गापुर, नामरूप, गोरखपुर आ बरौनीक कारखाना आरम्भ भऽ गेल छल। यू.पी./एम.पी.मे बी.एच.इ.एल. (हरद्वार, झाँसी, भोपाल) सेहो शुरू भेल छल। कोइलासँ खाद

बनाबक लेल काज कोरबामे आरम्भ तऽ भेल मुदा आगाँ नहि बढ़ल। तालचेर, रामागुण्डम खाद कारखाना सफल भेल। नेफ्ताक उपयोग होइत छल जे विदेशसँ मङाओल जाइत छल कारण ओकर अवशिष्ट भारतमे नहि भेटैत छलैक। सिन्दरीमे अमोनिया आ सल्फेट सेहो बनय, मुदा मुख्यरूपेँ यूरिया बनैत छल। डा. हेमवतीनन्दन बहुगुणाक पेट्रोलियम मंत्री बनलाक बाद 2 कैटेगरी बनल–पहिल फीड स्टोक आधारित प्लाण्ट आ दोसर मार्केट आधारित प्लाण्ट। धीरे-धीरे नेफ्तावला प्लाण्ट सब घाटामे चलि गेल। बेशी प्लाण्ट बन्द भऽ गेल। फॉस्फेटवला खादक लेल रॉक (पाथर) आ नाइट्रिक एसिडक आवश्यकता छल जे बाहरसँ अबैत छल, तेँ महग। भारत सरकार केँ खादक लेल विशेष सबसिडी देबऽ पड़लैक। गैस आधारित खादक तकनीकी तैयार भेलाक बाद भारतमे ओहि आधार पर खादक प्लाण्ट बनि रहल अछि। पुरनामे राष्ट्रीय केमिकल फर्टिलाइजर (आर.सी.एफ) चेम्बूर आ पानीपत-भटिण्डामे पानिसँ हेवी वाटर H2O2 बनल जाहिसँ हाइड्रोजन, अमोनियाँ आ यूरिया बनऽ लागल।

हम बोकारोसँ घुरि एम.टेकक. प्रतियोगिता परीक्षामे बैसलहुँ जाहिमे बी.एच.यू. क अलावे, बिहार, यू.पी. आ अन्य प्रदेशक छात्र सब सेहो छलाह। एम.टेकक चयनक प्रवेश परीक्षामे हमर 'प्रथम' स्थान छल। डा. एन.के. दास तालुकदार हमरा बहुत प्रोत्साहित केलनि आ कहलनि जे हम एम.टेक पूरा कऽ एतहि बी.एच.यू.मे व्याख्याता बनि जाइ। हुनकर क्लास मशीन डिजाइन आ स्ट्रेन्थ ऑफ मेटेरियल्समे खूब मोन लागय। मुदा हमरा एकटा विषय चुनबाक मौका छल। हम डा. बी. रावक व्याख्यानसँ सेहो बहुत प्रभावित रही। ओ अमेरिकासँ आएल छलाह। बी.टेकमेमे थर्मोडटायनामिक्स पढ़ाबथि। हीट पावर चुनि लेलहुँ। ओतऽ पहिने 250/- रु. महीना छात्रवृत्ति भेटैत छल। बादमे छात्र सभक हड़ताल भेल आ बी.एच.यू.मे स्टाइपेंड 400/- प्रतिमास भेल। तकरा बाद आन इंजीनियरिंग कॉलेजमे सेहो एम. टेकक छात्रवृत्ति 400/- रु. भऽ गेल, जेना आइ.आइ.टी. आर.आइ.टी. आ सरकारी अभियंत्रण विद्यालय सबमे।

हम अपन छात्रवृत्ति (400/-)मे 250 टाका अपन खर्च लेल राखि ली आ 150/- रु. गाम पठा दी। दादाकेँ कोनो आमदनी नहि रहनि। हुनका ई नहि लागनि जे हम नोकरी नहि करैत छी।

एम.टेक. अध्ययनक संग हम यू.पी.एस.सी.क अभियंत्रण सेवा 1975मे बैसबाक उपक्रममे लागि गेलहुँ। संगहि पी.एस.यू. सभक प्रतियोगिता परीक्षाक लेल सेहो। इलाहाबाद जाए यू.पी.एस.सी.क परीक्षा देने रही। ओतऽ मोती लाल नेहरू इंजीनियरिंग

कॉलेज)क छात्रवासमे पूर्व परिचित सभक संग ठहरबाक मौका भेटल।

एम.टेक.क समय पहिल विश्वेश्वरैया होस्टलमे आ पुनः मोर्वीमे रही। विश्वेश्वरैयामे हम 'संस्कृति' मंत्री छलहुँ जे छात्र सभक सांस्कृतिक उत्थानक लेल कार्य करए। ओतहि तीन-चारि गोटेक संग एकटा हस्तलिखित पत्रिका सम्पादित कएल। एहिमे हमरा संग हमर सहपाठी 'राना दत्ता', प्रताप घोष आ आओर किछु छात्र छलाह। छात्र सबसँ कविता, गीत, कथा, चुटकुला आ संस्मरण लेलहुँ आ एकटा हस्तलिखित पत्रिका तैयार भऽ गेल। एकर नाम की राखल जाए ताहि पर राति एक बजे तक बहस भेल रहय। रानाक अपन विचार, प्रतापक किछु आओर आ संजयक किछु आने। बहुत देरी भेलाक बादो कोनो नाम पर सहमति नहि भेल। सबके ओङ्ही लागऽ लागल। हम कहलियैक-जखन नाम नहि भेटैत अछि तँ एकरा 'अनामिका' (बिना नामक) कहि दी। आइ.टी.क छात्र हिन्दीसँ प्रभावित नहि होइत छल तेँ हम एकटा फ्रेंच नाम देल। अन्त्वान (ANTOINNE) जकर मतलब 'अनामिका' छल। ई लघु पत्रिका बहुत प्रशंसित भेल। एकर मुख पृष्ठक परिकल्पना बनौलक प्रताप घोष। ओ एकटा पन्नाकेँ मोचरि रोशनाइक घोलमे राखि देलक। थोड़ेक कालक बाद उठेलक तँ एकटा चितबितरा कलाकृति बनि गेल छल। कारी, उज्जर आ ग्रे रंगक पृष्ठभूमि। ओहि पर लिखलहुँ 'अन्त्वान'।

***

अध्याय–5

कर्मक्षेत्रक यात्रा

1975 बैचमे हमर चयन जुनियर एक्जिक्यूटिव ट्रेनी (जे.इ.टी.) भारतीय उर्वरक निगम (FCI) लेल भऽ गेल आ एफ.सी.आइ. दुर्गापुर जाकऽ ज्वाइन करक आदेश भेटल। हम डा. तालुकदार कँ पुछलियनि जे की करी। ओ कहलनि जे एकटा व्याख्याताक पद हम रखने रही अहाँ लेल। अहाँ नहि जाउ। ताहि बीच डा. पशरीचा जे अमेरिकासँ आएल छलाह आ मशीन डिजाइन पढ़ाबथि, हुनका पुछलियनि जे की करी। बड़ी काल तर्क-वितर्क भेल जे आगाँ की करी। ओ कहलनि एखन जतऽ छी ओतहि टॉर्च बारू, जतऽ धरि रस्ता देखाए ततऽ जाउ आ पुनः तकरा बाद टॉर्च जराएब जे कतऽ जाइ। ओना डा. पशरीचा आ दोसर सब सलाह देलनि जे अभियंत्रणाक पढ़ाइक बाद किछु दिन उद्योग संबंधित प्लाण्टमे काज करी तँ नीक। ओतऽ व्यावहारिक अनुभव होइत छैक। तालुकदार साहब सेहो तकर अनुमोदन कैलनि।

हम बनारससँ दुर्गापुरक ट्रेन पकड़ि लेलहुँ। एकटा बैग जाहिमे पेण्ट-शर्ट आ मार्क्स सीट छल। किछु कालक बाद ट्रेनमे उपरका बर्थ भेटल जाहि पर जाए सूति रहलहुँ। जूता नीचे राखि देने रही। सासुरक देल पियर रंगक एकटा कमीज आ पेण्ट बैगमे छल। ओकरा तकिया बनाय सूति रहलहुँ। थोड़ेक कालक बाद किउल स्टेशन पार भेल छल कि निन्न टूटल रहय। हमर जूता कतऽ हेरा गेल से नहि जानि। संगहि हमर बैग सेहो केओ चोराए लेलक। हम चिचियौलहुँ। लोक सब उठल तँ हमरे कहऽ लागल जे ध्यान किऐक ने रखलहुँ। टीटीकेँ कहलियनि तँ ओ जवाब देलनि जे झाझा जाए रिपोर्ट करी। गाड़ी ठाढ़ होअए तखन ने। अन्तमे दुर्गापुर स्टेशन जाए एकर रिपोर्ट लिखेलेहुँ। मुदा मोन अशांत भऽ गेल।

हमरा संग दिलीप दास, हमर क्लासमेट (B.Tech. Electronicsक छात्र) सेहो छल। ओकरा संग दुर्गापुर खाद कारखानाक ऑफिस पहुँचलहुँ। हमरा बकौर लागल

छल, कारण संगमे टाका सेहो नहि छल। दिलीप एकर आख्यान हमरा सबइक ट्रेनिङ मैनेजर केँ कहलक। ट्रेनिङ प्रबंधक शुक्लाजी गोरखपुरक छलाह। ओ हमरा देखि द्रवित भऽ गेल रहथि। हमरा बिना सर्टिफिकेटेके ज्वाइन करा देलनि। वैह किछु एडभांस टाका दऽ देलनि जे तनखाहसँ बादमे कटि जाएत। हुनकर उपकार कोना बिसरबनि।

हम दू-तीन दिन कहुना काज चलौलहुँ। शनि-रविक सप्ताही छुट्टीमे कलकत्ता गेलहुँ। हमर बड़का भैया (श्री परमानन्द चौधरी) जे जकरिया स्ट्रीट कलकत्तामे छलाह, हुनका सबटा गप्प कहलियनि। ओ एकटा पेण्ट आ शर्ट सिया देलनि। पुनः दुर्गापुर मूचीपाड़ा आबि होस्टल अयलहुँ। कार्य आरम्भ भऽ गेल। छः मास धरि विशेष प्रशिक्षण छल। प्रोसेस प्लाण्टक अध्ययन आ प्रबन्ध विज्ञानक क्लास। ट्रेनिङ बड़ उपयोगी छल। जी.एम. (FCI) श्री चक्रवर्तीसँ बड़ प्रभावित भेल रही। हुनक गाड़ी ठीक 8 बजे प्लाण्ट गेट पर आबि जाइनि जखन फैक्ट्रीक गेट खूजय। हुनकासँ लोक घड़ी मिलाबय। प्लाण्टमे लागल अमोनिया कम्प्रेसर जे विदेशसँ आएल रहए, ओकरा बन्द होइते, चक्रवर्ती साहेब सीढ़ी पर चढ़ि कम्प्रेसरमे घुसि जाथि आ ओकर अनुवीक्षण करऽ लागथि। तुरन्ते ठीक कऽ देथि।

मुचीपाड़ा जतऽ खादक फैक्ट्री छल, हमरा सभक जेट होस्टलसँ करीब दू-तीन कि.मी. छल। सभ प्रशिक्षुक इंजीनियरकेँ क्लास वन अधिकारीवला तनखाह भेटैत छलैक। सभके फैक्ट्री पहुँचैमे समय लगैक। बेशी गोटे (जकरा अपन सवारी नहि छल) एक-एकटा रेले साइकिल किनलक। हमहूँ किनलहुँ। जीवन सरल भऽ गेल। जी.एम.के पहुँचबासँ पूर्व हम सब अपन ट्रेनिंग सेण्टरमे रही। होस्टलसँ मूचीपारा रेले साइकिलसँ जाइ। साइकिल हम एकटा छोट बंगाली बालक, गौड़ी के दऽ देलहुँ, किफायतेमे, 95/-मे। ओ बड़ नीक बंगला गीत गबैत छल। ओकर स्वरमे 'दिनेर शेषे घुमेर देशे, घोमता पड़ा ओइ छाया, घुमा दे रे, घुमा दे रे...' रवीन्द्र ठाकुरक गीत हमरा बेरि-बेरि मोन पड़ैये। ओतऽ रसायन उद्योगक जानकारी, खादक उत्पादन प्रक्रिया आ लोक-प्रबन्ध पर खूब व्याख्यान होअए। कतेक प्रबन्ध विज्ञानवला प्रशिक्षक मोटिवेशन, सम्वाद आ व्यवहार विज्ञानक विषय पर चर्चा करथि। टेलरसँ लऽ कऽ गिलवर्थ आ मैस्ले पर खूब चर्चा होइत छल। नेतृत्व शैली पर विशेष विमर्श होअए, आ पुस्तक सभ रहए।

छह मासक बाद हमर ट्रान्सफर भऽ गेल सिन्दरी। किछु गोटे तालचेर, रामागुण्डम आ (RCF) मुंबइ चलि गेल। किछु गोटे पानीपत आ भटिंडा प्लाण्ट चलि गेल। सिन्दरी भेल छोट-छीन शहर, धनबादसँ किछु दूर, झरियाक बाद। बिहार कॉलेज ऑफ इन्जीनियरिंग आ एफ.सी.आइ. मुख्यरूपेँ एहि शहरके बसौने छल। एकटा

बजार आ सिनेमा हॉल छल 'सहरपुरा'मे। सिनेमामे हमरो सबके डिस्काउण्ट भेटए, जेना इंजीनियरिंग कॉलेजक छात्र सभ केँ। चारि आनामे एक शो सिनेमा।

कारखानाक विभिन्न भागमे प्रशिक्षणक बाद हमर पदस्थापन भेल पावर प्लाण्टमे जतऽ 10 मेगावाटक दूटा टर्बाइन चलैत छलैक। ड्यूटी रातिकऽ भऽ गेल। बॉयलर आ टर्बाइनक हल्लाक बीच किछु सोचनाइ मुश्किल। हम राति कऽ किछु किताब लऽ जाइ आ खाली समयमे पढ़ी। ओहि समय एकटा हिन्दीमे लेख लिखने रही जे टेक्नीकल मैगजीनमे निकलल रहए। प्लाण्टक अंतिम आउटपुट छल यूरिया जे प्रीलिंग प्लाण्टमे झरैत छल। हम ओकर नाम देलहुँ झर्झर स्तम्भ।

ओही बीच हमर संगी विनोदझाजी जे गोमियामे छलाह, हुनकर बियाह ठीक भऽ गेलनि। बरियाती 21 फरवरी, 1977 कऽ टाटानगर गेल छल। हमहूँ रही। हुनकर माँ आ बाबूजी हमरा बड़ मानैत छलाह। जखन वर गेला विवाहक लेल तखन शामियानामे हम आ सूरज (विनोद जीक छोट भाए) बचि गेल रही। भूख लागि गेल। सूरज सैनिक स्कूल तिलैयामे पढ़ैत रहय। ओहो भुखा गेल। ओ शीर्षासन करऽ लागल। बिचला भाइ मनोज एवम् मामा इत्यादि घुमैत रहलाह। सूरजक बचपनक नाम छल 'सरोज' जे कन्याक नामसँ मिलैत छल। ओ अपना प्रींसिपल के कहलकनि जे नाम बदलि दी आ 'सूरज' लिखल जाए। जखन प्रींसिपल कहलथि अपन गार्जियन के बजा कऽ लाउ तँ ओ सीधे उत्तर देलनि—"नाम हमर छी तँ गार्जियन केँ किऐक आनू?" अंततः ओकर नाम 'सूरज झा' पड़ि गेल। ओ भारतीय सेनाक हवाइ विंगमे शीर्ष तक पहुँचल।

सिन्दरी फर्टिलाइजरमे कहियो-कहियो बी.एच.यू.क रसायन विभागक छात्र संगी रंजन मुखर्जी अबैत छल जे कलकत्तामे कार्यरत छल। ओहीमे हमर भैया सेहो कार्यरत छलाह। रंजन छल बी.एच.यू.क क्रिकेटक कप्तान आ राष्ट्रीय खेल खेलने छल, खूब भ्रमणशील आ गीत गबैत। बादमे ओ PIDLITEक काजसँ CHINA चलि गेल। रिटायर्ड भेलाक बाद देवलाली, बम्बइ आ कलकत्तामे घर बनओलक। ओकर पत्नी 'रूपा' सेहो ओकरा संग डांस करैत छलि।

सिन्दरी कारखानाक प्रशिक्षणक अंतिम परीक्षामे सेहो हमर स्थान नीक छल तेँ जैह पद माङी से भेटत, ई कहलनि ट्रेनिङ प्रबन्धक श्री रस्तोगी। एकटा संगी छल सरदार राजेन्दर सिंह जकर पिता सी.एम.डीक ड्राइवर छलाह। ओ सेहो जे.इ.टी. बनि गेल छल। ओकरहि नामक एकटा सरदार राजेन्द्र सिंह टाटानगरमे कार्यरत छल। दुनू गोटेक एप्वाइण्टमेण्ट लेटर अदला-बदली भऽ गेल छल। मुदा अन्तमे दुनू हमरा संगे जे.इ.टीमे आबि गेल रहय। सी.एम.डी.क सहयोगीक पुत्र राजेन्दर सिंहक अंक किछु

कम रहैक। ओ हमरासँ आग्रह केलक जे ओकरा सामग्री प्रबन्ध विभाग चाही जकर ड्यूटी ए.सी. ऑफिसमे रहैत छलैक। हमरा जोर दऽ कऽ ओ ट्रेनिङ अफसर लग लऽ गेल आ कहलक जे हमरा बदला ओकरा एम.एम. डिपार्टमेण्ट देल जाए। मुदा रस्तोगी साहेब जे ट्रेनिङ मैनेजर छलाह, मना कऽ देलथि। ओ कहलथि जे चौधरी अगर नहि करत तँ ई पद दोसर केँ मेरिटक अंकक अनुसार भेटत। हमरा आग्रह पर ओकरा नीक पोस्ट भेटि गेलैक।

किछु दिनक बाद हमर यू.पी.एस.सी.क रिजल्ट आयल। हम यांत्रिक अभियंताक सूचीमे उतीर्ण भऽ गेल रही, क्लास वन सेवाक लेल। सौंसे अनघोल भऽ गेल।

31.5.1977 कऽ अंतिम तनख्वाह लैत हम दिल्ली विदा भऽ गेलहुँ। एफ.सी. आइ.मे जे बॉण्ड भरने रही तकर कोनो विचार नहि केलहुँ। यू.पी.एस.सी द्वारा रेलवे बोर्डक पत्र आएल जाहिमे हमरा भारतीय पूर्ति सेवा भेटल आ प्रथम पद भेटल–‘सहायक निदेशक’ (पूर्ति)क। दिल्ली जाए 1.6.1977 कऽ डी.जी.एस.डी. जीवनतारा विलडिंगमे योगदान देलहुँ। ओतऽ ट्रेनिङ आ प्रोबेशन आरम्भ भऽ गेल। हमरा संग नौटा ट्रेनी छलाह।

***

अध्याय–6

दिल्लीक यात्रा

ओना तँ हम पहिने सेहो दिल्ली गेल रही एक बेर साक्षात्कार दैक लेल। कोनो पी. एस.यू.क पद पर, जखन एम.टेक.मे रही आ ओतऽ कोनो परिचित नहि रहक कारण करोलबागमे आर्य समाजक मंदिर पर रुकल रही। मात्र एकटा पेण्ट-शर्ट आ लुंगी छल संग। ई सबसँ सस्ता जगह छल। कोनो खर्च नहि। अबैक काल दू रु. दान दऽ देब तँ नीक। एकर पता हमरा बी.एच.यू. होस्टलमे भेटि गेल छल। ओतऽ एकटा कमरा छलैक जाहिमे बेड तँ छल, मुदा पर्दा नहि लागल रहैक। दिन कऽ लुंगी खोलि पर्दा बना ली आ राति कऽ ओकरा ओढ़ि ली।

दिल्लीमे नियुक्ति भेलाक बाद हम ओतहि पहुँचलहुँ, मुदा ओतऽ तीन दिनसँ बेशी रुकैक व्यवस्था नहि छल। सफदरजंग डेवलपमेण्ट एरियामे डी.डी.ए.क स्टाफ कॉलोनी छल। ओतऽ एक स्वजन छलाह 'सिंह' महोदय जे डी.डी.ए.मे कार्यरत छलाह। हुनकर घरक एकटा कमरा किराया पर भेटि गेल। मासिक रेण्ट छल 110 रु.सँ नीचाँ। पेइंग गेस्ट जकाँ। मुदा खाना स्वयं बनाबक छल। तेँ एकटा मटिया तेलक चूल्हा आ बर्तन सहित प्रेसर कुकर किनलहुँ। ओहि समय क्लास-1 अधिकारीक मूल वेतन प्रायः 450/- छल। कुल 1100/- भेटए प्रतिमास।

सामने वला फ्लैटमे पड़ोसी भेटलाह उजानक जगन्नाथझाजी जे इंडियन नेशनक दिल्ली ऑफिसमे कार्यरत छलाह। ओ परिवार सहित छलाह। हुनके बगलमे विनय झाजी छलाह जे I&B मंत्रालयमे अफसर छलाह। ओ दिल्लीमे कोनो पंजाबी परिवारमे विवाहित छलाह, तैयो मैथिली बाजथि। कनिञे दूर पर छलाह 'उजान' (बड़का गाम)क श्री सी.एन. झाजी जे डी.डी.ए.मे अधिकारी छलाह। हुनकर परिवार बहुत सुसंस्कृत। एस.डी.ए. कॉलोनीक आगाँ रोड जे जगन्नाथ मंदिरसँ पार्क तक छल, तकर उत्तर छल ग्रीन पार्क कॉलोनी। ओतऽ एकटा एवर ग्रीन रेस्टोरेण्ट रहए।

ओतऽ बेशीकाल साँझ कऽ जाइ, अपन पत्नीक संग। कहियो-कहियो 'उपहार' सिनेमामे सेहो जाइत रही। ओही कॉलोनीक डी.डी.ए.क उच्च अधिकारी (इंजीनियर) श्री हरिबल्लभ झाजी भेटलाह। पूरा परिवार बहुत नजदीकी बनि गेलाह। हुनक पत्नी बड्ड आवेशी आ हमरा पत्नीक दूरक ममियौत बहिन। ओ सब हमरा गार्जियन जकाँ मानऽ लगलाह।

'एवरग्रीन' रेस्टारेंटमे कहियो कऽ युवा अधिकारी चटर्जी भेटैत छल जे वाणिज्य मंत्रालयक कोनो ऑफिसमे निर्यातसँ सम्बद्ध छल। ओकरे संगे छुट्टीमे आबि समय बिताबी। भास्कर चटर्जी कोट्टायाममे डी.एम. पद पर छलाह। हमरा सभक एकतुरिया समूह छल। तेँ गप्प-सप्पमे नीक लागए।

कनिये दूर पर रोड साइडमे आइ.आइ.टीक दिश एकटा बड़का कमरा रखने छलाह सलिलजी (श्री एस.के.झा) जे हमरा संग पटना साइंस कॉलेजमे छलाह आ बादमे आर.आइ.टी. जमशेदपुरसँ पास कऽ EILमे पोस्टेड छलाह। हुनकहि रूममे रहैत छलाह हुनकर आर.आइ.टी.क क्लासमेट श्यामानन्द झाजी जे बी.एच.इ.एल.मे कार्यरत छलाह। छुट्टीमे समय कोना बीतय, से पता नहि चलय।

एस.डी.ए.क कॉलोनीसँ बस सीधे पार्लियामेण्ट स्ट्रीट जाइत छल, जतऽ पटेल चौकक सोझाँ 'जीवन तारा बिल्डिंग' छल। हमर ऑफिस ओहीमे छल। द्वितीय तल्ला पर ट्रेनिङ विभाग जे सुदर्शन सिंह (निदेशक), अण्डर सेक्रेटरी, श्री सरकार द्वारा संचालित छल। हमरा संगे कुल नौटा प्रशिक्षु अधिकारी छलाह। 2टा 'खान'। 3टा 'अग्रवाल'। N.K. माथुर, राधा कृष्णन् आ हम। एकटा पार्श्व-प्रवेशी (Lateral Entrant) छल जे आइ.आइ.टी दिल्लीक रसायन विभागसँ पास कऽ कोनो प्राइवेट इण्डस्ट्री होइत एहि पद पर आएल छलाह। तकर बाद फार्मेसी, ऑटोमोबाइल आ अन्य विषयक लेल यू.पी.एस.सी. द्वारा चयनित अधिकारी सब सेहो छलाह। ट्रेनिङमे हमर सभक समूह पैघ छल। ओतऽ दिल्ली विश्वविद्यालयसँ व्याख्याता, विधि संकायक प्रोफेसर सब अबैत छलाह। आबि पढ़ाबथि। विशिष्ट व्यक्ति सब आबथि। क्रय प्रक्रियाक लेल सरकार साहेब एवम् कार्यरत निदेशक सभ छलाह।

एहि बीच ग्रुप 'A' सेवावलाक लेल फरमान आएल जे लाल बहादुर शास्त्री अकादमी, मसूरीमे 6 मासक ट्रेनिङ हयत। ओहि लेल सभके 1900/-रु.क ड्रेस कीनऽ पड़त, कारण मसूरीमे फाउन्डेशन कोर्स सभ क्लास-1 अधिकारीक लेल अनिवार्य छल। किछु आर्थिक तंगीक कारण हम आग्रह कयल जे हमरा एहिसँ छुटकारा दऽ देल जाए। बहुत कहलाक बाद सरकार साहेब ई जोगाड़ कऽ देलनि।

एक दिन आर.एस.एस.क झण्डेवालान ऑफिस दिससँ एकटा पत्र आएल श्री

महेश शर्माजीक, जे बी.एच.यू.मे हमरासँ सीनियर छलाह आ शाखा लगबैत छलाह। हुनका हमर दिल्ली पदस्थापनक पता लगलनि। लिखलनि जे आर.एस.एस. औफिस आबि भेट करू। ओहि समय पूरे भारतवर्षमे आपातकाल (25.6.75सँ 2.3.77) लागल छल। आपातकालक बाद आर.एस.एस. पर विशेष प्रतिबन्ध छल। हम कहलियनि जे हम एक सरकारी सेवामे छी, तेँ हमरा पत्राचारसँ मुक्त राखी। ओना, किछु दिनक बाद श्री वेदप्रकाश गोयलजी स्वयं हमरा संग लऽ दिल्ली स्थित 'धर्म भवन'मे लऽ गेल छलाह जतऽ सभ गोटे हमरासँ पैघे आ वरिष्ठे छलाह। ओ हमर परिचय दिआओलनि। ओहि ठाम स्थापना भेल मालवीय स्मृति ट्रस्ट जे पं. महामना मालवीयक उद्देश्य शिक्षा, उद्योग आ न्यायक सम्वर्धन लेल कार्य करबाक लेल प्रतिबद्ध रहए।

हमर पत्नी अंजीरा दिल्लीमे हमरा संग आबि गेल छलीह तँ खेनाइ-पिनाइमे दिक्कत नहि रहल। पड़ोसक मैथिलीभाषी अपन इलाकाक लोक सभ छलाह परिवार सहित, तैँ आस्वस्त रही। ट्रेनिङ पूरा भेलाक बाद जे परीक्षा भेल ताहिमे हमर अंक नीक रहए। पोस्टिंगक समय भेल। बेशी पद रिक्त छल दिल्लीमे। मात्र एकटा पोस्ट छल बम्बइमे। हमर सहकर्मी एस.के. गेराक परिचित पंजाबी अधिकारी श्री दर्शन सिंह, निदेशक छलाह, जनिक पुत्र संत राजेन्द्र सिंहजी छथि। हुनकर गुरु आश्रमक अनुयायी छल गेराक परिवार, तेँ ओ पैरवी लगाएं दिल्ली पदस्थापना करा लेलनि। हमर पदस्थापन बम्बइ भऽ गेल। हम डी.जी. (महानिदेशक) श्री निवासन, आइ.ए.एस. केँ भेट केलियनि मुदा ओ प्रशासनिक नियम-कानून बताबऽ लगलाह। चूँकि केओ हमर सहयोग करैक लेल तैयार नहि भेलाह तेँ बम्बइ लेल विदा भऽ गेलहुँ।

एक बेर प्रगति मैदानमे मेला देखैत काल रक्षा मंत्रालयक हॉलमे अंजीरा खसि पड़ल छलीह। हम असमंजसमे पड़ि गेल रही। पता लागल जे ओ माए बनक प्रक्रियासँ गुजरि रहल छलीह। डेरा आबि डॉक्टरक सलाह लेलहुँ। ओ कहलनि जे हिनका रेस्ट करऽ दियौन। किछु गोटेक कहला पर हिनका गाम लऽ गेलियनि आ नेहरा जाए छोड़ि देलियनि जतऽ हुनकर देख-भाल होबऽ लागल।

***

अध्याय–7

बम्बइ प्रवास

दिल्लीसँ बम्बइक यात्रामे एकटा बेडिंग आ एकटा बैग छल। बम्बइक विक्टोरिया स्टेशन उतरि, लेलहुँ चैम्बूरक ट्रेन, हार्बर लाइन पर। हमर ट्रेनिङक सङ्गी त्यागराजनक सलाहक अनुसार चैम्बूर उतरि प्रतिदिन रेण्ट परक आवास ताकऽ लगलहुँ। ओतऽ वर्षा आरम्भ भऽ गेल छल। बम्बइमे जून मासक वर्षा बड़ प्रसिद्ध। झमाझम बरखा। स्टेशनक कातमे एकटा छत्ताक दोकान छल। 18 रु.मे एकटा छत्ता किनने रही। बिना समय गमौने चैम्बूर रोड परक एकटा होटल पहुँचलहुँ। जगह खाली नहि छल। ओकर मनेजर एक घण्टाक बाद पुनः आबि पूछय कहलनि। किछु कालक बाद एकटा बेड खाली भऽ गेल रहय। हम ओकरा लेल तुरन्त अनुबन्ध कऽ लेलहुँ। 10 रु. प्रतिदिनक लेल। अन्दर गेलहुँ तँ बेड खाली छल। गुणवत्ताक कोना ध्यान नहि रहल। कोनहुना रहबाक लेल ठऽर छल। ओहि कमरामे दोसर सहगामी छलाह एकटा गुजराती, जयन्त मेहता जे इ.आइ.एल.क इम्पलाइ आ एच.पी.सी.एल.के प्रोजेक्ट पर निरीक्षण अधिकारी छलाह। कारी रंग, चेचकक दागसँ पीड़ित, मुदा बाजथि मधुर भाषा। चूँकि दुनू गोटेके संगहि रहक बाध्यता छल तेँ आपसमे गप्प-सप्प करऽ लगलहुँ। ओ बहुत दिनसँ ओतऽ रहैत छलाह। ओ हमरा ग्रैण्ड होटल लऽ गेलाह जतऽ लंचक लेल बैसलहुँ। सामने दहिना कातक विशाल टेबुल पर पाँच-छौ गोटे बैसल छलाह। जयन्त मेहता कहलनि जे ओतऽ कहियो-कहियो भोरमे आ साँझमे फिल्म अभिनेता 'राजकपूर' आ हुनक बालक सब सेहो अबैत छलाह। ग्रैण्ड होटल छल छोट-छीन रेस्टोरेण्ट आ शान्त वातावरण। सामने भीड़वला टेबुल पर दूटा पुरान संगी हमरा देखलनि, जे सिन्दरी आ दुर्गापुरसँ ट्रान्सफर भऽ आएल छलाह। ओ सब आर.सी.एफ. चैम्बूरमे कार्यरत छलाह। आँखिसँ आँखि मिललाक बाद मोन विभोर भऽ गेल। एतेक दूर अयलाक बाद ई संगी सब पुनः भेटि गेल। सिन्दरी आ दुर्गापुर

फर्टिलाइजर प्लाण्टमे संगे खेलाइ आ काज करी।

होटल आबि खूब सुतलहुँ। लागल जे बम्बइमे ठऽर भेटि गेल। अगिला दिन बम्बइ भी.टी. स्टेशन पहुँचलहुँ, हार्बर लाइनक लोकलसँ। किछु दूर पैदल चलैत पहुँचलहुँ 'बलार्ड इस्टेट' जतऽ बम्बे डाइंगक बगलमे छल सप्तबिल्डिंग। ओकरा पाछाँ छल विशाल महल भारत पेट्रोलियमक जे ब्रिटिश कम्पनी छल आ राष्ट्रीयकरणक बाद पी.एस.यू. बनि गेल रहय। 'सप्त' बिल्डिंगक सामने 'सिंधिया हाउस' आ तकर सामने कस्टम हाउस। सप्तबिल्डिंगक दोसर तल पर पहुँचि प्रशासनिक अधिकारी देसाइ केँ अपन ट्रान्सफर आर्डर देलियनि। ओ यद्यपि हमरासँ 20 साल श्रेष्ठ छलाह, हमरा बहुत आदरसँ बैसेलाह आ पानि आ चाह पियौलनि। एकटा छोट फाइल पर स्टाफ द्वारा किछु प्रस्ताव टंकित कराए निदेशकक अनुमोदन लेलनि, आ हमर पदस्थापन एकटा सीट पर कऽ देलनि जकर काज छल 'सम्विदा निष्पादन'। हमर सचिव छलीह मिस प्रतिभा कुलकर्णी–बहुत शालीन। ओ B.Com. (Hon.)क बाद स्टेनोग्राफी सीखि कऽ ज्वाइन केने छलीह।

हमर ई प्रथम पोस्टिंग छल तेँ ज्यादे बूझऽमे नहि आबय। प्रतिभा हमरा पुरान फाइल सब देखाबय। ओकरासँ धीर-धीरे मेल भऽ गेल। एक दिन एकटा संचिका अनलक जाहि पर स्व. मोरारजी देसाइक दशखत छल जखन ओ भारतक वित्तमंत्री छलाह। ओना मोराजी भाइ भारतक प्रधानमंत्री सेहो भेलाह, आपातकालक बाद। हुनक हस्तलिखित नोटमे रक्षा मंत्रालयक लेल 'पारासूट फाइबर'क क्रय सम्बन्धी प्रस्ताव छल। सेपढ़ि मोन गद्‌गद भऽ गेल। प्रतिभा कुलकर्णीक अंग्रेजी बड़ नीक छल। हमरासँ अंग्रेजिएमे सम्वाद करय। बादमे ओ ई नौकरी छोड़ि यू.टी.आइ.मे नीक पद पर प्रतिष्ठित भऽ गेल। हमरा बम्बइ छोड़ैत काल ओ उच्च पद पर पहुँचि गेल छल।

किछु दिनक बाद हमरा निपटान खण्ड (Disposal Section)मे ट्रान्सफर भऽ गेल। ओहि पद पर कोनो वर्ग-Aक अधिकारीक प्रथम स्थापना छल। हमरासँ पहिने सब, प्रोमोटी अधिकारी रहैत छलाह। हमर केबिन छल रोड साइडमे दोसर मंजिल पर। कोन पर रहबाक कारणे लोकक अबरजात आ बम्बइक रंगीन नजारा भेटए। हमर बॉस भेलाह एकटा प्रोमोटी अधिकारी श्री अवत रमानी जे सिंधी छलाह। प्रोमोशन पर एहि पदकेँ प्राप्त कैलनि तेँ वर्ग-Aक अधिकारीसँ विशेष डाह रहनि। लेकिन हमरा अपना हाथमे किछु नहि छल। दू-अढ़ाइ वर्ष तक हम ओहि पद पर रही, जाहिमे महाराष्ट्र, गुजरात आ गोवा-दामन-दियु प्रदेश सभक अन्तर्गत केन्द्रीय विभागक सब पुरान वस्तु सभक निपटान होइ छल।

प्रतिमास हमरा बम्बइसँ एक बेर बाहर जाए पड़य। पूना, नागपुर, भुसावल, नासिक,

अमरावती, जामनगर, भावनगर, सुरेन्द्रनगर, मोर्वी, सूरत, मेहसाना आ कच्छ-भुज।

हमरा चैम्बूरक लॉज (10/- प्रति बेड प्रति दिन) महग लागऽ लागल छल। हम अपन ऑफिसमे चर्चा कऽ देने रही जे घर चाही। ओही बीच पता चलल जे 'किसन मरवाहा' बम्बइमे पदस्थापित छल तकर दिल्लीक लेल ट्रान्सफर भऽ गेल। ओकर कमरा सी. जी. एस. कालोनी कोलिबडामे भाटिया साहेबक घरक एकटा रूम छल। मारवाहाक सिफारिश पर ओ रूम हमरा भेटि गेल। प्रति मास 100/- रु.सँ नीचा। भाटिया साहेब, हुनक पत्नी आ दूटा पैघ बेटा संगहि रहैत छलाह। एकटा कमरा हमरा भेटल। भोजनक प्रबन्ध बाहर करी। कहियो-कहियो भाटिया साहेबक पत्नी हमरा चाह पिया देथि। हमहूँ धिया-पुताकेँ किछु-किछु गाइड कऽ दैत रहियनि। हमरा डेरासँ एकपेड़िया जाइत रहय लोकल रेलवे स्टेशन-किंग्स सर्कल। एकटा दोसर रास्ता जाइत छल 'गुरु तेग बहादुर नगर'-रेलवे स्टेशन। दुनूमे कतहु ट्रेन पकड़ि हम बम्बइ VT पहुँचि जाइ। आपसीमे किंग्स सर्कल उतरी। ओतऽ एकटा गाँधी मार्केट छल जतऽ लेडीज साड़ी आ बच्चा सभक कपड़ा बड़ सस्त भेटैत छल। किंग्स सर्कल तक पहुँचैमे मात्र एकटा रेलवे पुल टपऽ पड़ैत छल। कोलिबड़ा कॉलोनीसँ किंग्स सर्कल जाइत एकपेड़ियाक बीच एकटा छोट-छीन मंदिर छल, जकर पुजारी छलाह रैमा-कोठियाक 'झाजी'। हुनकासँ परिचयक बाद आपसी यात्रामे साँझ कऽ बेशी काल प्रसाद प्राप्त करी। हुनक पत्नी डेरा पर रहथिन। पंडितजीक संगे एकटा युवती मंदिर पर बैसैत छलीह। पता लागल जे ओ हिनकर सारि छथिन जे अपन पतिक संग बम्बइ आएल छलथिन। पंडितजी अपन सारिकेँ फुसिया कऽ बम्बइमे राखि लेने छलाह, आ साढ़ूके विदा कऽ देलथि गाम।

दिल्लीसँ हमर संगी सब जे ट्रेनिङमे छलाह ताहि समूहमेसँ किछु गोटे बम्बइ आबि गेलाह—रामकृष्णन (टी.एन.), हनुमनथप्पा, गणपति आ जी.एम. राव। त्यागराजन आ सूर्यनारायणन हमरासँ पहिने आबि गेल छलाह आ डी.एस. टेक्सटाइल ऑफिसमे पदस्थापित छलाह। ओना तँ ओ सब चर्च गेट दिश जाथि आ हम बम्बइ वी.टी. दिश, तथापि कहियो-कहियो किंग्स सर्कल स्टेशन पर सब भेटि जाथि। हुनकर संग छलाह आर.बी.आइ. बैंकमे कार्यरत नागभूषणम आ एकटा आओर लड़की सुश्री दिक्षित जे आर.बी.आइ. तक जाथि। ओ सब बेशीकाल संगहि जाथि। हम सब फस्ट क्लासक पास बना लेने रही जाहिसँ धक्का कम लागय। लोकल ट्रेनक सफर काफी स्मरणीय रहल। सभ अपन-अपन कोन धेने। बीचमे उपरका हैंडिल पकड़ने। एकटा समूह सवारीक चारि गोटेक संग ताश खेलैत रहय आ अगल-बगलसँ लोक टोकारा देअय। कतेक युवा यात्री बान्द्रासँ माहिम होइत बम्बइ-भी.टी. तक एकटा कोन धेने कोनो प्रतियोगिता परीक्षाक प्रैक्टिस करैत छलाह। सभ अपनेमे मग्न। बम्बइमे केओ ककरो

पर ध्यान नहि दैक आ ने बिना परिचयक गप्पे होइक। एक बेर बम्बइ भी.टी.मे टीशनसँ निकलैत देखलहुँ एकटा युवतीकेँ, जे लाल रंगक सलवार आ उज्जर रंगक कुर्ती पहिरने छलि। कने लऽग जा कऽ देखल आ पुछलहुँ—"अहाँ की शीला स्मृति छी—रॉल नम्बर 324, पटना साइंस कॉलेज, प्री यूनिवर्सिटी बैच?"

"हँ, हम वैह छी। अहाँ कतऽ? हम सब संगी रही। हम एम.सी.क बाद SBIमे, पी.ओ बनलहुँ आ एखन बम्बइमे छी।" ओहि समय मोबाइल फोन नहि छल। तेँ नं. विनिमय नहि कऽ सकलहुँ। बादमे ओ अपन छोट भाए शेखर सुमनकेँ बम्बइ आनि फिल्मक दिश पठौने छलीह। पुनः भेट नहि भेल।

ऑफिसमे दिनक खाना, बलाड-पियरक एकटा इरानी कैंण्टीनमे होइत छल। साँझ कऽ हमर संगी सब मैरिन लाइन्ससँ अबैत छलाह। किंग्स सर्कल आ दादरक बीच माहेश्वरी उद्यान लग पुरान किताब बिकाइत छल। ओही लग माटुंगामे छल एकटा रेस्टूरेण्ट—'साउथ इंडिया लिमिटेड'। हम सब ओतहि जमि जाइ साँझ 7 बजेके बाद। बहुत पवित्र दक्षिण भारतीय भोजन केराक पात पर परोसल जाइत छल। नाम छल 'साउथ इंडिया लिमिटेड' मुदा खाना छल अनलिमिटेड, जतेक बेर परसन माङ्गी ततेक बेर भेटय। ओकर मानक भोजन छल भातक संग रसम, साम्भर आ बादमे दही। बड़ आनन्दमय भोजन भेटैत छल। तकरा बाद सब गोटे पैरे-पैरे अपन रूम आबि जाइ।

जखन गणपतिक ट्रान्सफर दिल्लीसँ बम्बइ भेलनि तखन ओ लिखलनि जे हमरा लेल एकटा घर ताकि दी। हुनक पत्नीक संग एक छोट बालक छल।

हम रामाकृष्णनक तमिल मकान मालिकक सहयोगसँ एकटा फ्लैट तकलहुँ 250/-रु. प्रतिमास। ओ गणपतिके दिआय देलहुँ। एक दिन रामाकृष्णनक मकान मालकिन चाह पीबैत छलीह आ टूटल हिन्दी भाषामे पुछलनि, "तुम्हारी बीबी कहाँ रहती है?" हम कहलियनि—"बिहारमे दरभंगा जिलाक गाममे।"

ओ डँटैत बजलीह, "तुम सबके लिए क्वार्टर खोजा और अपनी बीबी को क्यों नहीं लाता?"

"हम एतुक्का घरक 'मास'क किराया आ 11 मास के एडभांस नहि दऽ सकब। घर सेहो महग अछि।"—हम कहलियनि।

ओ हमरा लेल सस्ता मकान ताकऽ लगलीह। एक दिन एकटा महोदय श्रीपिल्लइ जे भारतीय नेवी विभागमे कार्यरत छलाह, हुनका बजाय हुनकर घर हमरा दिया देलनि 175/-रु.मे प्रतिमास। कोनो एडवांस नहि। ई मकान छल से सेक्टर 12, कोलिवडामे। तकरा बादसँ हम कतेको गोटे के मकान दिऔलियनि। खास कऽ केन्द्र सरकारमे

कार्यरत अधिकारी सबकेँ जनिका मकानक जरूरति छलनि।

एक दिन छुट्टीमे माहेश्वरी उद्यान लग डॉन बॉस्को चर्च गेलहुँ। बैसि गेल रही चिन्तन करैत। गामसँ टेलिग्राम आएल छल जे हमर बेटीक जन्म भेल अछि 14 अगस्त, 1978 दिन। ताहिसँ पहिने ऑफिसेमे ए.डी. जोनक बेटी, किट्टीक जन्मक खबरि भेटल। आ 16.8.78 कऽ जय भारत अग्रवालक बेटीक जन्म। सब महालक्ष्मी एकहि संग। गाममे खुशीक माहौल छल। ऑफिसमे महालक्ष्मीक स्वागत भेल। मोनमे होअए जे गाममे की सोचैत होयत लोक। हमरा अपना होअए जे बेटी बहुत सगुन लेने आएत। विवाहक 8 सालक बाद कतेको कबुलाक बाद स्मिताक जन्म भेल। बाबा बैद्यनाथ धाम जाए हमर सासु अंजीराक लेल बच्चा मङने छलीह। पं. युक्तिनाथ झा (जे बाबा धाममे संस्कृत विद्यालयक प्रींसिपल छलाह) हुनकर भविष्यवाणी छल। गाममे सब प्रसन्न छल। अंजीराके किछु दिक्कत नहि भेलनि कारण हुनकर पैघ कका 'नूनू कका' (डा. शम्भुनाथ चौधरी) डी.एम.सी.एच.क हेड छलाह।

डॉन बास्को चर्चक सीढ़ी पर बैसि चिंतनमे रत रही। बच्चीक नाम 'स्मिता' राखल। ओकर नानी गाम (नेहरा)क नाम 'पुतुल' आ माए कहलखिन 'सोनी'। सभ ठाम सब नाम छल हमर 'स्मिताक'।

एक दिन ऑफिसक बाद बम्बइ भी.टी. लेट पहुँचलहुँ। किंग्स सर्किलक ट्रेन नहि भेटल। तेँ हार्वर लाइनक मानखुर्द जाइ बला ट्रेन पकड़लहुँ जे 'कोलिबड़ा'-गुरु तेगबहादुर टीशन पर उतरि जाएब। संगहि सूर्यनारायण छल, हमर सीनियर। ओकरा संग विभिन्न विषय पर गप्प शुरू भऽ गेल। आत्मविश्लेषण जे टेण्डरमे भागीदारी करैत फर्म सभक चुनाव कोना हो। सभ इएह कहैछ जे हम पूर्णरूपेँ सक्षम छी आ सामग्रीक पूर्ति करब, परिदान समय पर देब। क्वालिटीकेँ पूरा करब। जँ एकहि रंग कीमत दू-तीन टा फर्म देअय तँ ओकर कार्टेल कोना तोड़ल जाए। गप्पक सिलसिला तेहन चलल जे गाड़ी 'चूनाभट्ठी' स्टेशन पहुँचि गेल। गुरु तेगबहादुर नगर कखन पार केलहुँ से नहि जानि। एकाएक केओ बाजल 'चूनाभट्ठी'। हम सब धरफरा कऽ उतरलहुँ। पुनः उनटा ट्रेन पकड़लहुँ आ कोलिबड़ा पहुँचि गेलहुँ। ओतऽसँ डेरा जाइत काल रस्तामे एकटा ढाबा छल सरदारजीक जकर बेटी, नीतू सिंह, फिल्म उद्योगमे काज करैत छलि। कहियो-कहियो ओतऽ आबथि, तेँ बहुत भीड़ रहैत छल। ओहिठाम असामाजिक तत्वक सेहो भीड़ भऽ जाइक। दाउद इब्राहीम, छोटा राजन आ ढोलकियाक नाम प्रचलित छल। ओकरा सबकेँ 'भाइ' कहि सम्बोधन करैत छल, टेबुल पर बैसल लोक सब।

बड़ीकाल बैसलाक बाद तन्दूरी रोटी आ तरकारी भेटल। थाकल शरीर असकता गेल। ओतसँ निकलैत 10.30 राति भऽ गेल। चललहुँ जे दौड़ि कऽ डेरा पहुँचि जाइ।

हमर मकान मालिक भाटिया साहेबक फरमान छल, '10 बजे साँझ तक कोनहु हालतमे अपना रूम आबि जाउ'। ओहि दिन हमरा देरी भऽ गेल। फ्लैट पर जाकऽ जखन घण्टी बजौलहुँ तँ कोनो उत्तर नहि भेटल। करीब एगारह बाजि गेल छल। केबार ढकढकेला पर सेहो कोनो उत्तर नहि। हम हुनकर समयक सीमा पार कऽ देने रही, मुदा भेल जे कने सिमपैथी देखओताह। ओ केबाड़ नहि खोललनि। हम घरक सीढ़ी पर बैसि गेलहुँ। मुदा निन्न नहि होअए। करीब बारह बजे रातिमे हम दू मंजिला घरसँ उतरि गेलहुँ आ सी.जी.एस. कॉलोनीमे बनल रस्ता पर चलऽ लगलहुँ। अन्हारमे कतहु-कतहु स्ट्रीट लाइट आ पुलिसक चौकीदारी। गश्त करैत पुलिस हमरा पुछलक जे कतऽ रहैत छी। हम अपन परिचय देलियैक आ कहलियैक जे रातिमे कने टहलि रहल छी। दू-तीन राउण्ड टहललाक बाद लोकक अवरजात बन्द भऽ गेल। बम्बइ लोकल ट्रेन रातिमे 12 बजेसँ 3 बजे तक बन्द रहैत छल तेँ ओतऽसँ चलैत-चलैत कोलिवडा स्टेशन पहुँचि गेलहुँ। वातावरण शांत छल। मात्र किछु बिना घरबला लोक सभ प्लाटफार्म पर पड़ल छल। ओतऽ हम एकटा खाली बेंच पकड़ि लेलहुँ। धीरे-धीरे निन्न आबऽ लागल। मुदा मच्छरक एहन प्रकोप जे सुतनाइ मुश्किल भऽ गेल। कतऽ जइतहुँ से नहि सूझल। 5 बजे भोर तक समय काटक छल। दूधवला आ पेपरवाला जखन फेरी लगाओत तखन उठताह भाटिया साहेब। पाँच बजे भोरक बाद ओतऽसँ बिदा भऽ भाटिया साहेबक घर अयलहुँ आ तखन ऑफिस जयबाक तैयारी भेल।

महाराष्ट्र, गुजरात आ गोवा-दामन-दियुक पूरा भ्रमण भऽ गेल। भारत सरकारक ऑफिस सबठाम पसरल छल। हमर 'निपटान'क नीलामी कार्यक्रम सभठाम होअय। एक बेर नागपुरसँ आगाँ बल्लारशाह, जे महाराष्ट्र आ आन्ध्रक सीमा पर छल, ओतऽ पहुँचलहुँ। बल्लारसाहक फॉरेस्ट विभागक ऑफिसक पुरान गाड़ी आ उपस्कर सभक निलामी करबैक छल। हमर नीलामीकर्त्ता (auctioneer) दोसर दिन पहुँचल। हम एक दिन पहिने पहुँचि कऽ अधिकारी विश्राम गृहमे पहुँचि गेल रही। छोट-छीन बजार बल्लार शाह, जेना मनीगाछी हो। थापर समूहक पेपर मिल कने दूर छल। हम रेस्ट हाउसमे भोजनक उपरान्त नीचाँ उतरल रही जे टहलि कऽ देखी। कनिये दूर पर एकटा मैदान छल जतऽ 'रामलीला' होइत छलैक। आरती शुरू छल। अपना गामक रामलीला मोन पड़ि गेल। तेँ सहटल-सहटल लग पहुँचलहुँ। आरतीवला अपने दिशक बुझेलाह। मैथिलीमे हुनकासँ गप्प केलहुँ। ओ कोठियाक छलाह। हम प्रमोद जीक परिचय देल जे रामलीला टीममे लोकप्रिय छलाह। ओ युवक हमरा रंगमंच लग लऽ गेलाह आ खूब प्रसाद देलनि।

सामाजिक/सांस्कृतिक जीवन

स्मिता छोट छल। ओकरा लऽ कऽ बम्बइसँ बाहर गेनाइ दुष्कर छल। ओना कहियो-कहियो हम अपन पत्नीकेँ टूर पर संगे लऽ जइयनि। गुजरातक बलसाड़, सूरत आ अहमदाबाद; महाराष्ट्रक अमरावती, पूना आ नासिक; गोवाक पणजी, सावंतबाड़ी जतऽ मसाला आ काजू खूब भेटए। स्मिता केँ लऽ गेनाइ दुष्कर छल आ हमर पत्नी एकसरे रहबो नहि कतिथि। हमरा घरक सामने फ्लैटमे 'बेनेगल' परिवार छल। फिल्म निदेशक श्याम बेनेगलक पितियौत भाइ। ओ भारतीय मौसम विभाग (IMD)मे कार्यरत छलाह। हुनक पत्नी कोनो सरकारी ऑफिसमे काज करथिन। बेटी माया एस.एन.डी.टी. कॉलेजमे पढ़ैत छलनि आ बेटा विनय स्कूलमे। एके फ्लोर पर रहबाक कारणे हमरा सभकेँ लगाव भऽ गेल। जखन हम टूर पर जाइ तँ हुनका सबकेँ सूचित कऽ दी।

हम बेशीकाल माहिम चर्च जाइत रही। बुध दिन कऽ व्रत राखी। एक बेर पुनेक डिफेंस उपस्कर डिपो आ खड़गबासलामे पुरान जीप सभक निलामीमे गेल रही। निलामीमे 'पुरान डीजल इंजन' सब छल। बोली लागल 10,000/-रु. आ सब चुप्प भऽ गेल। हम व्यापारी सभक चलाकी देखि ओकरा रद्द कऽ देलहुँ। फेर बोली चलल आ 1 लाखसँ ऊपर गेल। हमरा विश्वास नहि भेल। हम ओकरा रिजेक्ट कऽ देलहुँ जखन कि हमर सीमा छल 50,000/- जाहिसँ ऊपर हमर अधिकार छल जे बेचि दी। जखन हम आपस बम्बइ गेलहुँ आ अपन रिपोर्ट लिखलहुँ तखन एस.भी. सुन्दरम (डाइरेक्टर) हमरा बजौलनि आ पुछलनि, "अहाँक अधिकार क्षेत्रमे छल 50,000 रु. तकक बोली। अहाँ एक लाखक बोली किऐक रद्द केलहुँ।" हम ओकर कारण देने रही जे 'कार्टेल' छल आ ई भारत सरकारक लेल वित्तीय घाटा छल। ओ हमरा कहलनि-अहाँ एखन नव छी, अनुभव नहि अछि। अगिला बेर जँ वैह व्यापारी सभ मिलि कम बोली देत आ कोनो आओर अधिकारी जाए ओकरा मानि लेथि तँ सरकारक कतेक वित्तीय घाटा लगतैक, अहाँक कारणे। ओ कहलनि सरकारी कार्यमे प्रोसेससँ काज करी, पैशनसँ नहि। अहाँके केओ पुरस्कार नहि देत। हमरा बड पैघ ज्ञान भेटल।

ओकर 3 मासक बाद जे टीम गेल तकरा लेल हम गाइड प्राइस (जी.पी.) एना रखलहुँ जे ओ सब अपन अधिकार 25% नीचा बेचबाक उपयोग करितो 1.60 लाखसँ कममे नहि बेचि पाबथि। ओहि निलामीमे हमर नव डाइरेक्टर श्री एन. शंकर आ अवर सचिव श्री जाधव (IAS/Maharastra) गेल छलाह। हमर काज निलामकर्मी 'शंकर रामचन्द्रा' के कहि देब छल जे कोनो हालतमे एकर बिक्री एक लाख साठि हजारसँ नीचामे नहि हो।

शंकर रामचन्द्रा बोली डेढ़ लाखसँ ऊपर आरम्भे केलक। टूटि गेल कार्टेल आ ओ लॉट 2-9 लाखमे बिकल। हमरा पार्टी सभक फोन आबऽ लागल जे अहाँके की प्रेसीडेण्ट अवार्ड भेटत एहि कार्टेलकेँ तोड़इ लेल? ओहि व्यापरीमे असामाजिक तत्व सेहो छल। हम अपन डाइरेक्टर (शंकर) के कहलियनि जे हमर एतऽसँ ट्रान्सफर कऽ देथि कारण केओ दुश्मन ने बनि जाए।

पूनामे नीलामीक बाद भोजनक विशेष प्रबन्ध छल। हमरा आग्रह भेल रहय, भोजन कऽ आराम करी। हम कहलियनि जे बुध दिन हमर उपवास रहैछ। सभकेँ आश्चर्य लगलनि जे हिन्दू व्यक्ति तँ ज्यादे मंगल दिन हनुमान जीक उपवास करैछ, केओ-केओ वृहस्पति आ रवि दिन। बुध के उपवास पहिल बेर सूनल छल। हम कहलियनि हम 'माहिम' चर्च जाइ छी जतऽ 'बुध' दिनक उपवासक बड़ महत्व छैक। हमरा केओ व्रत तोड़बाक आग्रह नहि कयलनि।

बम्बइमे हम जखन सेक्टर-6, सीजीएस कॉलोनीमे गेलहुँ तँ घरमे एकटा पटिया टा छल। एकटा सतरंजी पर दू टा गेरुआ। दूटा कुर्सी। 'स्मिता' राति कऽ ठेहुनियाँ दैत कतहु चलि जाइत छलि। भोरमे ताकी तँ ओ बाथरूममे पड़ल रहैत छलि। ई देखि हम निर्णय लेल जे एकटा डबल बेड कीनब। तकर दाम 2000/- छल। हमरा बजटसँ बाहर छल। मुदा आँखि मूनि कीनऽ पड़ल। संगे एकटा टेबुल सेहो लेलहुँ, भोजनक आसन 1300/-मे भेल जे केओ परिचित उल्हास नगर, बाजारसँ मङा देने छलाह सस्तामे।

बम्बइ एकटा विशाल नगर अछि—महानगर, जतऽ देश-विदेशक सभ ठामक लोक वैश्विक वातावरणमे रहैत छथि। ई भारतवर्षक 'वाणिज्य'क राजधानी अछि जे राजनैतिक राजधानी, दिल्लीसँ पूर्णतः भिन्न। एतऽ ककरहु अपन काजक अलावे गप्प करबाक फुरसति नहि रहैत छैक। लोकल ट्रेनक भीड़मे हँसैत-खेलैत आम जीवन बड़ मनलग्गू छल। एतऽ मिथिलांचलक बड़ गोटे भेटलाह। हमर परिचय मिथिला मंडलक पुनीत लालजीसँ भेल। एकटा कार्यक्रम छल लोअर परेलमे जाहिमे सनकौर्थ गामक सूर्जनारायणझाजी (फिनिक्स मिलक श्रमिकक हेड) अगुआ छलाह। आयकर आयुक्त सीतारामझाजीक स्वागत छलनि। ओही मंच पर हमरो ओ लोकनि बम्बइ मैथिल समाजसँ परिचित करा देलनि। तकरा बादसँ कतेको मैथिल व्यक्तिसँ व्यक्तिगत आ सामाजिक स्तर पर प्रगाढ़ता बनल गेल। अड़ेर गामक शैलेन्द्रझाजी जे कान्दीवलीमे रहैत छलाह, ओतहि भेटलाह। आदरणीय सीतारामझाजी मैथिलीक अनुरागी छलाह एवम् समय-समय पर कार्यक्रममे मदति करैत रहथिन।

हैदराबाद इस्टेटक अपना घरमे एक बेर ओ श्रीमती शारदा सिहाक गीतक कार्यक्रम आयोजित कएलनि। एक बेर रविन्द्र-महेन्द्रक गीतक राति भरि चलल 'रंग

भवन' मे। बम्बइमे वरिष्ठ व्यक्ति श्री उमाकान्त मिश्राजी पहिनेसँ स्थापित छलाह, मोरारजी देसाइक संगी। किछु कारणसँ मिथिला मंडलमे दराड़ि भऽ गेल आ कार्यक्रम सब स्थगित भऽ गेल। बम्बइमे एकटा बिहार एसोसिएशन छल जकर मुखिया छलाह झाजी, शारदा ट्रस्टक फाउण्डर। ओहि संस्थाकेँ उजागर करैत हम सब एकटा प्रोग्राम षण्मुखानन्द हॉलमे प्रस्तावित कयल, जतऽ फिल्म स्टार नाइट मनाओल जाइत छल। ओकर मुख्य संयोजक भेलाह, अल्केम लैबक मालिक श्री सम्पदा प्रसाद सिंह (सम्पदा बाबू)। हुनक सहयोगी छलाह श्री उपेन्द्र शर्माजी। एम.एम. प्रसादजी उपआयुक्त सीमा शुल्क, जे दादरमे रहैत छलाह, मुख्य सहयोगी छलाह। किछु दिनक बाद फिल्म उद्योगसँ श्री शत्रुघ्न सिन्हाजी सेहो अपन सहभागिता देलनि। बेसीकाल कार्यक्रम नन्दकुलियार साहेब, GM सेण्ट्रल रेलवे मुख्यालय एवम् FA&CAO पश्चिम रेलवेक शाह साहेबक ऑफिसमे होइत छल।

षण्मुखानन्द हॉलक क्षमता बहुत छल। कार्यक्रम तैयारीक बाद हम सब आधा टिकट बिहारसँ सम्बन्धित लोककेँ देलियनि आ आधा करीब आन-आन प्रदेशक लोक सभकेँ—जेना, गुजराती, मराठी, पश्चिम भारतीय इत्यादिकेँ। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहपूर्ण रहल। हॉलमे श्रीमहेन्द्र कपूर अपन स्वर, 'नील गगन के तले, बिहार एसोसिएन का प्यार पले' गाबऽ लगलाह। नवोदित गायक उदित नारायणक गीत आ भोला दूबेक 'टनाटन घण्टी बाजे'क ध्वनि गुञ्जित भऽ उठल। एहि कार्यक्रमक बाद आन-आन प्रदेशक लोक अपन प्रतिक्रिया देलनि जे ओ सब नहि जनैत छलाह जे बिहारमे एतेक सांस्कृतिक चीज सब अछि। ओ सब आग्रह केलनि जे अगिला प्रोग्रामक लेल हुनको सबसँ चन्दा लेल जाए।

बम्बइमे हमर ऑफिस 'सप्त' बिल्डिंगमे छल जे बलार्ड पियरमे बम्बे डाइंगक ऑफिसक बगलमे रहए। यदा-कदा श्री एन.के. जैन (व्यापारी) बी.एच.यू.क पूर्व छात्रक संगठन संगठित करबाक लेल अबैत छलाह। ओही क्रममे श्री वेद प्रकाश गोयल जे मुकुन्द आइरनमे जी.एम. छलाह, हुनकासँ भेट भेल। हुनका मोन पड़लनि 'धर्म भवन', दिल्लीक मालवीय मिशनक स्थापनाक समय हमर भेट-घाँट। जेँ लऽ कऽ ओ सायनमे रहैत छलाह, जे हमरा डेरा केन्द्रीय सरकारी कॉलोनी, कोलिवड़ासँ लऽग छल। हुनका घर पर शनि-रवि कऽ प्रतिमास मीटिंग होबऽ लागल आ बी.एच.यू. अलुम्नीक केन्द्र बनि गेल। बम्बइमे स्थापित एकसँ-एक पूर्व छात्र जुड़ैत गेलाह। गोदरेज, मफत लाल, फिल्मी एक्टर इप्तखार आ भारत सरकारक प्रतिष्ठित अधिकारी लोकनि।

गोयल साहेबक पत्नी श्रीमती 'चन्द्रकान्ता' गोयलजी बड्ड नीक स्वभावक छलीह, मृदुभाषी आ लोक हितकारी। ओ सायन एरियाक कार्पोरेटर सेहो छलीह। हुनक प्रभावेँ

हमर बेटी स्मिता आ सौरभ दुनू गोटेके प्रवेश लिटिल एंजेल्स स्कूलमे भऽ गेल। स्मिता (जन्म 1978) आ सौरभ (जन्म 1980) प्राइमरी क्लासमे पढ़ऽ लागल रहथि। गोयल साहेबक ओतऽ जाइ तँ हुनक पुत्र पीयूष गोयल, जे बादमे नरेन्द्र मोदी सरकारमे वाणिज्य मंत्री भेलाह, डॉन बॉस्कोमे पढ़ैत रहथि। हुनक अग्रज पियूष फोर्जिङ्ग कम्पनी चलबैत छलाह आ बहिन कओलेजमे पढ़ैत छलथिन। गोयल साहेब बादमे 'अटल बिहारी' सरकारमे शिपिंग मंत्री भेलाह। हम ओहि समय रेलवेक हाजीपुर जोनमे पदस्थापित रही आ दिल्ली जाए हुनका बधाइ देने रही। वैह हुनका संग हमर अन्तिम भेट छल से मोन अछि। हुनक आकस्मिक देहावसानसँ संतप्त भऽ गेल रही। मैडम चन्द्रकान्ताजीसँ पुनः भेट नहि भऽ सकल। ओ एम.एल.ए. बनि गेल छलीह। हुनक आह्लादपूण व्यवहार एखनो मोन पड़ैछ।

बी.एच.यू. अलुम्नीक क्रियाकलाप बढ़ैत गेल। समय-समय पर आनन्दमय कार्यक्रम होइत रहल। तेँ खूब मोन लागए।

सामाजिक समूह आ नेटवर्क

बम्बइ जाइते थोड़ेक दिनमे हम पूनम (हमर सारि) केँ हुनक डेरा पर, जे भोला भाइ देसाइ रोड पर ब्रीच कैण्डीक बगलमे आ महालक्ष्मी मंदिरक सामने छल, भेट केलहुँ। हुनकर ससुर जी सर्वश्री जजोडियाक कम्पनीमे वित्त विभागक वरिष्ठ अधिकारी छलाह। हुनकर सौम्य स्वभाव एवम् सम्वेदनशील व्यवहार बहुत नीक लागय। पूनम छलीह हमर ससुर (श्रीतंत्रनाथ चौधरी)क छोट भाए हेमन बाबूक पैघ पुत्री जे बियाहक बाद सासुर (जाले)सँ बम्बइ चलि गेल छलीह। पूनमसँ छोट नूतन अपन पति बिमलेश झाजी, इंजीनियरक संग पटनामे छलीह। ताहिसँ छोट 'चन्दा' (चन्दू) बम्बइ आबि गेल छलीह आ हुनकर पति श्री एस.के. झा (बुच्चू जी) MTNL, बम्बइमे स्थापित छलाह। किछु दिनक बाद चन्दूकेँ हम सब अपने इलाकामे घर ठीक कऽ देलियनि तेँ लगेमे रहऽ लगलीह। अंजीरा के खूब मोन लागनि। सबसँ छोटकी बहिन गुड़िया (अभिलाषा) गामेमे छलीह। सबसँ छोट भाई राजू गामेमे पढ़ैत छलाह।

बम्बइमे हमर चैम्बूरक संगी जयन्त मेहता जे EILक कर्मचारी छल, सेहो एही कॉलोनीमे आबि गेल छल। ओकरा लेल हमाँ घर ताकि देने रहियैक। ओकर घरमे TV सेट छल। हम सभ शनि दिन साँझ कऽ चित्रहार देखैक लेल ओतऽ चलि जाइत रही। बादमे एकटा छोट स्क्रीनवला क्राउन टी.भी. हमहूँ लेलहुँ जे घरक देबालमे टाङि देलहुँ। रंगीन टी.भी. नहि आएल छल। प्रणव मुखर्जी वाणिज्य मंत्री घोषणा केलनि जे भारतमे रंगीन टी.भी. शीघ्र आएत। जयन्त मेहता बादमे अपन पत्नीक संग न्यू जर्सी, USA

चलि गेल। ओतहि कार्य करैत रिटायर भऽ गेल। आब ओतहि स्थित अछि। हमर सारि 'चन्दू'क बेटी प्रीति जे हमरा सामने बढ़ैत गेलि छली, सेहो ओतहि रहैत अछि।

स्मिता बड्ड छोट छल (2 सालक), जखन सौरभ (प्रशान्त)क जन्म 14.10.1980 कऽ भेल। बम्बइ होस्पीटलमे डा. जहाँगीरदारक अन्दर इलाज शुरू भेल छलैक। सौरभक जन्मसँ पहिने बम्बइमे कर्फ्यू लागि गेल छल कारण ओतऽ कोनो हड़तालक संभावना छल। कर्फ्यूसँ पहिने हम अंजीराकेँ लऽ कऽ सम्भावित तिथि पर बम्बइ होस्पीटल गेल रही मुदा डा. जहाँगीरदर आपस कऽ देलनि। कहलनि जे आपातकालमे कर्फ्यू लगलाक बावजूदो अहाँकेँ केओ रोकत नहि। तहिना भेल। किछु दिनमे जखन बड़ दर्द होअए लगलैक तखन हम अंजीराकेँ टेक्सीसँ कर्फ्यू रहैत बम्बइ हॉस्पीटल चलि गेल रही, जतऽ सौरभक जन्म 14.10.1980 कऽ भेल रहय।

किछु दिन पूर्वसँ अंजीराक मोन खराब रहैक। हमर 'दाइ' (कटैयावाली) एकटा नौकर (इन्दू)के लऽ कऽ बम्बइ आबि गेल रहय, तेँ सुविधा छल। मुदा इन्दुकेँ मोन नहि लागै छलैक। एक दिन ओ घर छोड़ि कतहुँ भागि गेल। एक मासक बाद दादाक चिट्ठी आएल जे इन्दुआ गाम पहुँचि गेल।

दाइक गाम गेलाक बाद हमर सासु (अंजीराक माए) बम्बइ आबि गेल छलीह। ओ बहुत उत्साही आ क्रियाशील छलीह। बम्बइक प्रथम यात्रा छलनि मुदा सौरभक जन्म आ सेवाक कारणे बम्बइ घुमबाक मौका नहि लगलनि। घरेमे जे लोकनि आबथि तनिका सभसँ गप्प-सप्प होइनि। लगमे चन्दू आ बुच्चूजी छलाह, तेँ समय कटि जाइन्ह।

एक दिन हमर एक पारसी सहकर्मी, श्रीदादी बलसारा अपन पत्नीक संग हमरा घर पर आएल छलाह। ओ सभ बम्बइक पुरान आदमी, टर्नर रोड, बान्द्रामे रहैत छलाह। हुनक साढ़ू (जोनी वाकर, हास्य अभिनेता) सेहो ओही बंगलामे दोसर कात रहैत छलाह। बलसाराजीक पत्नी छलथिन प्रसिद्ध फिल्म तारिका 'नर्गिस'क पैघ बहिन। नर्गिस ओहि समय गत कऽ गेल रहथि। बलसाराक पत्नी हमर सासुक सुन्दरता देखि बड्ड प्रभावित छलीह आ कहैत छलीह—"आपको फिल्ममे भाग लेना चाहिए"। हमर सासु लजा जाथि। बलसाराजीक पत्नी अप्पन खिस्सा सुनओलनि जे कोना प्रेम भेलनि जखन ओ बान्द्राक नेशनल कॉलेजमे पढ़ैत रहथि। ओ एकबेर फिल्ममे पार्ट अदा करऽ गेल छलीह मुदा सेट पर डायरेक्टर संगे झगड़ा भऽ गेलनि। ओ कोनो बात लऽ कऽ तमसाइत डायरेक्टरकेँ एक थापड़ मारि देलनि आ कहलनि जे "हम एक्टिंग नहीं करेंगे।" ई गप्प ओ बड़े शौकसँ सुनाबथि।

बम्बइमे मैथिली फिल्म 'ममता गाबय गीत'क हीरो त्रिदीबजी (श्री बी.एन. झा)

हमर पता पर हमरा तकैत पहुँचलाह। ओ नेहरासँ सम्बन्धित छलाह। हमरा जमाए तुल्य मानैत छलाह। हुनक पत्नी मंजू दीदी बड़ आवेशी लोक। बेशी काल अपन घर 'वैभव अपार्टमेण्ट', सान्ताक्रुज वेस्टमे बजा कऽ आतिथ्य करैत छलीह। ओतहि देवानन्दजीक छोट भाए चेतनानन्द हुनकर संगी रहैत छलाह। त्रिदीव जी इंडियन नेशनक श्री यू.एन. सिंह जीक बड़ नजदीकी छलाह। ओ मैथिलीक प्रथम फिल्म 'ममता गाबय गीत'मे प्रथम नायक छलाह। फिल्म आधा बनलाक बाद जखन केदार बाबू यू.एस.ए. चलि गेलाह तखन ओहो आन-आन काजमे लागि गेल छलाह। हुनकासँ सिखलहुँ जे बम्बइमे छोटछीन घरमे बेड, डाइनिंग टेबुल इत्यादि कोना सरिया कऽ राखी। हुनक पुत्री तूलिका तखन बच्चा क्लासमे पढ़ैत छलीह।

बम्बइमे खूब मोन लागय। बम्बइक संघर्षमे जीवन बहुत आनन्ददायी छल। पूर्व आ पश्चिम रेलवेक सभ इलाका देखि लेलहुँ। लोकल ट्रेन ओतुक्का लाइफ लाइन छल। ट्रेनमे भीड़-भाड़ तँ बड्ड रहैत छलैक मुदा तकर आदति बनि गेल रहय। बी. एच.यू.क संगी अजित रस्तोगी (L&T), प्रदीप दलाल (ONGC) आ उज्जल डे (NOCIL)क अलावे कतेको संगी-साथी भेटि गेल छल।

ओही बीच एक बेर भारत सरकारमे 'मंत्री' बनलाह बिहारक श्री भागवतझा 'आजाद'। हुनकर विभाग छल 'पूर्ति विभाग' जकर अन्तर्गत हमर ऑफिस (DGS&D) पड़ैत छल। हुनकर छोट बालक श्रीकीर्ति आजाद क्रिकेटक नीक खेलाड़ी छलाह। भागवत बाबू दरभंगामे डा. शम्भूनाथ चौधरी (शम्भू बाबू) जे डी.एम. सी.एच.क हेड छलाह, तनिकासँ सहयोग लैत 'कीर्ति'जीक विवाह नेहराक भरत बाबूक छोट पुत्री 'पूनम' सङ ठीक केलनि। एहि कारण हेमन बाबूकेँ भागवत बाबूसँ विशेष हेम-क्षेम भऽ गेलनि। हेमन बाबू (सझिला कका) हमरा कहलनि जे बम्बइ गामसँ बड्ड दूर अछि तेँ कोशिश लगाए दिल्ली आबि जाउ। हमरो मन भेल जे दिल्ली ट्रान्सफर भऽ जाए तँ नीक। ओना दिल्ली बिना पैघ पैरवीक सम्भव नहि छल। सझिला कका हमरा दिल्ली बजओलनि आ दुनू गोटे भागवत बाबूक डेरा पर पहुँचि गेलहुँ। साक्षात्कार भेल आ भागवतजी कहलनि—"दिल्लीक पद पर बहुत दावेदार अछि। कही तँ कलकत्ता ट्रान्सफर करा दी"। हम मना कऽ देलियनि। "दिल्ली अगर हो तँ नीक आ ताहूमे सरकारी घरक इन्तजाम हो तँ नीक।" हमर प्रस्ताव छल। भागवत बाबू कहलनि जे दिल्लीमे शहरी विकास मंत्री छलथि श्रीभीष्म नारायण सिंह जे सीमित लोककेँ मददि करैत छथि, तेँ हुनकासँ अपेक्षा कम अछि। हम कहलियनि जे तखन हम बम्बइमे पूर्ण स्थिर आ प्रसन्न छी तेँ ट्रान्सफरक बात नहि कएल जाए।

ओना किछु दिनक बाद डी.जी.एस.डी.क मुख्यालयसँ महानिदेशक (डी.जी.) श्री आर.पी. सिंह अयलाह बम्बइ ऑफिसक निरीक्षणमे। हुनका सामने श्री सूर्यनारायण (सहायक निदेशक) पड़लाह। सूर्यनारायणक एकटा प्रस्ताव जे रक्षा विभागक कपड़ा सम्बन्धित छल, से विवादित भऽ गेल छल। सूर्यनारायण निम्न स्तरक अधिकारी अपन प्रस्तावमे जाहि कम्पनीक अनुशंसा केने छल तकर स्थान मूल्य वरीयतामे तेसर स्थान पर छल। ओ प्रथम निम्न मूल्यवला कम्पनीक उपेक्षा कऽ प्रस्ताव देलक, किएक तँ ओकर सभक स्थिति नीक नहि रहए एवम् ओकरा सभक ऊपर पुरान संविदाक भार छल। मुदा क्षेत्रीय निदेशक, मुख्यालयक डी.जी.क मते सभसँ कम मूल्यवला कम्पनीक अनुमोदन देल गेल। मंत्री स्तर पर सूर्यनारायणक (निम्नतम) स्तरक अधिकारीक प्रस्ताव स्वीकृति भेल, तेँ विभागमे विशेष चर्चा रहय। सूर्यनारायण ओहि ऑफिसमे गत 6-7 सालसँ पदस्थापित रहय कारण बम्बइ ऑफिसमे केओ ने आबऽ चाहय, आ ने एतऽसँ केओ जाइ चाहैत रहय। श्री सिंहल ओकरा देखि तुरत ऑर्डर देलनि जे 'अहाँ शीघ्र बम्बइक दोसर ऑफिस जाए ज्वाइन कऽ लिअऽ, आइए'। डी.जी.क दिल्ली गेला कनिञे दिन भेल कि एकटा पैघ कार्यालय आर्डर आएल, जाहिमे 5 वर्षसँ बेशी समयवला सभक ट्रान्सफर भऽ गेल। ओहिमे हमर ट्रान्सफर दिल्ली मुख्यालय भऽ गेल। Principle of Rotation (चक्रीय सिद्धान्त) लोक प्रशासनमे बहुत समय बाद आएल।

***

अध्याय–8

दिल्ली आगमन

जुलाइ, 1984मे हम दिल्लीक मुख्यालयमे योगदान दऽ देने रही, DGS&Dक ऑटो मोबाइल निदेशालयमे। किछु मासक बाद हमर प्रोन्नति 'उपनिदेशक' (पूर्ति) पद पर यांत्रिक इंजीनियरिंग निदेशालयमे भऽ गेल। हमरा अधीन जे विशेष कार्य छल ताहिमे भारतक पोत निर्माण, कार्यालय आधुनिकीकरणक उपस्कर, ड्रिलिंग रिंग आ वातानुकूलन प्रणाली सभ छल। परियोजना कैपिटल गुड्स आ प्रोजेक्ट क्रयक बहुत चीज सभ सीखबाक मौका भेटल।

बम्बइसँ आबि हम पहिने एकसरे दिल्ली आबि जनकपुरीमे घर ठीक केलहुँ। ओना हमर मित्र श्रीदिनेश कुमार सिंह पहिनेसँ दिल्लीमे छलाह। हुनक सहयोगसँ जनकपुरीमे एकटा घर ठीक कयल। ओ हमर सदस्यता एकटा नव सहकारी गृहनिर्माणमे करा देने छलाह। 10,000/-रु. देबऽ पड़ल रहय। ओहिमे 80,000/- टाका लोन भेटि गेल आ करीब 2 लाख रु.क घर ओहि संस्थाक माध्यमे भेटि गेल। एहिमे करीब चारि साल लागल। ताहि बीच हम सी-2/25-सी, जनकपुरीमे छाबड़ा जीक घरमे भाड़ा पर रही। निम्नतम भाड़ा छल 200/- रु. प्रतिमास। स्मिता आ सौरभक प्रवेश जनकपुरीक सेण्ट मार्क्स स्कूलमे भऽ गेल। तेँ हम पूर्णरूपें जनकपुरीमे परिवार सहित स्थापित भऽ गेल रही।

एक दिन इसकूलमे जल्दी छुट्टी भऽ गेल। सौरभ आ स्मिता दुनू जल्दी घर आबि गेल। हल्ला भेल जे इन्दिरा गाँधी (प्रधानमंत्री)केँ हुनक सुरक्षा बलक सिपाही गोली मारि देलक। स्कूल-कओलेज सब बन्न भऽ गेल। विद्यार्थी सभ अपन-अपन घर चलि गेल। दुन बच्चाकेँ घरमे स्थिर करैत बाहर निकललहुँ तँ पोसंगीपुर बजारमे लूटि शुरू भऽ गेल आ आगि जरऽ लागल। सुनलहुँ पूरा देशमे पसाही लागि गेल। पंजाबक ऑपरेशन ब्लूस्टार जे अमृतसरमे भेल रहय, तकर प्रतिक्रिया छल, तेँ सरदारजी सब पर विशेष प्रभाव पड़लैक। लागल जे दिल्लीमे इमरजेंसी कर्फ्यू लागि गेलैक। रातिक समय कॉलोनीमे ग्रुपमे सब घूमऽ लागल। अपन-अपन समय बाँटि रस्ताक आ घर

सभक रक्षा करैक लेल पहरेदारी शुरू भऽ गेल।

एम्हर घरमे धिया-पुता दिल्लीक एहि वातावरणसँ पीड़ित भऽ कहय लागल जे आपस बम्बइ चलू। ओकरा सबकेँ की पता छलैक जे ई हमरा हाथक बात नहि छल। करीब डेढ़-दू मासमे दिल्लीक वातावरण सामान्य भऽ गेल।

ऑफिसमे पदोन्नति आरक्षणक नीति (जे बादमे उच्च न्यायालय द्वारा खारिज कऽ देल गेल) लागू कयल गेल। हमरा आपस सहायक निदेशकक पद पर आनि देल गेल जाहि खण्ड पर हमर पदस्थापना भेल ओ छल इलेक्ट्रोनिक आयात। विभागक सबसँ भारी सीट। भारत सरकारक सभ विभागक लेल खरीद होइत छल–DRDO, CSIR आ ICAR सन भारतक प्रयोगशाला सभक लेल। संगहि मिसाइल सेवाक लेल विशिष्ट वस्तुक आयात। कार्यभारक तनाओसँ हमर मोन खराब होअए लागल रहय। 'चर्म' रोगक उत्पत्ति भऽ गेल जे बादमे दवाइक कारण विस्तृत भऽ गेल। ओही बीच हम दाढ़ी बढ़ाबऽ लागल रही आ लोक सबसँ भेट-घाँट कम करी। एक बेर पूनासँ प्रयागजी आएल छलाह जे हमरा देखि विस्मित भऽ गेल छलाह। कहियो-कहियो दिल्ली प्रशासनमे पदस्थापित श्यामानन्द झाजी सेहो अबैत छलाह।

जनकपुरीमे बिहार लोक मंचक ऑफिस छल। लगेमे श्री Y.P. Sigh (मान बाबू) जीक घरमे रजिस्टर्ड पता पर। सालमे एक बेर वृहत् दुर्गा पूजा एवम् एकटा होली मिलन। दिल्लीक सभ कोनमे एकर ब्रांच छल आ बिहारसँ आएल सभ प्रवासीकेँ जोड़ैत छल ई संस्था। एक बेर एहि संस्थाके वित्तीय अभाव भऽ गेलैक। ओकर कर्त्ता-धर्त्ता श्री आर.सी. झा जे C.W.C.मे उच्च पद पर छलाह, कहलनि जे चन्दाक इन्तिजाम करी। हम कहलियनि जे किऐक ने सब स्थानीय सदस्य सभ अपनेमे विशेष चन्दा कऽ ली। सएह भेल आ पूजा सम्पन्न भेल। ताही बीच हम एकटा प्रस्ताव देलियनि जे दिल्लीक केन्द्रीय स्तर पर एकटा भव्य कार्यक्रम हो जाहिमे पूर्ण दिल्लीक प्रवासीकेँ जोड़ल जाए। सब गोटे ई कठिन काज बूझि हमरे ई भार दऽ देलनि जे एकर कार्यान्वयन करी।

हम सब एकटा कमिटी बनौलहुँ। वित्त संगठन, पत्रिका आ कार्यक्रमक भार बँटलहुँ सबमे। मंडी हाउसमे स्थित भारतीय कला केन्द्रक श्री राम आर्ट सेण्टरक हॉल चुनलहुँ आ आगाँक क्रिया-कलापमे जुड़ि गेलहुँ। कत्थक नृत्यांगना श्रीमती शोभना नारायण (राज्यसभा)के विद्यापतिक चुनल गीत पर 1.1/2 घण्टाक कथक डांस तैयार केलहुँ। भी.पी. हाउसमे रहैत श्रीमती मृदुला सिन्हा जे बादमे गोवाक राज्यपाल सेहो भेलीह) केँ बिहार लोकमंचसँ जोड़लहुँ एवम् हुनक टीम द्वारा मैथिली आ भोजपुरीक गीतनाद सभक रिहर्सल कराओल। ओकर उद्घाटनमे पूर्व राजनयिक श्री चन्द्रशेखर झा, पू. राजदूत भारत सरकार, मंत्री रामानन्द यादवजी आ कतिपय लोकसेवक सब

छलाह। ई कार्यक्रम बहुत सुन्दर आ आकर्षक रहल। केन्द्रीय स्तर पर प्रवासीक प्रथम प्रस्तुति छल एहि समूहक।

***** ***** *****

1984-89मे राजीव गाँधीक सरकार छल। ओहि बीच बहुतो प्रशासनिक सुधार भेल। सरकारी ऑफिस सबमे कम्प्यूटरक उपयोग शुरू भऽ गेल। ट्रेनिङक लेल अलग व्यवस्था। DOP&T (कार्मिक आ प्रशिक्षण विभाग) द्वारा सब स्तर पर ट्रेनिङक विशेष कार्यक्रम आरम्भ भेल। सरकारी कार्यालय सभक आधुनिकीकरण पर विशेष बल रहय।

19 मइ 1989 कऽ चुनावक बीच चिकमंगलूरू (तमिलनाडू)मे प्रचार करैत काल राजीव गाँधी पर एकटा ह्यूमन बमसँ आघात भेल। हुनक मृत्यु काफी दुःखद छल।

आठम प्रधानमंत्री (2 दिसम्बर, 1989—नवम्बर, 1990) तक बनला श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जे उ.प्र.क राज परिवारसँ छलाह। ओ पहिने वाणिज्य मंत्री छलाह आ ताहिसँ पहिने कपड़ा मंत्री ओ अपन स्वच्छ छविक कारणे प्रतिष्ठित भेलाह। मुदा हुनकर प्रधानमंत्रीत्वक कालमे 'मंडल कमीशन'क वर्चस्व बढ़ि गेल आ आरक्षण देबाक प्रक्रिया तेज भऽ गेल। आरक्षणक विरोधमे दिल्लीमे एकटा छात्र 'गोस्वामी' अपनाके जरा लेलक। मंडल कमीशनक आगिमे दिल्लीक इसकूल आ कओलेज सबमे हड़ताल आ असुरक्षाक वातावरण बढ़ि गेल।

हम स्मिता आ सौरभके सेण्ट मार्क्स स्कूल जनकपुरीसँ हटाए विकासपुरीमे घरक सामने डी.ए.भी. पब्लिक स्कूलमे प्रवेश करा देने रही जाहिसँ लऽगमे रहय। दुनू गोटे अपन-अपन कक्षामे प्रथम रैंक अनैत गेल। ओ सब इसकूलमे नीक अंक आ पोजीसन अनलक। डी.ए.भी. स्कूलमे प्रवेशक लेल गोविन्द सरस्वती (गोविन्द जी) जे म्यूजिक शिक्षक छलाह, हुनक विशेष भूमिका रहल छल।

1984-96 तकक कालखण्डमे चारि प्रधानमंत्री भेलाह भारतमे—राजीव गाँधी (1984-89), वी.पी. सिंह (1989-1990), चन्द्रशेखर (1990-91) आ नरसिंहा राव (1991-96)।

राजीव गाँधी सरल, हँसमुख आ प्रगतिशील विचारक व्यक्ति छलाह। 1984मे इंदिरा गाँधीक मृत्युक बाद पी.एम. बनलाह आ 1989 तक पी.एम. रहलाह। हुनका कालमे बोफोर्स डीलवला रक्षा विभागसँ सम्बन्धित मामला उठाओल गेल जाहिमे तथाकथित भ्रष्टाचारक आरोप लागल छल। एहिमे क्वाट्रोचीक द्वारा कमीशन (घूस) लेबाक आरोप छल। ओ (पी.एम.) संसदमे घोषणा केलनि जे सरकारी रक्षा खरीदमे कोनो एजेण्ट (दलाल/बिचौलिया) नहि राखल जाए। हमर विभाग एकटा प्रशासनिक

आदेश निकाललक जे कोनो सरकारी खरीदमे तेसर पार्टी (बिचौलिया)क भूमिका नहि रहत। पहिने ई आदेश सभ विभागक लेल छल, बादमे व्यावहारिक जटिलताक कारण एकरा मात्र रक्षा विभागक लेल सीमित कऽ देल गेल। हमरा विभागक कतेको प्रस्ताव छल जकर प्रतिस्पर्द्धा तीनू-चारू सरकार द्वारा प्रभावित भेल। मोन अछि जे भारतीय आयुध फैक्ट्री कानपुरक लेल Induction Furnace (प्रेरण भट्टी)क खरीदमे यूरोपक 2-3टा कम्पनीक बीच स्पर्द्धा स्पष्टतः सामने आएल। सरकार आ मंत्री बदलितहि प्रस्ताव संशोधित होमय लागय। हमर विभागीय टीम एकटा ठोस प्रस्ताव बनओलक आ वाणिज्य/पूर्ति मंत्रालयकेँ दैत कहलक जे एहिमे कोनो संशोधनक आवश्यकता नहि। अंतमे उपयुक्त संशोधन नहि पाबि एहि प्रस्तावकेँ पूर्णरूपेँ बन्द कऽ देल गेल। आर्डनेस फैक्ट्रीकेँ पुनः एहि तरहक उपस्कर, भेटैक तकर संभावना कम भऽ गेलैक।

एहिसँ पहिने DRDO लेल GaAs Chipsक टेण्डर आएल जाहिमे मिशूबिसी, जापान अपन प्रस्ताव पठौलक। मात्र 15 दिनमे ओ एकरा आपस लऽ लेलक। हम ओकर दिल्ली कार्यालयकेँ एकर पुनः प्रवर्तनक लेल आग्रह केलहुँ। मुदा ओ नहि मानलक। गप्प-सप्पसँ बुझाएल जे ओकरा यू.एस.ए.क दबाव छलैक जे जापान द्वारा भारतकेँ आधुनिकीकरणक कोनो सामग्री नहि देल जाए, खासकऽ जाहिमे नव टेक्नोलॉजी हो वा जकर पूर्वी यूरोपकेँ निर्यातक संभावना हो। वी.पी. सिंहक (1989-90) प्रधानमंत्रीत्वक बाद समाजवादी जनता दलक चन्द्रशेखर 1990-91क बीच प्रधानमंत्री बनलाह। तकरा बाद चुनाव घोषित भऽ गेल। 21 मइ, 1991 कऽ हमर बालक सौरभ (प्रशान्त)क उपनयन छल। ताहिसँ पहिने गाम गेल रही। ओहि बीच चुनावक कारणें कोनो गाड़ी नहि भेटैत छल। सौरभ, पप्पू, आ पिंकी सब टायर गाड़ी पर वाकेँ (वीणाक सासुर) गेल रहय कोनो परोजनमे आ रस्तामे ओतऽसँ गाम आबि दही-चूड़ा केरा सब खा-पी गेल छल। बाँके उतरलाक बाद सभ प्रसन्न रहय। 21.6. 1991 कऽ सौरभक उपनयन पूर्ण उत्साहक संग सम्पन्न भेल।

19.5.1991मे चुनावक बीच चिकमंगलूरमे राजीव गाँधीक निधनक बाद देशक वातावरण अस्तव्यस्त भऽ गेल। तकरा बाद श्री पी.वी. नरसिंहा राव 1991-96 तक प्रधानमंत्रीक पद ग्रहण कयलनि। हुनका कालमे भारतक अर्थतन्त्रकेँ आर्थिक स्वतंत्रताक विशिष्ट दिशा भेटलैक। 31.3.1991 तक हम डिफेन्स प्रोजेक्ट निदेशालयक जीवनतारा बिल्डिंगमे मोटका-मोटका फाइलक बीच दबल रही। 1.4.1992 कऽ एक आदेशक अन्तर्गत हमरा संग 67 अधिकारीक ट्रान्सफर रेल विभागक विभिन्न कार्यालयमे भऽ गेल। कतेकोक ट्रान्सफर डिफेन्स, स्वास्थ्य आ वित्त विभागमे भऽ गेल। 1.4.1992 कऽ हम रेल मंत्रालयमे योगदान देलहुँ।

दिसम्बर 1989मे हम अपन घर 'विकासपुरी'मे आबि गेल रही, गृह प्रवेश करऽ। ओहि दिन हमर बहुतो मित्र सभ आयल छलाह जाहिमे बिहार लोकमंच, जनकपुरीक सदस्य सभक संग दूरसँ आएल DANICSमे पदस्थापित 'श्यामानन्द' जी एवम् डा. प्रेमनाथ देव संग हुनक पत्नी डा. वीणा सिंह सेहो छलीह। करीब 2 लाख रु.मे नीक घर बनि गेल छल। किरायाक घरसँ छुटकारा भऽ गेल।

ऑफिसक स्तर पर हमर ट्रान्सफर 'विशेष डिफेंस प्रोजेक्ट निदेशालय'मे भऽ गेल छल जकर निदेशक छलाह हमर पूर्व परिचित ना-ना खामितकर। ओ मराठी समुदायक प्रहरी ओ भारतीय पूर्ति सेवाक एक वरिष्ठ अधिकारी छलाह, वाशिंगटन डी.सी. स्थित अमरिकन इम्बेसीमे 3-4 साल रहल छलाह। तकरा पहिले कैक साल ओ वसन्त साठे (मंत्री भारत सरकार)क व्यक्तिगत सचिव छलाह। हिनका संग काज करैक प्रथम अवसर रहय। ओ हमरासँ बहुत अपेक्षा रखैत छलाह। ओतऽ आयुध फैक्ट्री (करीब 41)जे रक्षा मंत्रालयक अन्दर छल, तकर क्रय सेवाक भार छल, संगहि गुप्त प्रोजेक्ट सभक सेहो। उपस्कर सभक खरीद करऽ पड़य। हम सब टीम बनाए बहुतो फैक्ट्रीक भ्रमण कयलहुँ। ओतुक्का प्रोडक्सनमे होइत सभ कमीकेँ बुझलहुँ आ ओकर सुधार करबामे विशिष्ट भूमिका रहल। चालीस आयुध फैक्ट्री भारतवर्षक 24 विभिन्न स्थान पर छल। ओ सब रक्षा मंत्रालयक आयुध फैक्ट्री विभागक अन्दर काज करैत छल।

एकरा अलावे हम सब विभागक लेल बुलेट प्रूफ जैकेट आ उपस्कर सभक क्रय सेहो करी। रेलवे एवम् डिफेंसक लेल फर्नेश ओतहि केन्द्रित छल। एहि क्रममे एक बेर ग्वालियरक लगीच 'टेकनपुर' गेल रही, सरकारी क्रय पर व्याख्यान देबाक लेल। टेकनपुरमे बी.एस.एफ.क पहिला टियर गैस मैन्यूफैक्चरिंग यूनिट छल। एतऽसँ अश्रु गैस आन-आन देशके सेहो निर्यात होइत रहय। बिना आघात केने अश्रु गैस द्वारा भीड़के हटेबाक लेल पुलिस बलक ई पैघ साधन छल। एकर निदेशक छलाह श्री डी.के. आर्या जे आइ.पी.एस. 1956मे केने छलाह। हुनक ऑफिस गेलहुँ जे नाओ जकाँ बनल छल। भोजनक समय हुनकासँ विशेष परिचय भेल जे ओ पुलिस विभागक उच्चतम स्तरक भार ग्रहण केने छलाह। हुनका देखलासँ लागल रहय जे ओ युवा हेताह। ओ कहलनि जे अपन स्वास्थ्य संतुलित करबाक क्रममे ओ ऑफिससँ अपन घर तक 5 किमी. पैदल चलैत छलाह। हुनकर गाड़ी हुनका पाछाँ पाछाँ चलैत छल। ओतऽ पुरस्कारमे जे मोमेण्टो भेटल, से अति प्रभावशील। ओकरा हम ऑफिसमे जमा कऽ देने रही।

***

अध्याय–9

भूमंडलीकरणक बिहाड़ि

एक दिन जखन हम जीवनतारा बिल्डिंगमे कार्यरत रही तखन जनकपुरीसँ कोनो अस्पतालसँ फोन आयल आ समाद भेटल जे हमर पत्नी (अंजीरा) अस्पतालमे भर्ती भेल छथि। ओ स्कूटर परसँ खसि पड़लि छलीह आ माथमे बड्ड चोट छलनि। पेटमे शिशुक पालन करैत ओ बजारक काजसँ हमर जमाए ठाकुरजीक संग जनकपुरी गेल छलीह। ओतहि एक्सीडेण्ट भऽ गेलनि। माथि फाटि गेल छलनि। हम जीवनतारा बिल्डिंगसँ बहार भऽ बसक इन्तजार नहि कयलहुँ आ एकटा स्वचालित रिक्शा पकड़ि 21 कि.मी. दूर जनकपुरीक ओहि अस्पताल पहुँचलहुँ जतऽसँ फोन आएल छल। ओतऽ पता चलल जे हुनका पट्टी बान्हि विकासपुरीक घरक लग एक मैटरनिटी क्लीनिकमे पठा देल गेल छल। ओ क्लीनिक छल हमर एक मित्र के.के. गुप्ताक पत्नी डा. सन्तोष गुप्ताक घर (सी-490) विकासपुरीमे। हुनक बेटा-बेटी सभ हमरा जनैत रहय तेँ प्रायः ठाकुरजी ओहि क्लीनिकमे जाए भर्ती कराए देने रहथिन। सी. टी. स्कैनक रिपोर्टक अनुसार माथकेँ कोनो व्यवधान नहि भेल छलनि। तेँ सामान्य उपचार एवम् माए-बच्चाक विशेष उपचार शुरू भऽ गेल। तीन-चारि दिनमे हुनका हम अपन घर 28सी एवरसाइन एपार्टमेण्ट, विकासपुरी आनि लेलियनि।

एक दिन हमरा सोसाइटीमे बच्चा सभक एक कार्यक्रम छल। सौरभके बोखार रहैक तेँ बाहर जयबासँ मना कऽ देने छलियैक। रातिमे ओ 11 बजे बाद बालकोनीसँ नीचा ताकऽ लागल आ जोड़सँ बाजल जे “हमहूँ जाएब नीचा आ नाटकमे पार्ट लेब”। ओकर बोखार देखि ओकरा बहुत बुझेलहुँ आ कोनहुना ठोकि-ठाकि कऽ सुतओलहुँ। तकरा बाद ओ कहियो नीचा जयबाक नाम नहि लेलक।

एक बेर जखन सौरभ माएके तंग करऽ लगलैक, तँ अंजीरा कहलथि जे “तोरा छोड़ि हम दोसर ठाम चलि जाएब”।

–कतऽ जएबें, ककरा लग?

–हमर एकटा बेटा बंगलोरमे रहैत अछि, ओतऽ इंजीनियरिंग पढ़ैये।

–ओकर नाम की छै?

–"सागर" माएक मुँहसँ निकललैक। एक काल्पनिक नाम जे अकस्मात् निकलल छलनि।

किछु दिनक बाद अंजीरा डा. संतोष गुप्ताक क्लीनिकमे भर्ती भऽ गेल छली। हमर भातिज 'भगवान बाबू' ओतऽ ताक-छेम करैक। 26.6.1992 कऽ हम साँझ 7.30 बजे स्नान करऽ गेल रही। स्नान गृहमे झरैत रहय झरनाक पानि। गर्मीक दिनमे साँझक स्नान, बड्ड नीक लगैत रहय। ताबते ड्राइंग रूममे फोन पर घण्टी बाजल। डा. गुप्ताक क्लिनिकसँ भगवान बाबूक फोन आएल।–"सागर, आबि गेल।"

हमर स्नान आधा पर छल। पुनः पूर्ण स्नानमे डूबि गेलहुँ। झरनाक शीतल फोहार आ बालकक जन्मक समाचार सुनि मोन विभोर भऽ गेल छल। शीघ्रे तैयार भऽ चलि गेल रही–डा. गुप्ताक क्लीनिकमे नव शिशुक स्वागत लेल। ''सागर'' ओकर घरक नाम भेल। हम नाम देलियैक 'निशान्त', सब दुखक अन्त।

हमर तेसर संतान माएक पेटमे छल जखन हमर ट्रान्सफर रेलवे बोर्डमे भेल रहय। भारतीय अर्थतंत्रक परिवर्तन जे भूमण्डलीकरण बिहाड़िमे टूटि रहल छल, तकर साक्षात् द्रष्टा छलहुँ। भारत सरकार तीव्र गतिसँ बढ़ैत विदेशी मुद्राक संकटसँ जूझि रहल छल। आयात करक लेल मात्र 2-3 दिनक विदेशी मुद्रा रहैक। रक्षामंत्रालयक सामग्री आयात करैक लेल एक करोड़सँ बेसी मुद्राक लेल हमरा सबकेँ सीधे आर.बी.आइ.क ऑफिस जाए पड़ल, कारण एस.बी.आइ.केँ एतेक शक्ति नहि देल गेल रहैक जे ओ पहिने जकाँ FE (विदेशी मुद्रा) रिलीज कऽ सकय।

सागरक जन्मक समय हमर पदस्थापन रेल भवनमे छल। विकासपुरीमे अपन फ्लैट आ विशेषरूपेँ एम.टी.एन.एल.क सी.एम.डी. द्वारा एलॉट कैल फोन-5550002 भेटल। घरमे कोनो कमी नहि–फ्रिज, टी.भी., कूलर, यात्राक लेल रेलवेक फ्री पास (2 एसीक)। सागर के कहियो स्लीपर क्लासमे चढ़बाक मौका नहि भेटलैक। स्मिता आ सौरभ सब सेहो सेहन्तासँ कहय जे खुलल खिड़कीवला क्लास (स्लीपर)मे चलब गाम। 1992क बाद हम परिवार सहित 2एसी/ सफर करी कारण ओ सुलभ छल रेलवेक यात्रा पास दुआरे।

श्री पी.वी. नरसिन्हा रावक प्रधानमंत्रित्व कालमे पी. चिदम्बरम छलाह वाणिज्य मंत्री आ श्री मनमोहन सिंह भेलाह वित्त मंत्री। भारतक आर्थिक नीतिकेँ पूर्णरूपेण बदलल गेल। लाइसेन्स राजकेँ खतम करबाक प्रक्रियामे सबसँ पहिने औटोमोबाइलकेँ

स्वतंत्र कैल गेल। सरकारी सेवामे लागल 'एम्बेसेडर' गाड़ी जे हिन्दुस्तान मोटरक उत्तरपारामे फैक्ट्रीमे बनैत रहय तकर 5000 संख्या सरकारी मदमे पूरा भारत वर्षमे लगैत छल। एकरा अलावे जेनरल मोटर, हुण्डइ, प्रीमियर ऑटोमोबाइल लि. (PAL) इत्यादि कतेको कम्पनी आबि गेल। गाड़ीक विनिमयमे अभूतपूर्व बढ़ाओ भेल। सरकारी उपयोग लेल एम्बेसेडरक अलावे फियट (NE-113) एवम् मारुति बढ़ऽ लागल।

आनो-आन क्षेत्रमे निर्माण बढ़ऽ लागल जेना फार्मा, FMCG, कैपिटल सामग्री आ IT सेवामे सभसँ बेशी वृद्धि भेल। आइ.टी. सेक्टरमे हार्डवेयर आ सौफ्टवेयर दुनू क्षेत्रमे देशक छोट-पैघ शहरमे ट्रेनिङ संस्थान खूजि गेल–एन.आइ.आइ.टी, APTECH आ DOEक संस्थान सब।

इंजीनियरिंगक डिग्रीक बाद छात्र सभ विदेश जाए लागल। किछु पढ़ैक लेल तँ किछु नौकरीक लेल।

भारतक आर्थिक उदारनीति 1991सँ पूरा परिदृश्य बदलि देलक। भारतक रुपयाक अवमूल्यन कएल गेल 1 जुलाइ, 1991मे, उद्योगकेँ लाइसेन्ससँ मुक्ति भेटल। आयात सब OGL (ओपेन जेनरल लाइसेंस)क अन्तर्गत होअए लागल। लाइसेन्सक भूमिका खत्म भऽ गेल। DGTD, JCCI, DOE, आ CCI सभ बन्द भऽ गेल। एकरा संक्षेपमे हम सभ एल.पी.जी. कही–लिबरलाइजेशन, प्राइवेटाइजेशन आ ग्लोबलाइजेसन। नव-नव श्रमक दाम बढ़ैत गेल। जकरा 10,000 रुपयाक नौकरी रहैक तकर तनख्वाह 1 लाख तक बढ़ि गेलैक। मुदा गुणात्मक बदलाव नहि भेलैक। शेयर बाजारक लेल SEBIक स्थापना भेल। ओकर मूल्यमे तूफान आबि गेलैक। ताही बीच 'हर्षद मेहता' काण्ड भेल जाहिमे ओकर बुलबुल्ला फूटि गेलैक।

***

अध्याय–10

भारतीय रेलवेक सेवा-यात्रा

भारत सरकार कैबिनेट स्तर पर निर्णय लेलक जे सरकारी क्रय प्रक्रियाक विकेन्द्रीकरण कैल जाए। भारतीय पूर्त्ति-सेवाक अधिकारी सभक ट्रान्सफर अलग-अलग विभागमे कैल जाए। ओहि नीतिक अन्तर्गत हमर ट्रान्सफर रेल मंत्रालयमे भऽ गेल। हमर पदस्थापना 'उपनिदेशक' पद पर रेलवे बोर्डमे भेल। पूर्ति आ निपटान महानिदेशालय (DGS&D)क पेट्रोलियम ऑयल आ लुब्रिकेण्टक काज सहित कपड़ाक खरीदकेँ रेलवे बोर्डमे केन्द्रीकृत कएल गेल। बाकी मद सबकेँ विकेन्द्रित कयल गेल। हमरहि ब्रांचमे सिग्नलींग आ टेलीकोम केबुल के सेहो क्रयक लेल केन्द्रित कयल गेल। हमर कार्य दू ठाम भऽ गेल। भोरक समय रेल भवनमे आ दुपहरक बाद 'जीवनतारा' बिल्डिंगमे जतऽ RLO (रेलवे सम्पर्कक ऑफिस) छल। हमरा रेल विभागक भण्डार सम्बन्धी समस्याक नियमन, कोर्डिनेशन (समन्वय) आन-आन विभागक संग सेहो करऽ पड़य जेना–एम.एस.एम.इ. विभाग, वित्त विभाग, वाणिज्यक पूर्ति विभाग, वन एवम् पर्यावरण विभाग। रेलवे विभागक व्यापार प्रतिबन्ध (Bannigs of Busness) हमरे कार्यक्षेत्रमे रहय। एहि विषयक वित्तीय शक्ति जोनल रेलवेकेँ नहि देल गेल। ई विषय रेल मंत्रालयमे केन्द्रित छल।

रेल सेवाक बीच एक बेर दिल्ली दूरदर्शन (प्रसार भारती)क लेल 'अतीत के स्वर' शीर्षकक डॉक्यूमेण्ट्री बनल। श्रीसुभाष तिवारीजीक अनुज प्रशान्त तिवारीक आग्रह पर ओकर आलेख हमहीँ लिखलहुँ, हुनका लेल। विषय छल जे 500 साल पूर्वसँ एखन धरि पूर्वांचल (खास कऽ मिथिलामे) महाकवि विद्यापतिक गीत कोना जीवन्त अछि। एहि फिल्ममे मिथिलाक बिस्फी, भवानीपुर आ विद्यापतिनगरक संग कतिपय स्थानक वर्णन छल। देखाएल गेल छल जे कोना एतेक दिन धरि विद्यापतिक गीत ओहि समाजके जोड़ने रहल आ एखनहुँ ओकर प्रासंगिकता छैक।

पहिने रेल विभागक अन्य नौ टा जोन छल जे बढ़ि कऽ 1997 तक 16टा जोन बनि गेल। 'हाजीपुर'मे इ.सी.आर. (पू.म.रेलवे)क ऑफिस खूजल जकर औपचारिक आरम्भ अक्टूबर 2002मे भेल।

हमर सेवा (भारतीय पूर्ति सेवा)कैँ रेल मंत्रालयक भारतीय रेल भंडार सेवामे मिला देल गेल। हमर पदस्थापना भेल कलकत्ता जतऽ पू. रेलवेक मुख्यालय छल। ओतऽ बेशी अधिकारी बंगालसँ छलाह जिनका बिहार स्थित जमालपुर कारखाना जाइत असहज लागनि। तेँ हमर पदस्थापना जमालपुर कारखानामे कऽ देल गेल आ हम उप मुख्य भंडार नियंत्रकक पदकेँ ग्रहण कयलहुँ 02.02.2002 दिन।

रेल भवन आ जीवनतारा भवनक सामंजस्य

1997-2000क अन्तराल अभूतपूर्व रहल। रेलवे मंत्रालयमे हमर सेवा दू ठाम बँटल छल। एकटा 'रेल भवन'मे जाहिमे भंडार विभागक नीतिगत विषय विवेच्य छल। आ दोसर छल जीवनतारा बिल्डिंग स्थित पूर्त्ति आ निपटान महानिदेशालयक वाणिज्य विभागक। ओतुक्का काज छल DGS&Dसँ समन्वय एवम् विभिन्न विभागक संग भंडार विषयक क्रियाकलापक संयोजन। हमरा प्रोक्योरमेण्ट विषयक प्रत्यक्ष जवाबदेही नहि देल गेल, कारण रेल राजनीतिमे पड़ल पुरान लोकनिक प्रभाव ओहिमे बेशी छल। तथापि हम अपन क्रियाकलापसँ विभिन्न मंत्रालय, वाणिज्य, वित्त, पर्यावरण इत्यादिसँ तालमेल केने रही। एही बीच पूर्त्ति विभागमे SSI (लघु उद्योग)क लेल आरक्षित मद (401) क पुनर्मूल्यांकन भेल जाहिमे श्री बन्दोपाध्याय (पूर्ति सचिव) एवम् श्री बीजी वर्गीज (लघु उद्योग सचिव) छलाह। ओ वृहत् समिति छल जाहिमे बहुतो विभागक सचिव इत्यादिक प्रतिनिधि सभ छलाह। ओहिमे हम रेल विभागक प्रतिनिधित्व केलहुँ। जेँ लऽ कऽ हमरा DGS&D कार्यक अनुभव नीक छल तेँ हमर अवदान नीक रहल। सरकारी खरीद लेल आरक्षित मद 401केँ कम करैत 350 कएल गेल। हमर अनुशंसा छल जे ओहि मद सबके स्पष्ट आ निबंधित तकनीकी विवरण (Specification)सँ जोड़ि देल जाए। सामान्य नामसँ बनल सूचीसँ व्यवहारमे खरीदक काज करैवला के बड़ दिक्कत होइक। बादमे एहि सूचीमे 8टा हस्तशिल्प मद सेहो जोड़ि देल गेल। एहि आरक्षित 358 मदक अलावे दोसर-दोसर मदक खरीदमे एम.एस.इ.क दरमे प्राथमिकता मूल्य (15%) भेटैत छलैक। एहिमे छोट उद्योग कैँ बहुत प्रोत्साहन भेटलैक।

एक बेर सीमेण्ट आपूर्तिमे बाधा आबि गेल। DGS&D द्वारा नियोजित दर संहिता केन्द्रित छल। वैगनक कमी छल, तैँ सरकारी प्रोजेक्ट सबकेँ पूर्तिमे कमी

होमऽ लागल। रेलवेक अलावे आनो प्रोजेक्टके सीमेण्ट पूर्तिमे दिक्कत होअऽ लगलै। सिमेण्ट पूर्त्ति करैवला कम्पनी सब कार्टेल बना लेलक। जून-जुलाइमे ओ सरकारी विभागके दैक लेल तैयार होइत छल जखन वर्षाक कारण प्राइवेट प्रोजेक्ट रुकि जाइत छल। जून-जुलाइक अलावे ओ सब सरकारी विभागकेँ सिमेण्ट आपूर्त्तिमे रोक लगबैत छल। बहाना छलैक वैगन के अभाव। टिहरी डैम हाइड्रो प्रोजेक्टमे सिमेण्टक संकट दूर करबाक लेल उच्चस्तरीय अधिकारी सभ हमरा भेट कयलनि। बहुत प्रोजेक्टमे एहने दिक्कत भेल। यद्यपि हमर ई प्रत्यक्ष कार्य नहि छल, मुदा संकट के देखैत हम एकटा अन्तर्विभागीय सभा आयोजन कयलहुँ जाहिमे DGS&D, रेलवे आ PSUक अधिकारी सभ उपस्थित भेलाह। हमर विचार रहय जे सब विभाग अपन प्रोजेक्टक आकलन करय आ वैगनक कमीक समाधान ताकए। ओहिमे जवाबदेही हमरे दऽ देल गेल जे रेलवे मंडल सबसँ बात कऽ वैगनक इन्तिजाम करी। जखन कोनो विभागकेँ सिमेण्टक लेल बैगनक दिक्कत होइक तँ, हमरे ओकर समाधान निकालऽ पड़य। एहिमे हमर आर.एल.ओ. ब्रांचक महत्व बड़ बढ़ि गेल।

1997मे 6 जून कऽ (IRLMM)क स्थापना भेल। ओहिसँ पूर्व श्री के.पी. वर्मा, रेल भंडारक सलाहकार बनि गेल छलाह। ओ पूर्त्ति विभागमे रहल छलाह। पहिनहिसँ हमरा परिचय छल। हुनक पत्नी किरण वर्मा बड्ड नीक गायिका रहथि–भोजपुरी आ मैथिलीमे। वर्माजी हमरा बड़ मानैत छलाह। हुनकासँ गप्प करैत हम सुझाओ देने रहियनि जे एकटा संस्थान एहन हो जे भंडार पूर्त्तिक सभ परिधीय विचार पर विमर्श करए। ओ अपन प्रभावें Indian Railway Institute of Logistic & Material Managementक स्थापना करओलनि जाहिसँ रेलवेमे असरकारी संस्था बनए। एकर स्थापना दिवस पर (6.6.1997) प्रधानमंत्री श्री गुजराल उद्घाटन कयलनि। रेलमंत्री रामविलास पासवान छलाह। ओहि अवसर पर श्री वेदप्रकाश गोयल (एम. पी. राज्यसभा) आ अन्य विशिष्ट व्यक्ति सभक आतिथ्यक जिम्मेदारी हमरे भेटल।

ओहि समय हमर छोट बालक निशांत (सागर) बच्चा छल–बहुत नटखट आ गप्पी। डी.पी.एस. वसन्त बिहारमे ओकर प्रवेशक लेल आवेदन देलहुँ। साक्षात्कारमे मुँहफट्ट भऽ जवाब दैत रहल। ओकर प्रवेश ओतऽ भऽ गेलैक–ओना हमरा घर (विकासपुरी)सँ करीब 30 किमी. दूर रहय। भोरे बसमे चढ़ा दी आ साँझमे उतारि ली। अंजीराकेँ बड्ड दिक्कत होइनि। बादमे ओकर ट्रान्सफर डी.पी.एस. द्वारका भऽ गेल, जे हमरा घरसँ 12 किमी. मात्र छल। स्मिता आ सौरभ डी.ए.भी. स्कूलक दसमा, बारहमाँ वर्गमे छल जखन हमर ट्रान्सफर कलकत्ता कऽ देल गेल।

पू.रे. जमालपुरक लोको कारखानामे प्रतिष्ठापन

दिसंबर 1999मे हमर स्थानान्तरण रेलवे बोर्डसँ कलकत्ता (पू.रे.) कऽ देल गेल। कलकत्ता जाए श्री सुमित पाल, सी.ओ.एस.सँ भेट कयलहुँ। ओ भंडार विभागक श्रेष्ठतम व्यक्ति छलाह। हुनकासँ हमर पूर्व परिचय छल कारण ओ यदा-कदा रेलवे बोर्ड अबैत रहथि। हुनक व्यक्तित्व बड़ नीक। सौम्यता आ सद्भावसँ पूर्ण छलाह। ओ कहलनि जे 'कलकत्ता'मे कोनो जगह नहि अछि जे अहाँ के राखल जाए। जमालपुर कारखानामे भंडारक हेड, शाखा प्रबंधकक पद खाली अछि आ कलकत्तामे स्थापित कोनो अधिकारी ओतऽ नहि जाए चाहैत छथि। तेँ हमर पदस्थापन जमालपुर कऽ देल गेल।

हम हावड़ा स्टेशनसँ राति 9 बजे खूजयवला 'जमालपुर एक्सप्रेस' पकड़लहुँ आ भोरे-भोर पहुँचि गेलहुँ जमालपुर। पहिले पहिल गेल रही जमालपुर। मुंगेर ओतऽसँ लगीचे छल। रेलवे स्टेशन पर हमरा रिसीव करैक लेल आएल छलाह ओहि कारखानाक डी.सी.ओ.एस. संजय कुमार एवम् ए.सी.ओ.एस., कन्हैया कुमार दुनू क्लास वन अधिकारी, संगहि किछु स्टाफ सब। जीप पर बैसाय हमरा लऽ गेलाह एकटा अधिकारी निवास जतऽ हमरा ठहरैक बन्दोवस्त छल। 2.02.2000 दिन हम जमालपुर कारखानाक उप भंडार नियंत्रक पद पर आसीन भेलहुँ। हमरासँ पूर्व जे डी. के. सिन्हा कार्यरत छलाह, ओ कार्यभार छोड़ि कलकत्ता चलि गेलाह।

तीन चारि दिन हम अस्थाइ रूपेँ ओहि अधिकारी आवासमे रही, कारण 'यांत्रिक निवास' जे आधिकारिक रूपेँ हमरा भेटबाक छल से खाली नहि रहय। रातिमे ओहि आवासमे बिजली गुल भऽ गेल। अन्हार गुज्ज रातिआ नव जगहक अनुभव। भेल जे कोन पापक फल भेटल। ताही बीच किछु गोटे सङोर केने हमरा भेट करऽ आएल छलाह। ओ सब अपन परिचय देलनि जे सब केओ भंडार विभागमे कार्यरत छथि एवम् बिहारक मिथिलांचलक रहऽवला छथि। ओहिमे एकटा सम्भ्रान्त 'दासजी' मैथिलीमे सेहो बाजऽ लगलाह। हमरा बुझायल जे केओ अप्पन आदमी भेटि गेल छथि। ओ सब हमरा लेल' इजोतक इन्तिजाम कैलनि आ रातुक भोजनक सेहो। दू दिन बाद हमरा 'यांत्रिक निवास'मे एकटा कमरा भेटि गेल जतऽ खाइ-पिबैक पूरा इन्तिजाम छल।

पू.रे.क जमालपुर कारखाना 1866मे स्थापित भेल रहय जतऽ वाष्प चालित Loco Engine बनैत छल। ब्रिटिश राजक देन ई कारखाना विशिष्ट छल जतऽ करीब 10,000 लोक काज करैत छल। भाफ इंजिनक रेल पुरान आ अप्रचलित भऽ गेल छल। हमर जखन पदस्थापन भेल तखन वैगनक रखरखाव आ 140 टन क्रेनक

विनिर्माण होइत छल। कारखानाक परिसरमे करीब 19टा कार्यशाला छल।

हमरा जाहि चेम्बरमे बैसाओल गेल तकर ऊपरमे अंग्रेज अधिकारी सभक नाम छल जे पहिने ओहि पद पर कार्यरत छला। एतहिसँ पू.रे.क विभिन्न कारखानाक प्रशासन संचालित होइत छल, जेना—बाभन गाछी, मालदह एवम् साहेबगंज इत्यादिक। रेल मंत्रालयक शीर्ष कार्यालय 'रेलवे बोर्ड'सँ सीधे कारखाना स्तर पर 'जमालपुर रेलवे वर्कर'क पदस्थापन विशिष्ट अनुभव देलक। सामान्यतः कारखानासँ प्रोन्नति करैत अधिकारी सब रेल भवन तक पहुँचैत छल। मुदा हमरा लागल तेँ हम रेलवेक पैघ आयामकेँ देखि आएल छी जे एतऽ निर्णय लेबऽ मे कोनो स्तर पर दिक्कत नहि होएत। ओहि समय ओहि कारखानाक सी.डब्लू.एम. छलाह श्री ए.के. जैन। ओ हमरासँ बड़ प्रभावित भेलाह। ओना हुनकर दहशत तेहन छल जे कारखानामे जे चाहथि से करवा लेथि। मुदा ओ हमरा कहियो दबाव नहि देलनि। हम निफिक्र भऽ स्वतंत्र रूपेँ कार्य कैलहुँ। बादमे श्री ए.के. सिंह एलाह सी.डब्लू.एम. बनि। हुनकासँ विशेष स्नेह भऽ गेल।

भोरे उठि (पाँच बजे) हम सब काली पहाड़ी घूमऽ जाइ। आपस आबि हुनकर डेरा पर चाह पीबि, तखन अपना निवास आबी। 8 बजे चलि जाइ कारखाना घूमय। करीब 4-5 किमी.क परिसर। सभ कार्यशालाक आकलन कऽ ली। बादमे करीब 9 बजे अपना चेम्बरमे आबि जाइ आ कागजी कार्रवाइ शुरू भऽ जाए।

ओहि कारखानामे बिहारक सामाजिक वातावरणक प्रभावेँ अगुआ-पछुआक विशेष अलगाओ छलैक। हमरा लेल सब धन्न सन। हम सबकेँ निष्पक्ष भावसँ देखी। श्रमिक संघ पर सेहो ओकर छाप रहैक। लेबरकेँ जरूरति रहैक सेफ्टी उपस्करक, प्राथमिक उपचार आ नीक व्यवहारक, से हम यूनियनक कहबासँ पहिने पूरा कऽ दियैक, तेँ यूनियनक ज्यादे भूमिका नहि रहलैक। बादमे सब हमरा अपने जकाँ मानय।

हमरा अधिकारी वर्गसँ सलाह आबय जे श्रमिक सभक संग ज्यादे मेल नहि करू। ओना जमालपुर (आइ.आर.एम.इ.)मे पढ़ाओल जाइत रहय जे अधिकारीकेँ नीचाँ मुँह केने चलक चाही आ कोनो निम्न स्तरीय लोकसँ आँखि नहि मिलाबयक चाही। हमरा ई अनसोहाँत लागय। हमरा बुझने आदमी कोनो स्तरक हो, ओकर गुण देखबाक चाही। ओकरासँ गप्प करैमे कोनो हर्जा नहि।

किछु दिनक बाद हमरा एकटा रेलवे बांगला भेटि गेल जाहिमे आम आ कटहरक गाछ सेहो छल। आगाँ मैदानमे दूभि छल। माली सब ओकरा सजा देअए। बांगलामे 5टा कमरा छल। बेड रूमसँ बाथ रूम तक विशेष दूरी। रातिमे पूरा घर बिजली बारि सूती। ओना दूटा स्टाफकेँ सेहो ओतहि जगह देलहुँ, जे भानस बनाबय। हमर परिवार

(बच्चा सहित) दिल्लीमे छल। तेँ महीना दू महीना पर दिल्ली जाए भेट कऽ अबियैक।

जमालपुरसँ मुंगेर कनिँए दूर छल। हम कारखानाक किछु गोटे संग चलि जाइत रही कहियो-कहियो। ओतऽ हमर स्टाफ भोला भगतजीक घर छल आ हुनका सबसँ हेम-छेम छलनि। हुनकहि द्वारा श्रीनिरंजनानन्द सरस्वतीजीसँ भेट भेल। बादमे ओ हमरा संगे कय बेरि दिल्ली-जमालपुरक यात्रा कयलनि। भोलाजीक संगे हम स्वामी सत्यानन्द सरस्वती (निरंजनानन्द गुरु आ बी.एस.वाइ.क संस्थापक)सँ भेट करैक लेल गेल रही रिखिया–ई देवघरसँ 7 किमी. दूर छल। हुनक प्रवचन आ सिद्ध शक्तिसँ बहुत अनुगृहीत भेल रही।

एक बेर हमर जेठ बालक प्रशान्त (सौरभ) दिल्लीसँ जमालपुर आयल छल। ओकरा समय बिताबक लेल आइ.आर.एम.इ.इ. लाइब्रेरीमे पठा देलहुँ आ हम कारखाना चलि गेलहुँ। जखन लाइब्रेरी बन्द भऽ गेल आ ओ नहि आएल तँ ओकर ताका-हेरी शुरू भऽ गेल। हल्ला भऽ गेल जे ओकरा केओ अपहरण कऽ लेलकैक। सौंसे जमालपुर ताकल गेल। लाइब्रेरियनके बजाए पुस्तकालयमे ताकल गेल, जतऽ ओ एकटा टेबुल पर कोनो किताबमे मग्न छल।

जमालपुरक जीवनमे ढलि गेल रही। शनि-रवि दिन आइ.टी.सी., मुंगेरक अधिकारी आ बिहार सरकारक पुलिस आ प्रशासनिक अधिकारी सब आबथि आ जमालपुरक गोल्फ खेलक आनन्द लेथि। शनि दिन कऽ क्लब डे होइत छल। गीत-नाद आ चुटकुला, हँसीसँ भरल सांस्कृतिक वातावरण।

यांत्रिक निवासमे हमरा कमरामे एस.टी.डी. फोन छल। ओतऽसँ दिल्ली बात भऽ जाइत रहय। हमर नामक एकटा पुलिस अधिकारी (के. चौधरी) कृष्णा चौधरी (IPS) ओतऽ डी.आइ.जी. छलाह। एक दिन हुनका लेल 'हमर फोन पर' कॉल आएल पटनासँ। "हम जगन्नाथ मिश्र, सी.एम., बिहार बजै छी"। हम कहलियनि जे हमरे नामक पुलिस अधिकारी कनिञे दूर पर छथि। हुनक फोन नं. दऽ देलियनि। श्री कृष्णा चौधरी, डी.अइ.जी. जमालपुर कारखानाक एक बंगलामे रहैत छलाह जे उ.पु.म. नियंत्रक नामित बंगला छल। हम असगरे रही ते ओहि बंगलाक लेल प्रयास नहि कयल।

एक बेर पूर्व रेलवेक मुख्यालय कलकत्तासँ आदेश आएल जे जमालपुर कारखानामे एक नव प्रयास होइक। पहिने सामग्री निष्पादनक लेल निलामी निलामीकर्ता (Auctioneer) द्वारा होइत रहय जाहिसँ रेलवे के बहुत वित्तीय क्षति बुझेलैक। हमरा दायित्व देल गेल जे बिना निलामकर्त्ताके सहायतासँ रेल कर्मचारी द्वारा स्वयं नीलामी कराबी। पूर्व रेलवेक सब मंडलक स्क्रैप सामग्री निपटान करक छल। एहिमे जमालपुर, लिलुआ, हालीशर, हाबड़ा, सियालकोट, आसनसोल आ मालदह सब इलाकाक स्क्रैपक

निपटान शामिल छल। स्थानीय नीलामकर्ता सब सेहो एकरा फेल करक प्रयासमे लागल रहय कारण ई ओकर व्यापार रहैक। बड़ चुनौतीपूर्ण कार्य छल इ। हम कृष्णा चौधरी जीके कहलियनि, "अहाँ कारखानाक बाहरी नगरक सुरक्षा सम्हारि लियऽ। कारखानाक अन्दरमे हम आर.पी.एफ. के लगाय सब सम्हारि लेब।"

निलामीक दिन दूर-दूरसँ आएल व्यापारी सबकिँ हमर टीम बड़का हॉलमे बैसओलक। सभक लेल अपन-अपन सीट पर 2टा लड्डू आ दूटा समोसाक संग चाहक इन्तिजाम छल। सब प्रसन्न भऽ गेल। आर.पी.एफ.केँ इशारा कऽ देने रही जे केओ 'बोली' (BIDDING) क बीच अपन सीटसँ नहि उठय, जाहिसँ कार्टेल बनि जाए। कलकत्ता, मोगलसराय, दानापुर, समस्तीपुरक अलावे दिल्लीसँ व्यापारी सब आएल छल। पूरा जमालपुरमे एकटा उत्सवक माहौल छलैक।

'बोली' शुरू भेलाक 2 घण्टा तक सब शान्त रहय कारण ककरोसँ ककरो बाते नहि होइक। 2 घण्टाक बाद जखन लोकप्रिय सामग्री सभक बोली लागय लागल, तँ प्रतिस्पर्धाक बोली शुरू भेल। लागल जे कार्टेल टूटि गेल। अगिला दू घण्टामे रिकर्ड बोली लागल। साल भरिक सर्वश्रेष्ठ वित्तीय उपलब्धि छल। तकरा बाद पूरा इ.आर. मे बिना निलामीकर्ताक बोली लागय लागल।

सेवा मध्य प्रशिक्षण

एक दिन हमर शुभचिन्तक अनिल जौहरी अयलाह आ कहलनि जे अहाँक नाम रेलवे द्वारा IIPAक APPA ट्रेनिङक लेल नामित भेल अछि। हमरा कोनो खबरि नहि। औपचारिक पत्र बादमे आएल। तावत ट्रेनिङ शुरू भऽ गेल। पत्र पवितहि हम पू. रे. कलकत्ताक मुख्यालयसँ आदेश लऽ जमालपुर कारखानाक कार्य-भार छोड़ि दिल्ली पहुँचि गेलहुँ। ओतए जाए आइ.आइ.पी.ए. न्यू दिल्लीमे ट्रेनिङ आरम्भ कयल।

(APPA) एकटा विशिष्ट ट्रेनिङ छल जाहिमे निदेशकसँ ऊपर ज्वाइण्ट सचिव आ अवर सचिव स्तरक अधिकारीक 9 मासक प्रशिक्षणक व्यवस्था छल। सरकारी नीति सभक पूर्ण प्रशिक्षण जे अर्थनीति, राजनीति आ पर्यावरणसँ सम्बन्धित छल। ओना एकर देखा-देखी आन कैक टा संस्थान IIM बंगलोर, TERI आ प्राइवेट प्रबन्धन संस्थान सभ एहने कार्यक्रम शुरू कयलक। हमरा संगे छलाह विभिन्न सरकारी सेवाक अधिकारी सभ आइ.ए.एस., IPS आइ.आर.एस., आइ.इ.एस. एवम् रेलवे आ रक्षा सेवाक अधिकारी सब। एकटा आनन्दपूर्ण बहुमुखी वातावरण भेटल।

एकर विशिष्ट सत्र छल यूरोप यात्रा जतऽ प्रन्द्रह दिनक कार्यक्रम छल ENA, Paris (फ्रांस)मे आ EU (यूरोपियन यूनियन)क मुख्यालय ब्रुसेल्स (बेजियमक

राजधानी)मे जे कनिञे दिन पहिने बनल छल। फ्रांसक राष्ट्रपति, (Charles de gaulle) चार्ल्स द' गौले द्वारा ENA राष्ट्रीय प्रशासनिक विद्यालयक स्थापना 1945मे भेल रहय जतऽ फ्रांसक वरिष्ठ ब्यूरोक्रेट आ मंत्री सभकेँ प्रशासनिक प्रशिक्षण देल जाइत रहल छल। एहि ENAक संग भारत सरकारक कार्मिक विभाग द्वारा संचालित आइ.आइ.पी.ए. (Indian Institute of public Admistration जे स्व. जवाहर लाल नेहरूजी द्वारा फोर्ड फाउन्डेशनक सहायतासँ बनल छल, तकरा संग एम.ओ.यू. भेल छल। दुनू संस्थान एक तरहक विचारधारासँ संचालित छल। प्रशासनिक विषय सभक पढ़ाइ, जाहिमे नीति निर्माण पर जोड़ छल, सभ वर्गक सरकारी अधिकारीकेँ प्रशिक्षण देल जाइत छल। हमरा सभक 35 गोटेक समूह छल विभिन्न विभागक वरिष्ठ अधिकारी लेकनिक जे विशेष प्रशिक्षण लेल गेल रहथि। हमरा सभ (Eiffel) टावर लग एकटा होटलमे ठहरल रही। संगहि नाम आ पताक कागज पत्तर जेबीमे राखी कारण ओतऽ लोक फ्रेंच भाषाक अलावे दोसर भाषा नहि बाजय। पहिल दिन साँझमे होटलसँ बहार भेल हमर सभक एकटा संगी, सुनील वाजपेयी, एफिल टावरसँ घुरैत काल भोतिया गेलाह। 12 बजे रातिक बाद हुनका ओतुक्का पुलिस ताकि कऽ होटल अनलक। सब गोटेकेँ अपन-अपन कमरा देल गेल जे पूर्णतः सुसज्जित छल। फ्रिजमे दूध, जूस, ठंढा पेय इत्यादि भरल छल। पानिसँ सस्ता दूध छल। एकटा सहकर्मी श्रीविनोद अग्रवालजी। रेलवेक मुख्य अभियंता संगमे छलाह ओ भोजनमे सेहो दूध पीबि रहि जाइत छलाह जाहिसँ प्रतिदिन 200 डालरक पॉकेट खर्च बचा सकथि।

फ्रांसक पूरा भ्रमण भऽ गेल। पेरिसक चार्ल्स ड' गौले हवाइ अड्डा पर हमरा सभक एक दिन परिभ्रमण भेल जाहिमे ओतुक्का नगरक रेल सेवा, वायु सेवा आ रोड यात्रा सभक प्रणाली बताओल गेल। ओतऽ तीनू तरहक ट ेवेल एकीकृत छल। एकटा टिकट लियऽ आ सभ सवारी गाड़ीक यात्रा कऽ लियऽ। कहल जाइछ जे पेरिसक ट्रान्सपोर्ट 'हब एवम् स्पोक' जकाँ चलैत अछि। सी.डी.जी एयरपोर्टसँ जतबा समय केन्द्रीय पेरिस जाइमे लगैछ, ततबे समय लगबलाकेँ नगरक केन्द्रीय पेरिस पहुँचबामे लागय। समानताक विचार छल सब सेवामे। जेना दक्षिण पेरिसक विद्यालयमे आठम वर्गक बच्चा के 4X4क टेबुल छल तहिना उ. पेरिसमे दूर तक सभ विद्यालयमे ओहने टेबुल सब 8वाँ वर्गक छात्रकेँ भेटैत छल। नीति निर्धारणक प्रक्रिया केन्द्रीय छल जाहिसँ पूरा नगर आ राज्यमे एक तरहक सुविधा नागरिककेँ भेटैत छल। जनतंत्रक वास्तविक स्वरूप।

फ्रांसक रेल सेवा सरकारी संस्था, एस.एन.सी.एफ. सोसाइटी द्वारा प्रचालित

छल। ई राज्य द्वारा प्रचालित रेल सेवा छल जे 1930मे स्थापित भेल रहए। द्रुतगामी टी.जी.भी. रेल सेवा 420 किमी. प्रति घण्टा पर चलैत छल। पेरिसमे पूरा आ यूरोपमे सेहो इएह संस्था रेल सेवा चलबैत छल।

फ्रांसमे एकसँ एक ऐतिहासिक स्थल अछि। पेरिसमे एफिल टावर प्रथम आकर्षण छल जे एक फ्रेंच इंजीनियर द्वारा निर्माण कयल गेल छल। गुस्ताव आइफेलक कम्पनी एकर परिकल्पना आ निर्माण 1887-1889 इ.मे कयलक

लूव्रे-पेरिसक म्यूजियम संसारक सर्वश्रेष्ठ म्यूजियम अछि जतऽ सभ देशक प्रतिनिधित्व छैक। कहल जाइछ जे विश्व युद्ध-IIक समय दुश्मन सेना एतऽ बम नहि फेकलक जाहिसँ एकर धरोहर, लूव्रे म्यूजियम आ नोत्रदम कैथोलिक चर्चकेँ कतहु नोकसान ने होइक। साइन नदीक काते-कात छोटकी नाओ चलैत छल। बड़का रोड पर काते-कात किताब सभक छोट-छोट दोकान। पेरिस शहर बनलाक पूर्व एतऽ नोट्रेडम नामक चर्च छल जतऽ प्रेमी-प्रमिका सभ आबि बैसैत छल। प्रेमक विशिष्ट शहर। नोट्रेडैम कैथेड्रल आ लूव्रे म्यूजियम आवासीय शहर फ्रांसक विशिष्ट आकर्षण अछि। एतुक्का रोड आ गली सब समाजवादी विचारधाराक प्रतिनिधित्व करैछ। इक्वालिटी बुलवा, फ्रैटर्निटी बुलवा आ Arc of Triumph अपन संस्कृतिक सभ घटनाकेँ संस्मरणमे रखैत संरक्षण देने अछि फ्रांस। वर्साय जे पेरिससँ 200 किमी. दूर अछि, ओतऽ इतिहासक अविस्मरणीय राजमहल अछि।

पेरिससँ हम सभ 3-4 दिनक लेल बेल्जियमक राजधानी ब्रुसेल्स गेल रही जतऽ नव-निर्मित यूरोपियन यूनियन (इ.यू.)क राजधानी बनाओल गेल छल। तावत धरि इ.यू.मे 15टा राज्य मिलल छल। बादमे 27टा देश संग भऽ गेल। फ्रांस आ जर्मनी द्वारा एक संगठन इ.यू.क रूपमे बनल जाहिमे यूरोपक सभ देशकेँ अपन स्वाधीनताक संग एक समग्र बल प्राप्त करैक प्रक्रिया छल। ओ नाटो पर अमरीकी प्रभावकेँ संतुलित करैक प्रयासमे छल। नाटोक मुख्यालय ब्रुसेल्समे छल। एक दिन ओतहु हमरा सभकेँ घुमाओल गेल।

एक दिन हम सब चारि गोटे बेल्जियमक एक प्रमुख नगर 'ब्रुग्स' गेल रही। पूरा नगर 1409 (10.99 किमी. या 54.44 Sq.Mt.)मे बसल छल। एतुक्का सिटी सेण्टर एक UNESCOक BRUGS द्वारा प्रचलित धरोहरि अछि। सिटी सेण्टरक परिकल्पना पुरातन शहर जकाँ कैल गेल जाहिमे घोड़ागाड़ी सेहो चलैत छल। एकसँ एक रेस्टोरेण्ट। घोड़ा-गाड़ी पर चढ़ि हम सब पूरा शहरक भ्रमण कयलहुँ जे स्पैरल फोर्ममे (Spiral Form) बनल छल। अजीब सुन्दर शहर। सिटी सेण्टरसँ रेलवे स्टेशनक रोड दुनियाँक आधुनिकतम दृष्टान्त छल। बच्चाक लेल लाल रंगक रोड जाहि पर साइकिल चलि

सकैत छल। बाकी ग्रे रंगक रोड जाहि पर मोटरगाड़ी चलय। पैघ गाड़ी सभक लेल अलग रोड। दोकान सब सुन्न छल। एकटा-दूटा लोक आ बड़का दोकान।

ई शहर यूरोपक आर्थिक गतिविधि एवम् शिक्षाक उत्कृष्ट स्थान छल। ब्रूज शहर 12म सदीमे क्लैण्डर राज्यक राजधानी बनल छल। ई शहर ऊनक विशेष बाजार बनल आ अन्तर्देशीय व्यापारमे अपन विशेष योगदान देलक। नयनाभिरामताक दृष्टिकोणे ई शहर अत्यन्त दर्शनीय। कहल जाइछ जे 1309 इ.मे एतऽ प्रथम मुद्रा बजार (Stock Exchange) बनल जे विश्व मुद्रा व्यापारक केन्द्र बनल। सभ तरहक ऐशो-आरामक सामग्री एतऽ भेटैत छल।

बेल्जियमक बीयर आ चॉकलेट काफी लोकप्रिय अछि। ब्रुसेल्स इ.यू.क राजधानी घोषित कयल गेल। 265 सांसद द्वारा संगठित इ.यू. ब्रुसेल्सके चुनलक। करीब 20000 छोट-छोट समूह काज करैत छल। एना तक कि भिखारी सभक सेहो एकटा समूह छल। ओकर परिभाषा रहैक “जे अपन कमाइ सँ दूनू साँझक भोजन नहि कऽ सकय से भिखारी कहाओत”। सभ लघु-समूहकेँ अपन एक नेता छल।

ब्रुसेल्ससँ आपस आबि पेरिसमे हम सभ ओकर सिनेटक सदस्य सबसँ विशेष वार्ता कयलहुँ। ओतुक्का एम.एस.एम.इक परिभाषा बूझल आ तकरा लेल सरकारी प्रोत्साहनक। भारतमे ओहि समय लघु उद्योगक परिभाषा, उद्योगमे लागल प्लाण्ट-मशीनरीक मूल्य पर होइत छल, जे काफी स्पष्ट छल। इ.यू.क उद्योग वित्तीय टर्न ऑभर पर परिभाषित छल। ओ सभ भारतीय परिभाषासँ बेस प्रभावित भेलाह।

हम पुछलियनि जे फ्रांसमे पब्लिक प्रोक्योरमेण्ट कानून कहिया बनल। आपसमे विमर्शक बाद ओ सभ कहलनि जे ओतऽ एहन कोनो कानून नहि अछि। हमरा ज्ञात छल जे ओतऽ लोक-क्रयकेँ नियमित करैक लेल 1944मे कानून बनल छल। मुदा ओकर जानकारी हुनका सबकेँ नहि छल। ओना हम सब जखन सिडिजी. एयरपोर्ट आबि गेल रही आपसी यात्राक जहाज पकड़य, तँ ENAसँ खबरि देल गेल जे फ्रांसक पब्लिक प्रोक्योरेण्ट लौ 1947मे बनल छल, जाहिसँ पहिने BUY AMERICAN LAW 1930मे बनल रहय। ओकर एक प्रति आइ.आइ.पी.ए. केँ पठा देलनि। भारतमे ड्राफ पब्लिक प्रोक्योरमेण्ट बिल 2011मे बनल जखन यू.पी.ए. सरकार कॉमनवेल्थ गेम आ स्प्रेक्टममे भेल भ्रष्टाचारसँ कुपित भऽ गेल रहय। मुदा बहुतो विचार-विमर्शक बाद 2014मे एहि बिल संसद द्वारा नहि पास भऽ सकल कारण एहिमे उच्च पद पर आसीन व्यक्तिक लेल कड़ा विधान छल। ओना बादमे लोकपाल बिल पर विचार होमऽ लागल जे लोकक्रयमे भ्रष्टाचारक निवारण हो। एखन धरि कोनो कारगर कानून नहि बनि सकल अछि।

आपसी यात्रामे किछु आइ.पी.एस. संगी सब स्वीटजरलैंड चलि गेलाह। हम सब शेञ्जेन विसाक अलावे स्विस विसा नहि लेने रही, तेँ आपस भऽ गेल रही। रस्तामे लंडनमे तीन दिन ठहरि गेल रही आ ओतऽ टेम्स नदीक काते-कात बनल परिदृश्यक अवलोकन करैत लंदन ब्रीज आ बिग बेनक आनन्द लैत समय बितओलहुँ। पुनः हीथ्रो एयरपोर्टसँ जहाज भेटल भारतक लेल।

IIPAक अप्पा ट्रेनिङक विशेष अध्ययन (इ.यू.)क रिपोर्ट बनि गेल छल। देशी ग्रामीण विषयक अध्ययनक लेल गुरगाँवक लग 'झज्जर'क यात्रा बाँकी छल। संगहि मुख्य शोध सेहो बाँकी छल। ताही बीच एक दिन आइ.आइ.पी.ए. जाइत काल कनॉट प्लेसमे मद्रास होटलक आगाँ वृत्ताकार रोड पर चलैत रही। एकाएक ओतऽ खसि पड़ल रही। ओतऽसँ कनिञे दूर छल उ. रेलवेक केन्द्रीय अस्पताल। ओकर आपातकालीन वार्डमे पहुँचि गेलहुँ। ओतऽ डाक्टर सब भर्ती कऽ लेलक आ आइ. सी.यू.मे पठा देलक। हमर पता देखि हमरा घर पर समाद पठा देलक। हमर पत्नी (अंजीरा) हहाइत-फुफुआइत अस्पताल पहुँचि गेलीह। बादमे सौरभ सेहो आबि गेल। बहुत तरहक जाँचक बाद किछु नहि बहराएल। बी.पी. बढ़ि गेल रहय तकर दवाइ दऽ देल गेल। एकर बारेमे कोनो समाद हम गाम नहि पठाबी कारण दादा, माए आ दाइ सब परेशान भऽ जैतथि।

आइ.आइ.पी.ए.क कोर्स पूरा भेलाक बाद हमर पदस्थापना पुनः पूर्व रेलवे मुख्यालय, कलकत्ता भऽ गेल–कोयला घाट बिल्डिंगमे उप मुख्य नियंत्रक भंडार (निर्माण)क पद पर। पू.रे.क सिग्नलिंग आ टेलिकॉमक काज आ टिकट रिजर्वेशन (पी.आर.एस. प्रणाली) सभक पूर्ति मुख्य काज छल। डेरा भेटल न्यू अलीपुरमे जतऽ रेल अधिकारी सभक निवास छल। तीन-तीनटा किशोर वयस्क बंगाली आ बिहारी बच्चा सब परिवार सहित हमर घरक काजक लेल उद्यत छल। एकटा भोरे आबय घर साफ करैक लेल, दोसर भोजन बनबैक लेल, तेसर साँझ कऽ आबय। हमरा बड़ अनसोहाँत लागय। लेकिन ओकरा सबकेँ लगैक जे एक ने एक दिन सबकेँ 'बंगला पियुन'क नोकरी भेटि जयतैक।

रेल मंत्रालयमे प्रतिनियुक्ति

बहुत दिन हम कलकत्तामे नहि रहि सकलहुँ। हमर ट्रान्सफर भऽ गेल– रेलवे बोर्डमे डाइरेक्टर (रेल भंडार), विद्युतीकरण लेल जकर काज रहय भारतीय रेलवेक विद्युतीकरणक प्रोजेक्टक खरीद एवम् संचालन। CORE इलाहाबाद जे विद्युतीकरणक मुख्यालय

छल, तकर सब प्रस्तावनाकेँ मूर्त्त रूप देबाक। रेल मंत्री छलाह बिहारक नीतीश कुमार। ओतऽ सबसँ पुरान काज छल ट्रान्सफर्मरक पूर्त्तिक जे चीनसँ आयात भेल आ रस्तेमे टूटि गेल छल आ लिलुआ कारखानामे राखल छल। गुणवत्ताक डिफेक्टक कारण ओ लाइनमे नहि लागल। आपूर्त्तिकर्ता कम्पनी लापता भऽ गेल। चीनक वाणिज्य दूतावास तक लिखलहुँ मुदा ओतऽ ओकर कोनो पता नहि। हमरासँ पहिने जे अधिकारी छलाह ओ ओहि ठेकाक पेमेण्ट सेहो कऽ देने छलथिन। कम्पनीक बैंक गारण्टी सेहो बीति गेल छल। हम रेलवेक वकील श्री आर.के. वलीके कहलियनि जे 4टा मोटगर फाइल बनि गेल मुदा ट्रान्सफर्मरक कोनो पता नहि। एहि मुद्दाकेँ सी. बी.आइ. सेहो इन्भेस्टिगेट करैत छल। ऑडिट पारा बड़का बनि गेल। सभटा मुश्किले। हम वकील बलीकेँ कहलियनि जे अहाँ कोनहुना आइ.ओ.बी. आ आर. बी.आइ. केँ पार्टी बनाए, बैंक गारण्टी पुनर्जीवित करू। हाइकोर्टमे केस फाइल कैल गेल। बड़ मुश्किलसँ बैंक गारण्टीक वैलिडिटी बढ़ाओल गेल। तत्पश्चात आपूर्त्तिकर्त्ताकेँ नोटिस देल गेल जे खराब ट्रान्सफर्मरक पुनः आपूर्त्ति करथि। मामला पुनर्जीवित भऽ गेल। आपूर्त्तिकर्त्ता कम्पनीक भारतीय एजेण्ट जे गायब छल, से एकाएक उपस्थित भऽ गेल, आ पूर्त्तिक विषयमे बात करऽ लागल।

रेलवे बोर्डमे निदेशक (रेल भंडार)क पदस्थापनाक बाद हम आश्वस्त भऽ गेल रही जे आब 4-5 साल कटि जाएत दिल्लीमे। एकटा मोटरगाड़ी 'हुनडइ-10' किनलहुँ जाहिसँ ऑफिस जाइ। ओना ओकर उपयोग हमर पुत्री स्मिता ज्यादे करैत छलि। ओ डी.यू.सँ एम.बी.इ. कऽ चुकलि छलि आ आइ.एम.आर.बी.मे शोधार्थी पद पर काज शुरू केने रहथि। बेशी काल ओ हमरा ओहि गाड़ीसँ रेल भवन छोड़ैत छलि आ पुनः अपन ऑफिस आइ.एम.आर.बी., खान मार्केट जाइत छलि। आपसीमे हम बेशी काल चार्टर्ड बससँ विकासपुरी आबि जाइत रही। ओकरा कहियो-कहियो देरी भऽ जाइक। खासकऽ दिल्लीक जाममे बड़ सम्हरि कऽ गाड़ी चलाबऽ पड़ैक। सौरभ ओहि समय बी.टेक कऽ रहल छल NSIT, डी.यू., द्वारकासँ। ओ सेहो गाड़ी चलायब सीखि लेने छल। सागर बड़ छोट छल। ओ जिद्द ठानि देलक जे कम्प्यूटर चाही। ओकर अवस्था देखि हम पहिने मना कऽ देलहुँ। पुनः बेशी जिद्द केला पर हम रेलवे बोर्डसँ 50,000 रु.क ऋण लऽ कऽ पर्सनल कम्प्यूटर Assembly कराओल। नेहरू पैलेसमे सौरभ जा कए अपने सामने एकरा Assemble करओलक आ नीक पार्टपुर्जा वला पी.सी. अनलक। ओकर उपयोग घरमे सब करऽ लागल।

एहि बीच एकटा विचित्र घटना घटल। हमर जेठ सार प्रदीप भाइ जीक पुत्र 'श्याम' आइ.आइ.टी. कानपुरसँ बी.टेक. (रसायन) केलाक बाद एम. टेक (डिजाइन) आइ.आइ.

टी. दिल्लीमे पढ़ाइ शुरू केने छल। ओ आइ.आइ.टी. होस्टल, हौजखास दिल्लीमे रहैत छल। एक दिन पता चलल जे ओ ओतऽ बीमार पड़ि गेल रहय आ कोनो संगीक पिताक माध्यमे अस्पतालमे भर्ती भऽ गेल रहय। बादमे भाइजी ओकरा अपोलो इन्द्रप्रस्थमे भर्ती करओलनि। हमरा पता लागल तेँ हम अपन मित्र डा. पी.एन. देब (रिटायर्ड डॉक्टर ए.आइ.आइ.एम.एस.) केँ कहलियनि आ हुनक संगी सब मिलि कऽ ओकरा देखलनि। श्याम बहुत मेधावी, सुन्दर आ व्यवहारशील बालक छल। ओकर बहिन 'सीमा' (किसलय नामे प्रसिद्ध) एन.आइ.एफ.टीमे पढ़ैत मेधावी छात्रा रहय। भौजी (श्यामक माए) आ भाइ जी (प्रदीप जी)क हालत चिंतासँ गम्भीर भऽ गेल छल।

श्यामक मोन बेशी खराब होअऽ लगलैक। वित्तीय खर्च असह्य होअऽ लागल। हम सब बेरा-बेरी कऽ अस्पताल जाइ आ इन्तिजाम करैत रही। भाइजी (प्रदीप) बहुत धैर्यशाली, कर्मठ आ सहिष्णु लोक छथि। ओ ओतहि रहथि। जखन हमरा सभक कैश समाप्त प्राय भऽ गेल, तँ एक दिन भोरे 4 बजे उठि हम उद्विग्न भऽ गेल रही जे आब कतऽसँ रुपया आनब। होस्पीटलक बिल बेशी छल। हमर बेटी स्मिता अपन डी.यू./आइ.एम.आर.बी.क संगी-साथीक लग चर्चा कऽ देलक। सब विद्यार्थी सभ अपन-अपन एकॉउण्ट/ए.टी.एम.सँ रुपया निकालि देबऽ लागल। स्मिता आ सौरभक संगी सब ब्लड डोनेशन लेल लाइन लगौलक। 'श्याम वेंटिलेटर' पर पड़ल जिनगीक लड़ाइ लड़ैत रहल। डाक्टर सब अपन सब ज्ञान आ अनुभव लगा देलनि जे भविष्यक एक मेधा शक्तिके बचाबी। मुदा भगवानक निष्ठुर निर्णय हमर पूरा परिवारकेँ मर्माहत कऽ देलक। श्याम दुनियाँमे नहि रहल। हमर छोट सार 'मुन्ना' आ हुनक पत्नी 'विभा' छाती पर पाथर राखि ओकर सब क्रिया-कर्म हरिद्वार जाए करओलनि। हमरा घरमे उदासी पसरि गेल। ओ दिन (27-12-2002) हमरा सभक लेल काल बनि आयल आ बेबस कऽ देलक।

जनवरी 2003मे एकटा कथाक सूचना भेटल हमर बेटी स्मिताक प्रति। गोहाटीमे हमर मित्र (स्व. मनोरंजन जी, उपनिदेशक टेलीमेट्री, केन्द्रीय जल आयोग) नेहराक अशोकजीसँ सूचना पाबि हमरा सूचित कयलनि जे कोइलखक विनोद बाबू ओतऽ वाल्फोर्ड मोटरमे जी.एम. पद पर छलाह। हुनक दुइ गोट पुत्र अभय नाथ झा बंगलोरमे कार्यरत आ विश्वजीत बम्बइमे कार्यरत छलाह। हमर पत्नी अंजीरा खोचारय लगलीह जे जल्दी जाए देखि आउ। हम बंगलोरक यात्रा पर गेलहुँ आ सेण्टर प्वाइण्ट होटलमे ठहरलहुँ। ओतऽ अभयजीकेँ खबरि करैत एक-दूटा आओर अविवाहित युवाक सम्पर्क कयल। हमर परिचित आ एकटा स्थानीय व्यापारी मुस्ताक अहमद हमरा मदति केलनि।

अभय जीक ऑफिस (INFOSYS) ओतऽसँ दूर छल। साँझक समयमे बंगलोरमे मोटरगाड़ीक भीड़ बढ़ि जाइत छल। तेँ ओ भोरे पहुँचलाह। ओही दिन भोरमे हमरा गामसँ गुना (हमर भातिज)क फोन आएल जे दादा लटपटायल छथि। आब नहि जीताह। पैसा-कैंचा सधि गेल छल तेँ हवाइ जहाजक टिकट लेनाइ मुश्किल भऽ गेल। ट्रेनसँ पटना आ गाम जाइमे तीन दिन लगितय, तेँ मोन असहज भऽ गेल रहए। मुश्ताक केँ पता लगलैक तँ ओ बड़ मुश्किलसँ 2टा सीट कलकत्ताक हवाइ जहाजमे लऽ लेलक। हम कहलियैक जे पैसा आपसीमे समय लागत। ओ हमरा एकदम निश्चिंत कऽ देलक। कहलक जे अहाँ कोनहुना गाम पहुँचि जाउ। बंगलोरसँ कलकत्ताक लेल हम आ हमर पत्नी अंजीरा विदा भऽ गेलहुँ। कलकत्तामे पू. रेलक एकटा परिचित कलकत्तासँ हावड़ा स्टेशन जाइवला हिमगिरि एक्सप्रेसमे टिकट कटाए रखने रहय। एकटा टैक्सीक बन्दोवस्त सेहो छल, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस हवाइ अड्डा पर। समयक अन्तराल बड़ कम। कलकत्ताक रोडक जाम छल मुदा ड्राइवर कोनो तरहेँ गाड़ी निकालि लेलक। हावड़ा स्टेशन ठीक ओहि समय पहुँचि गेलहुँ जखन ट्रेन स्टेशनसँ खूजय लागल। मिश्राजी (श्री दिनेश चन्द्र मिश्र) आ नागी (हमर छोट पितयौत भाए) ओतऽ गाड़ीक गेट लग ठाढ़ छलाह। हम सब अन्दर पहुँचलहुँ कोनहुना। तखने गाड़ी ससरऽ लागल छल। ट्रेनमे बैसलाक बाद आश्वस्त भेलहुँ जे काल्हि धरि गाम पहुँचि जाएब। पटना उतरि एकटा टैक्सीक बन्दोवस्त छल जे हमर कलकत्ताक परिचित सब केने छलाह। 16.2.2002 कऽ हम पटनासँ गामक टैक्सीमे रही। दादा हमर 15. 2.2002 कऽ दुनिया छोड़ि देने छलाह। रास्ता भरि किछु नहि फुरैत छल जे की करी। करीब 4 बजे साँझ कऽ पहुँचलहुँ गाम। हमर दादाक मृत शरीर हमरा आङनमे राखल छल। हम बड़ी काल धरि हुनकर पैर लग बैसि शशाङ्क मुद्रामे ठोह पाड़ि कानऽ लागल रही। हमरा टोलक सब गोटे हुनक मृत शरीरकेँ दाह-संस्कारक लेल लऽ गेल। हमर दादा संत पुरुष जकाँ छलाह। ककरोसँ कोनो झंझट नहि। अपन गृहस्थीमे रत। ओ 92 सालक उम्रमे देहावसानसँ पूर्व 4-5 किमी. प्रतिदिन बाधमे टहलैत छलाह। हम हुनका संग पीछला साल, पछबरिया बाधमे सीसोक 50टा गाछ रोपने रही। हुनका पूरा चौधरी टोलक जमीन-जथाक रकबा आ खाता-खेसरा बूझल छलनि।

हम दिल्लीमे रेलवे बोर्डकेँ खबरि दऽ देलहुँ जे हम गाम आबि गेल छी आ हमरा 14-15 दिन लागत। हमर बॉस छलाह सरदार मेहताव सिंहजी जनिका आश्चर्य लगलनि जे एतेक दिन हम छुट्टी किऐक लेलहुँ। हमरा ओ दबावो देलनि जे जल्दी ऑफिस ज्वाइन करी। हम कहलियनि जे ई संभव नहि, किऐक तँ पूरा कर्ममे हमरा समय लागत।

***

अध्याय–11

पूर्व मध्य रेलमे प्रस्थापना

हमर प्रोमोशनक आर्डर आएल आ पदस्थापना भेल नव मुख्यालय, पू.म.रे. हाजीपुरमे। ओतऽ केओ बाहरी अधिकारी नहि जाइत छल। पैरवी लगाय रोकबा लैत रहय। हमहूँ ML (सदस्य विद्युत) कें कहलियनि जे हमरा बोर्डमे एक पद देल जाए। हुनक आश्वासनक बादो ट्रान्सफर नहि रुकल। रेलमंत्री, नीतीश कुमारक मोन रहनि जे बिहारक चुनल-चुनल लोक हाजीपुर जाए जाहिसँ मुख्यायलक निर्माणमे तेजी आओत। अंतमे हमरा हाजीपुर जाए मु.सां. प्रबन्धक पद पर योगदान देबऽ पड़ल।

दिल्लीसँ पटनाक यात्रामे सम्पूर्ण क्रांति एक्सप्रेसक निचला सीट पर एक कात हम आ दोसर कात विशाल काय शरीर, चुस्त-दुरूस्त आ ठोस गप्प केनिहार कलाकौशल सम्पन्न व्यक्ति। परिचय देलनि जे "हमर नाम छी ताराकान्त झा। हम उच्च न्यायालय, पटनामे अधिवक्ताक प्रैक्टिस करैत छी।" ओ बी.जे.पी.क बिहार प्रदेशक अध्यक्ष सेहो छलाह। यात्राक बीच बहुत रास गप्प-सप्प होइत रहल। ओ इहो प्रस्ताव देलनि जे हम बी.जे.पी. ज्वाइन कऽ ली। कहलनि जे हम अहाँके अपन घर बजायब आ माछ-भातक भोज देब। हम बड़ आह्लादित भेल रही।

हम जहिया हाजीपुरक मुख्यालय (पू.म.रे.)मे योगदान देलहुँ, ओहि दिन छठिक खरना छल। हमर परिवारक सभ गोटे दिल्लीमे छल आ हम एसगर पटना आएल रही। पू.म.रे.मे योगदानक रिपोर्ट करैत हम साँझमे घुरती ट्रेन दिल्लीक लेल पकड़ि लेने रही। पटनामे डेराक इन्तिजाम नहि भेल छल। ओना रेलवे रेस्ट हाउस, पाटलिपुत्रा कॉलोनीमे एकटा कमरा हमरा नामे अलॉट भऽ गेल छल। हम दिल्ली आबि दश-एगारह दिनक छुट्टी बिताय पुनः पटना-हाजीपुर जयबाक तैयारी कऽ लेलहुँ। एसगर रहबाक छल तेँ ज्यादे सामानो नहि रखलहुँ। पटनाक रेस्ट हाउसमे सबटा इन्तिजाम छल। ऑफिस जाइक लेल हमरा मु.सा. प्रबन्धकक गाड़ी देल गेल।

पू.म.रे.क सामान्य प्रबन्धन

पूर्व मध्य रेलक मुख्यालय नवे बनल छल हाजीपुरमे। पटनामे हमर विभागक दूटा ऑफिस छल पहिल 'कुल्हरिया कम्प्लेक्स' आ दोसर 'बिस्कोमान भवन'मे। हाजीपुरमे सेहो दू ठाम ऑफिस छल—एकटा उमा भवन, हाजीपुर बजारमे आ दोसर मुख्यालय परिसरमे जतऽ प्रशासनिक एवम् नीतिगत काज सभ होइक। हमरासँ वरिष्ठ अधिकारी (भंडार नियंत्रक) छलाह सिन्हाजी (श्री बी.के. सिन्हा) जे पूर्व रेलवे कलकत्तासँ आएल छलाह। ओ हमरा दिल्लीमे फोन करैत कहइत छलाह जे हाजीपुर नहि आउ, एतऽ बड़ खराब वातावरण छैक। हम कतेको दिन धरि रेलवे बोर्डमे अपन स्थानान्तरणकेँ रद्द करैबाक प्रयास केने रही मुदा से भऽ नहि सकल। हमरा हाजीपुर ज्वाइन केलाक बाद दिल्लीमे हमरा घर पर रेलवे बोर्डक किछु लोकक सहानुभूतिपूर्ण फोन अबैत छल। हमरा पत्नीकेँ कहनि जे "चिंता नहि करब। रेलवे बोर्ड पूरा सहयोग भेटतनि"। सभकेँ होइक जे कोना रहब हम हाजीपुरमे। हमरा अपनो लागय जे कोनो अनपेक्षित घटना ने भऽ जाए। किछुए दिन पूर्व हाजीपुरमे एन.टी.पी.सी.क अभियन्ताक अपहरण कऽ लेल गेल छल।

हम पटनाक 'कुल्हरिया कम्प्लेक्स'वला ऑफिस जाए सभ अधिकारी एवम् कर्मचारी संग वार्ता केलहुँ। हिन्दी भाषामे सब गप्प-सप्प। हम कहलिऐक जे 'वातावरण', 'व्यवहार', आ 'व्यवस्था' हमरा लोकनिक मूल मंत्र रहत। व्यक्तिगतरूपेँ बहुतो गोटे प्रभावित भऽ हमरा संग जुटि गेलाह। हमर कनिष्ठ पंकज कुमार सिन्हा, उप मुख्य सामग्री प्रबन्धक हमरा संग पू.रे. कलकत्तामे पदस्थापित छलाह आ पू.म. रे. बनबाक बाद एतऽ आबि गेल छलाह। बाकी अधिकारी सब एन.इ.आर.सँ आएल छलाह। पू.म.रे. बनल छल पू. रेलवेक तीन मंडल (धनबाद, दानापुर, आ मोगलसराय) तथा उ.पू.रे. गोरखपुरक दूटा मंडल, समस्तीपुर एवम् सोनपुरकेँ मिलाय कऽ। कलकत्ता आ गोरखपुरक कार्य-संस्कृति सेहो अलग-अलग छल जे अधिकारी एवम् कर्मचारीक कार्यमे परिलक्षित होइत छल। एन.इ.आर.सँ आएल छलाह डी.एस. दरयाल, उ.मु प्रबन्धक आ हरिशचन्द्र राम, उ.मु प्रबन्धक। पी.के. मिश्र एवम् डी. एन. ठाकुर आरम्भिक पद पर छलाह नव क्लास-I अधिकारी (UPSC द्वारा चयनित, प्रत्यक्ष सहायक सामग्री प्रबन्धक) संजय दयाल पटनेक रहैवला छलाह।

इ.सी.आर.क नव मुख्यालय बनबाक बाद मुख्य चुनौती छल दू अलग-अलग मुख्यालयक कार्य-संस्कृतिक समन्वय केनाइ। दू ठामक प्रक्रिया S.O.P. सेड्यूल ऑफ पावर)के एकीकृत केनाइ छल तेँ ओहिमे लागि गेलहुँ। दुनू ठामक नीक, सहज आ सर्वहितकारी प्रक्रिया एक ठाम आनि इ.सी.आर.क SOP बना देलहुँ।

दोसर चुनौती छल मानव संसाधनक प्रशिक्षण। इ.सी.आर. बनलाक बाद देश भरिक रेलवे जोन (एस.इ.आर., डब्लू.आर., एस.आर., एस.सी.आर., आ उत्तर रेलवेसँ कर्मचारी सब अपन होम रेलवे आबि गेल रहय। सभक अपन-अपन प्रक्रिया आ क्रिया-कलाप। ओकरा सभकेँ एक यूनिफॉर्म संस्कृतिमे परिवर्तित करैक छल।

तेसर चुनौती छल जे सामग्री प्रबन्धन लेल भंडार डिपो सब संगठित नहि छल। समस्तीपुरमे सामान्य भंडार डिपो छल जे सामान्य सामग्रीक प्रबन्धन करैत छल। दानापुर, सोनपुर मंडलमे किछु नहि छल। मुगलसराय आ धनबादमे सेहो मात्र डीजल इंजिन आ इलेक्ट्रिक इंजिनक रखरखाव लेल छोट-छीन डिपो छल। मुगलसरायमे SICK LINE (सिक लाइन)मे जर्जर वैगन रहैत छल आ ओकर रखरखावमे विशेष समस्या छल।

हमरा लोकनि परिकल्पना कएल जे एकटा सामान्य केन्द्रीकृत भंडार डिपो, बरौनी लग गरहड़ामे राखल जाए। पाँचो मंडलमे सामान्य सामग्री लेल डिपोक सम्बर्धन कएल जाए। परिकल्पना पैघ छल मुदा वित्तीय संकट नहि भेल। जतवा वित्तक प्रबन्ध भेल ताहीमे इन्तिजाम करबाक प्रयास केलहुँ।

चारिम चुनौती छल जे इ.सी.आर.क मुख्यालय हाजीपुर बनलाक बाद काज बहुत बढ़ि गेल एवम् अधिकारीक कमी भऽ गेल। एकरा लेल हम चारिटा मु.सरा प्र. पद एवम् 6टा उ.मुख्य प्र.क पद सृजित कयलहुँ। तहिना निचला स्तर धरि कार्मिकक प्रबन्धन कएल।

हमर पूववर्ती अधिकारी पी.के. संगेवार अपन ट्रान्सफर एस.सी.आर. (SCR) सिकन्दराबाद करौने छलाह जतऽ हुनक परिवारक सब गोटे छल। ओ बहुत रास 'टेन्डर' फाइल बिना निर्णय (सिग्नलिंग केबुल, S&Tक उपस्कर) छोड़ि देने रहथि। नव जोनक लेल सामग्री प्रबन्धनमे उपस्कर एवम् रौलिंग स्टौकक (इंजिन, वैगन कोचक) प्रबन्धन बड़ पैघ चुनौती छल। आपूर्तिकर्त्ता सभ बाहरी प्रदेशक छल। बिहारक एकोटा उद्योग नहि भेटल जे एहि सब लेल प्रयासरत होअए। जे छल से पटना स्थित एजेण्ट सभ जकरा अपनो कोनो ज्ञान नहि छलैक जे सामग्रीक उत्पादनकर्ता सभक संग कोना समायोजन हो। टेण्डरक निर्णय-प्रक्रिया सेहो कठिन छल। पटनामे 2टा ऑफिस आ हाजीपुरमे 2टा। आधा फाइल हाजीपुरमे बनय। मीटिंग हाजीपुर आ पटना दुनू ठाम। बचल काज पटनामे होइत छल। ओकर स्वीकृति हाजीपुरमे होइत छल, जतऽ जी.एम. स्तर तकक अधिकारी अवस्थित छलाह।

प्रति दिन 2-3टा फेरी हाजीपुर आ पटना लागि जाय। साँझ कऽ हाजीपुरसँ अबैत काल गाड़ीमे सूति रही। पटना जे चीन्हल शहर छल, धीरे-धीरे विकसित भऽ गेल

छल। ओकरो ठीकसँ नहि देखि सकी। मात्र अति आवश्यक काजेसँ गाड़ी परसँ उतरी। कोना पटना डेरा पहुँची से पता नहि चलय।

रेलवे मुख्यालय, हाजीपुर पटनासँ मात्र 35 किमी. अछि मुदा गाँधी सेतु पर बेशी काल गाड़ी सभक जाम लागि जाइ। घण्टो ससरैत रहैत छल-बस, कार आ ट्रक इत्यादि। गाँधी सेतुक बेरिंगमे डिफेक्ट भऽ गेल छल। ई बात प्रचलित छल जे ब्रिजक निर्माणक समयेसँ एहिमे बेरिंगमे डिफेक्ट रहय। कतेको दिन धरि एकेटा रास्ता खुजल रहय। एक बेर तँ एना भेल जे रेलवे बोर्डसँ सभ 6टा सदस्य एलाह पटना आ ओतऽसँ दिन 9 बजे विदा भेलाह हाजीपुर मुख्यालय, जतऽ रेलवे बोर्डक विशिष्ट बैसक राखल गेल छल आ मुख्य प्रोजेक्ट आ नीति पर चर्चा होयबा छल। सभक गाड़ी गाँधी सेतु पर ठहरि गेलन्हि। आगाँ बढ़ैक कोनो उपाय नहि। जखन बारहसँ ऊपर समय भऽ गेल, दुपहरक, तखन CRB (अध्यक्ष रेलवे बोर्ड) निर्णय लेलनि जे आब आपस भऽ जाइ आ बैसक रद्द भऽ गेल। मुदा आपसकी रास्ता सेहो अवरुद्ध छल। तैयो सभ गोटे दुपहरक बाद आपस पटने अएलाह। तहियासँ कोनो बोर्ड मेम्बर हाजीपुरमे बैसक नहि राखथि। एकर प्रतिफल भेल जे पटना स्टेशने पर आ महेन्द्रू घाटक ऑफिसमे एक एकटा विशिष्ट मीटिंग रूम बनल जाहिमे पूरा ध्वनि प्रणाली आ मीटिंगक प्रोटोकोल रहय।

शनैः-शनैः मुख्यालयक मीटिंगक हेतु हाजीपुरकेँ आ बिस्कोमान भवन पटनामे भंडार विभागक ऑफिस व्यवस्थित कयल गेल। पूरा इ.सी.आर.क नियंत्रणमे 10टा भंडारक डिपोक निर्माण आ रखरखावक व्यवस्था भेल। सबकेँ कम्प्यूटरीकृत करैत कर्मचारी सबक चुनाव ओकर प्रशिक्षण देल गेल। हमरा मोन पड़ैछ, जखन 'गड़हरा' (बरौनीसँ 2-3 किमी. दूर) एक विशेष केन्द्रीय सामग्री डिपो बनल, तँ 27 कर्मचारी हमरा रूममे आबि गेलाह। ओ सब ओतऽ जयबाक लेल तैयार नहि छलाह। हम पहिने करीब 100 एकड़ रेलवेक जमीनकेँ फीतासँ नापि ओतऽ भंडार निर्माणक प्रक्रिया आरम्भ कऽ देने रही। कर्मचारी सभक हेतु आ अधिकारीक लेल पुरान घरक नवीकरण करैक आदेश दऽ देने रही। एकटा वरिष्ठ इंजीनियर (Senier Divisional Excutive Engineer) सोनपुरकेँ एकर भार दऽ देने रहियनि। डी.आर.एम., सोनपुरकेँ विशेषरूपेँ कहने रहियनि जे ओतऽ कोनो त्रुटि नहि हो, से प्रबन्ध करथि। 27 गोटे जखन हमरा लग आबि अपन दुखनामा सुनौलनि तँ हम ठाढ़ भऽ सबकेँ कहलियनि जे ''अहाँ सब महाभारतक कथा सुनने छी। जखन पाँचो पाण्डव हस्तिनापुर जाइक लेल तैयार भेलाह तखन की रहनि हुनका सब लग? मात्र इच्छा आ विश्वास। ओ लोकनि कोना एक राज्यक निर्माण केलनि। "अहाँ सब बस ओतऽ पहुँचू आ पाछाँसँ हमहूँ अबैत छी। देखू कोन तरहेँ एकर निर्माण होइछ। ई स्थल

इ.सी.आर.क प्रमुख भंडार केन्द्र हयत जतऽसँ दानापुर, धनबाद, सोनपुर तकक सामान्य सामग्रीक प्रबन्ध होयत।”

गड़हरा डिपोमे भवन निर्माण, कम्प्यूटरीकरण आ सुरक्षाक पूरा इंतजाम भऽ गेल। सबके अपन स्तरसँ नीक घर भेटि गेलनि। ओतऽ एकटा पुस्तकालयक निर्माण कराओल। राष्ट्रकवि ‘दिनकर’जीक गाम सिमरियासँ हुनक परिवार एवम् गामक बहुत गोटे आयल छलाह-हुनकर कृति सभ दान करैक हेतु। धीरे-धीरे ओ स्थल विशिष्ट बनि गेल। ओतुक्का स्थानीय लोक सभा सदस्य अपन राशिसँ बरौनीसँ गड़हरा तकक रोड बना देलनि। जगह विशाल छल। ओकर मैदानमे रेलमंत्री (श्री लालू प्रसाद यादव) अपन 7टा केन्द्रीय कैबिनेट मंत्रीक संग आबि सभा कयलनि। धीरे-धीरे गड़हरा एक पूर्णरूपेण व्यवस्थित भंडार डिपो बनि गेल जे इ.सी.आर. रेलवेक पूर्त्ति श्रृंखलाके विशिष्ट योगदान देबऽ लागल। ओतऽ रेलवेक एकटा खण्डहर जकाँ उच्च विद्यालय छल जकर जीर्णोद्धार कएल गेल आ ओतऽ नजदीकी गाम सभक छात्र-छात्रा सब मैट्रिक तकक पढ़ाइ लेल आबऽ लागल।

पू.म.रे.क सामग्री पूर्त्ति श्रृंखला प्रबन्ध

पू.म.रे.क मुख्यालय 2002सँ संगठित भेल छल। ओहिसँ पहिने मात्र बिल्डिंगक छोट रूप बनाओल छल जे पू. रेलमंत्री श्री रामबिलास पासवान अपन कार्यालयमे स्थापित कयलनि। विशेष कार्य आ बिस्तार 2003सँ आरम्भ भेल जखन दोसर रेलमंत्री नीतीश कुमार बनलाह। पू.म.रे.क अन्तर्गत 5टा मंडल छल–पू.रे.क दानापुर, धनबाद, मोगलसराय आ उ.पू.रे.क समस्तीपुर आ सोनपुर। पहिने रेलवेक प्रस्ताव छल जे एकटा केन्द्रीय भंडार डिपो मुगलसरायमे बनय, कारण जे ओतऽ मुख्य मार्गक गाड़ी दिल्लीसँ कलकत्ता जाइत छल आ ओ एक्टिविटी केन्द्र छल। नीतीशजीक इच्छा रहनि जे केन्द्रीय डिपो बिहारमे कतहु बनय। बहुत सोचि-विचारि कऽ सोनपुर मंडलमे ‘गड़हरा’ (बरौनीक लग) ताकल गेल जतऽ रेलवेकेँ बहुतो जमीन उपलब्ध छल। ई स्थान ‘दिनकर’जीक गाँव सिमरियामे छल। दिनकरजी एकटा कविता लिखने छलाह ‘लोहा चोर’ जाहिमे एतुक्का चोरिक वर्णन छल।

पाँचो मंडलक भंडार आ वितरणक लेल 2टा केन्द्र बनल–1. गड़हरा, 2. समस्तीपुरक पुरान भंडार डिपो जतऽसँ सामान्य सामानक वितरण होइत छल। एकरा अलावे धनबादक अन्तर्गत गोमोमे बिजली इंजिन आ डिजलक डिपो बनल आ दानापुर मंडलमे राजेन्द्र नगर कोचिंग डिपो बनल। समस्तीपुरमे डिजल इंजिनक भण्डार डिपो सेहो बनल।

मुख्यालयमे देशक दोसर जोनसँ आएल कर्मचारी सभके समायोजित कयल गेल आ ओकर विशेष प्रशिक्षणक इन्तिजाम भेल। 2005मे यू.पी.ए.क सरकारक प्रधानमंत्री छलाह श्री मनमोहन सिंह। हुनक आदेश पर भारतीय सरकारी खरीदमे एलेक्ट्रानिक निविदाक आदेश पारित भेल। पू.म.रे.मे पहिनेसँ एकर रूपरेखा बनल रहय जखन श्रीनीतीश कुमार रेलमंत्री छलाह। कागज विहीन दफ्तरक परिकल्पना रहनि। ओतुक्का वातावरणकेँ देखैत e.tender बहुत उपयोगी छल। हमरा मोन अछि जखन हम सभ हाजीपुर मुख्यायलमे ई प्रक्रिया आरम्भ केलहुँ, ओतुक्का स्थानीय अखबारमे एकर बहुत चर्चा भेल। असामाजिक तत्त्व जे अपन बल द्वारा रेलक टेण्डरकेँ रिंग करैत छलाह तनिका सभक लेल दिक्कत भऽ गेलनि। इ-निविदाक केन्द्र छल बिस्कोमान भवनमे पाँचम महल पर जतऽ हमर एकटा छोट ऑफिस रहि गेल छल। बाकी काज मुख्यायल हाजीपुरमे चलि आएल छल। एक दिन बिस्कोमान, पटनामे आर.पी.एफ.केँ धक्का दैत एकटा असामाजिक गिरोह ऊपर जाए इ-प्रोक्योरमेण्ट सिस्टम (EPS) लग जाए ओतुक्का प्रक्रिया देखय चाहलक। हम फोन पर आदेश देलियैक ओतुक्का अधिकारीकेँ जे हिनका सभकेँ ई प्रक्रिया पूरा देखा देल जाए एवम् पोर्टल पर बोली जमा करैक लेल कहल जाए। ओ सभ एहि तरहक प्रक्रियासँ अनभिज्ञ छलाह, तेँ आपस चलि गेलाह।

बिहारमे उद्योगक स्थिति तेहन जे रेलवेक एकहुटा निविदामे केओ अर्हता नहि पाबि सकय। दिल्ली, बम्बइ, कलकत्ता आ बंगलोरक आपूर्त्तिकर्ता जे हवाइ जहाजसँ पटना अबैत छल तकरा हवाइ अड्डे पर घेरि लेल जाइक। एक बेर बम्बाडियर (विद्युत् इंजिनक पूर्तिकर्त्ता)क प्रतिनिधि जखन पटना पहुँचल तँ अपन खेरहा सुनौलक जे कोना अपहरणकर्त्ता द्वारा 2 घण्टा धरि ओकरा पटना घुमाओल गेलैक। हम कहलियैक जे पटना अबैत काल अपन विदेशी वेषके बदलि लेथि।

जोनक अन्दर मात्र आपूर्त्तिकर्त्ता आइ.ओ.सी. बरौनी छल जे डिजल दैत छल आ बी.ओ.सी. जमशेदपुर जे ऑक्सीजन दैत छल। बरौनीक स्थानीय कारखाना जे डिजल आपूर्त्ति करैत रहय से आ जमशेदपुरसँ आक्सीजन देब बन्द भऽ गेल छल। सभ मदक आपूर्त्ति बिहारसँ बाहरक उद्योग करैत छल। आइ.ओ.सी., बरौनीक रिफाइनरीक डीजल ततेक महग छल स्थानीय सेल्स टैक्स (22%)क कारण, जे हमरा सभकेँ बंगालक राजमहलसँ ओकर आपूर्त्ति लेबऽ पड़य किएक तँ पश्चिम बंगालक आपूर्त्तिमे सी.एस.टी बहुत कम छल। माल-भाड़ा देलाक बादो ओ सस्ता छल। बिजलीक बल्ब पटना सीटीमे सेहो बनै छल मुदा टैक्सक कारण देहरादूनसँ आपूर्त्ति करैमे सस्ता छल। ई विषय हम बिहारक तत्कालीन वित्त सचिवकेँ कहलियनि जे

राज्यक सेल्स टैक्स (एस.टी.) युक्तसंगत करथि जाहिसँ रेलवेके लऽगसँ आपूर्त्ति होएतैक आ बिहार सरकारके टैक्स सेहो भेटतैक।

भंडार आपूर्त्तिक अलावे विनिर्माण प्रोजेक्ट लेल सिमेण्ट, सिग्नलींग केबुल तथा अन्य उपस्करक खरीद बेशी छल। निविदाक निर्णयमे विशेष गति आनल गेल। प्रतिफल ई जे आन-आन (एन.आर, डब्लू.सी.आर., एन.सी.आर., पू. रेलवे) जोनल रेलवेमे जखन सामग्रीक संकट होइत रहय तँ इ.सी.आर.सँ विशेष सहायता देल जाइत छल।

स्क्रैप डिस्पोजलक लेल समस्तीपुरमे विशेष डिपोक निर्णय श्री हरि, मण्डल रेल प्रबंधक (DRM), समस्तीपुरक संग कएलहुँ आ तकर उद्घाटन कयलहुँ। इहो निर्णय कयल गेल जे गड़हराक स्टोर डिपोकेँ स्क्रैपक लेल सेहो तैयार कैल जाय। मुगलसरायमे ट्रैकक डिस्पोजलक लेल विशेष डिपो बनल। ओना भारी-भारी रेल, वैगन आ कोच सभक निपटान यथास्थित स्थल पर होइत रहल।

पू.म. रेलक भण्डार नियंत्रकक कार्यभार

आर्थिक वित्त वर्ष (2006-07)क तेसर तिमाहीमे श्री बी.के.सिन्हा भंडार नियंत्रकक ट्रान्सफर द. रेलवे चेन्नइ भऽ गेलनि। ओ पद हमरा भेटि गेल। हम बेशी काल पू. म. रेलवेक मुख्यालय हाजीपुरमे बैसी। मुख्यालयक अन्दर 5 गोट (एस.ए.जी.) स्तरक वरिष्ठ प्रशासनिक पदक सृजन कएल। ई पद मु.सा.प्र., भारत सरकारक ज्वाइन्ट सेक्रेटरीक पद छल। सभ (पाँचो) मु.सा.प्र. हमरा सहयोग करऽ लगलाह। एकटा मु.सा.प्र. मात्र सामग्री विक्रयक छल जकर दायित्व छल पाँचो मंडलक स्क्रैपक देखरेख आ निष्पादन। एकर अतिरिक्त डेहरी ऑन-सोन, सासाराममे डालमिया समूह-3 उद्योग कोर्ट द्वारा इ.सी.आर.क अधीन भऽ गेल जाहिमे 140 करोड़ रुपयाक बोली लागल छल। एकरा लेल ओहि समयक रेलमंत्री लालू प्रसाद यादव जी द्वारा मुख्य प्रबंधककेँ आदेश भेटल छल जे सम्पत्ति कीनि ली। ओहि परिसम्पतिक करीब 9टा प्लाण्ट छल–123 एकड़ जमीनमे छितराएल सब प्लाण्ट–डालडा, पावर, कपड़ा, सिमेण्ट, चीनी, आ अन्य पूर्णरूपे बन्द छल आ ओकरा खाली करबाक इन्तिजाम करैक छल जाहिसँ खाली जगह पर रेलवेक 'कप्लर' या आओर कोनो निर्माण सामग्री बनि सकय। एहिमे एक राजनेताक पुत्रीक विशेष अभिरुचि छल, जे तत्कालीन महाप्रबन्धक श्री. गिरीश भटनागरकेँ बेरि-बेरि पूछथि। महाप्रबन्धकक संग वार्ता कय हम एकटा विशेष समिति बनओलहुँ जे हमरा रिपोर्ट करए। एहि समितिमे एकटा मु.सा.प्र. (बिक्रय)क संग रेलवेक दोसर विभागसँ हेड ऑफ डिपार्टमेण्ट (यांत्रिक,

विद्युत, संकेत, दूरसंचार आ इंजिनियरिंग)क प्रतिनिधिक अलावे वित्त आ सुरक्षाक अधिकारी सेहो छलाह। एकर आकलनक लेल सम्मिलित प्रयास भेल आ मूल्य आकलन अधिकारी नियुक्त कएल गेल। एकर डिस्पोजलक लेल विशेष निविदा पत्र बनाओल गेल जाहिमे प्रीविड्डींग सभाक आयोजन कएल गेल। इच्छुक अभ्यर्थी सब सेहो ओहिमे आमंत्रित भेलाह। एकटा वृहत् निविदा पत्र बनाओल गेल। ई स्थल (डालमियानगर उद्योग समूह) पू.म. रेलवेक 'मुगलसराय' मंडलमे अवस्थित छल। तेँ ओतऽ एकटा विशिष्ट पद (उ.मु.सा.प्र. बिक्रय) सृजित कएल जकरा लेल ओतऽ कार्यालय गठित भेल। ओहि परिसम्पत्तिक सुरक्षा आ देखभाल ओही कार्यालयक अन्दर छल। आर.पी.एफ. द्वारा एकर सुरक्षा होबऽ लागल। ओकर डिस्पोजलक बाद प्रक्रियाक लेल प्रणाली बनल जाहिमे वे-ब्रिज, सी.सी.टी.भी. कैमरा आ गेटक निकासक व्यवस्था भेल। ओहि समय रेलवेक डी.जी. (RPF) छलाह वरिष्ठ आइ. पी.एस. अधिकारी रंजीत सिन्हा जे बादमे CBIक डायरेक्टर भेलाह। डालमिया नगर समूहक निष्पादनीय प्लाण्टक परिसरमे चोरीक संभावना बेशी छल। रंजीत सिन्हाजी आर.पी.एफ. द्वारा सुरक्षाक पक्षमे नहि छलाह। कहलनि जे भंडार विभाग अपन व्यवस्था प्राइवेट एजेंसी द्वारा करए। हमर मंतव्य छल जे एतेक पैघ सम्पत्तिक निष्पादनक कठिन काज समयबद्ध होएबाक छल जाहिमे रेलवेकेँ वित्तीय लाभ छलैक तेँ रेलवे बोर्ड (अध्यक्ष)केँ आग्रह केलियनि जे एकर सुरक्षाक पूरा जिम्मा आर.पी. एफ. द्वारा हो। ओहि सम्पत्तिक लग-पासक गाम-शहरसँ चोरीक खतरा छल। जखन मिस्टर हण्डा, जी.एम. भऽ एलाह तँ हमरा संगे ओतऽ 2 बेर दौड़ा केलनि। हमहूँ अपन उ.मु.सा.प्र.क संग दौड़ा कऽ पूरा सम्पत्तिक वीडियोग्राफी कराओल। रेलवे बोर्ड द्वारा आर.पी.एफ. माध्यमसँ सुरक्षाक भार उठा लेल गेल।

पटना केन्द्रीय अस्पतालक निर्माण

रेलवे बोर्डसँ एकटा प्रस्ताव आएल जे पटनामे रेलमंत्री (लालू प्रसाद) एकटा केन्द्रीय अति विशिष्ट अस्पताल बनाबऽ चाहैत छलाह जाहिमे पटनाक सामान्य आदमीक सेहो इलाज भऽ सकय। ई विशिष्ट अस्पताल हृदय रोग आ नेफ्रोलोजीमे राष्ट्रीय स्तरक होइक चाही। ओहि समय महाप्रबन्धक छलाह श्री दीपक हण्ड्रा जनिका किछुए दिनक बाद सदस्य (यांत्रिक) पद पर पदोन्नतिक आशा रहनि।

ओहि समय रेलवे बोर्डक सदस्य या अध्यक्षक पदक लेल पू.म.रे.क सेवा विशिष्ट मानल जाइत छल। एहिसँ पहिने के.सी. जैन जे महाप्रबन्धक छलाह, सीधे सदस्य (स्टाफ) आ तकरा बाद सी.आर.बी., (अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड) बनि गेल छलाह। मात्र

श्री गिरीश भटनागर, जी.एम. स्तर पर स्वैच्छिक अवकाश लऽ लेलनि कारण हुनका सदस्य बनऽमे बहुत अवरोध भेलनि।

दीपक हौंडा (महाप्रबंधक) कठिन अंग्रेजी भाषा आ अव्यवहारिक व्यक्तित्वक पोषक छलाह। ओ जखन संचिका वा पत्रमे अंग्रेजी लिखथि तँ अधिकारी सभकेँ अंग्रेजीक डिक्सनरी खोलि ओकर भाव बूझऽ पड़ैक। हुनकर कथन रहनि जे शब्द एहन लिखी जकर अर्थ कैकटा हो आ स्पष्ट नहि हो। ई बात सभकेँ अनसोंहाँत लगैत छलैक। कारण लोक प्रशासनमे प्रशिक्षण देल गेल रहैक जे शब्द स्पष्ट, सरल आ प्रत्यक्ष-संचारी होएबाक चाही। ओ एक दिन बजाए एकटा वार्ता कयलनि आ कहलथि जे वर्तमान रेलमंत्री (श्री लालू यादव) चाहैत छथि जे पटना केन्द्रीय अस्पतालक एहन व्यवस्था हो जाहिमे विश्वस्तरीय उपस्कर आ सामग्री लागल हो। बिहारक लोककेँ हृदय रोग आ नेफ्रोलोजीलक (किडनी)क उपचारक लेल बाहर नहि जाए पड़नि। ई व्यवस्था मात्र 4-5 मासक अन्दे हो जाहिसँ हुनक सदस्य (यांत्रिक) प्रोन्नतिसँ पूर्व रेलमंत्री एकर उद्‌घाटन कऽ सकथि। ओ इहो कहि देलनि जे एहिमे कोनो तरहक वैधानिक वा प्रशासनिक प्रक्रियाक उलंघन नहि हो।

हम एकटा संयुक्त समिति बनओलहुँ जाहिमे डा. श्री मदन दूबे एम.डी. (मेडिकल डाइरेक्टर) संग वित्त विभागक अधिकारी सेहो छलाह। हमरा लग भारत सरकारक स्वास्थ्य मंत्रालयक स्वीकृत आपूर्तिकर्ताक सूची प्राप्त भऽ गेल छल कारण ओतऽ हमर पुरान सहकर्मी श्री आइ.एस. गर्ग छलाह। ओ सभ केन्द्रीय स्तर पर अस्पताल सभ (AIIMS, RML, LNJP आ ZIPMER)क सर्वेक्षण करैत एकटा आपूर्तिकर्ताक सूची बनौने छलाह जे सर्वमान्य छल। डा. महाडिक छलाह सी.एम. डी. (चीफ मेडिकल डाइरेक्टर) मुख्यालयमे। हुनक ट्रान्सफर बम्बइ होयवाक छल मुदा एहि प्रोजेक्टक कारण रोकल गेल छलाह। केन्द्रीय अस्पतालक हेड डा. मदन दूबे बहुत उत्साही व्यक्ति छलाह। ओ प्रतिदिन हमर बिस्कोमान कार्यालय पहुँचि जाथि आ मेडिकल डिवाइसक खरीदक लेल जोर लगाबथि। हुनका 28 करोड़ रुपयाक खर्च एहि मदमे शीघ्र पूरा करैक छलनि। हम डाक्टर समूहकेँ कहलियनि जे ए.आइ.आइ. एम.एस., आर.एम.एल., एल.एन.जे.पी. जी.बी. पंत आ बम्बइक नामी अस्पतालक सर्वेक्षण कऽ नीक स्तरीय डिवाइसक सूची बनाबथि। हम अपना लगसँ स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकारक अनुमोदित स्पेशिफिकेशन, जे व्यापकता पर आधारित आ सामान्य छल, सेहो दऽ देलियनि। मिला-जुलाकऽ मेडिकल डिवाइसक स्पेशिफिकेशन आ पूर्ण भेण्डर लिस्ट बनि गेल। हम सभटा स्थानीय क्रयनीतिक प्रस्ताव देलियनि जी. एम., इ.सी.आर.केँ, विशिष्ट स्वीकृति लेल। रेलवे बोर्डमे स्वास्थ्य निदेशालय जे

महानिदेशकक अन्दर छल, से कोनो उपयुक्त आ कार्यकारी नीति नहि बनौने छल। जी.एम. महोदय एहि प्रस्तावकेँ एक माससँ बेशी अपन टेबुल पर रखने रहलाह आ ओकर स्वीकृति नहि प्रदान कयलनि। ओ प्रस्ताव व्यावहारिक एवम् आधुनिक उपस्करक खरीदक लेल आवश्यक छल। उदाहरण रूपेँ एकटा नीति छल जे सरकारी खरीदमे गुणवत्ताक निरीक्षण RITES द्वारा हो जे रेल मंत्रालयक उपक्रम छल। हमरा बूझल छल जे RITES मे एहन दक्षताक सर्वथा अभाव छल। बाहरी निरीक्षणकर्ता (T.V, SGS, LLOYD)के रेलवेक निरीक्षणमे प्रवेश नहि छलैक। महाप्रबन्धक महोदयक निर्देश छल जे रेलवे बोर्डक नीतिक अनुसार मात्र RITES द्वारा सभक निरीक्षण हो। हमर स्थानीय नीति जे महाप्रबन्धकक अधिकार क्षेत्रमे छल, प्रस्ताव छल जे एकटा स्थानीय डाक्टरक संयुक्त समिति बनय जे निरीक्षणक शीघ्र निष्पादन करय-कारण (RITES) अपन विवशताक कारण ने तँ निरीक्षण करत आ ने कोनो जवाबदेही लेत। बहुत दिनक बाद जखन जी.एम. महोदयक अनुमोदन नहि भेल तँ हम प्रोजेक्टक हितमे स्थानीय डाक्टरक समिति द्वारा निरीक्षणक स्वीकृत कयल।

एहिसँ स्वतन्त्र समिति द्वारा निरीक्षणक निष्पादन भेल। निविदामे स्वीकृत सूची द्वारा 'सीमित', राष्ट्रीय आ अन्तःराष्ट्रीय निविदा मङ्गाओल गेल। ओकर निष्पादन नीचा स्तरक अधिकारी अपन स्तर पर करथि कारण वित्तीय शक्ति विकेन्द्रित छल। हम मुख्य चिकित्या निदेशक स्तर पर सप्ताहमे एक दिन रिव्यू बैसक करी। मेडिकल, भंडार आ वित्त विभागक बीचक मतभेद दूर करी आ सर्वमान्य निर्णयक लेल प्रयास करी। प्रतिफल भेल जे अस्पतालक 90% उपकरण समय पर प्राप्त भऽ गेल–सेहो विश्वस्तरीय। ज्यादेतर उपकरण जर्मनी, यू.एस.ए. एवम् फ्रांससँ छल जकर इन्स्टॉलेशन केन्द्रीय अस्पतालमे भेल।

ई अस्पताल पटना रेलवेक सटल 'करबिगहिया' क्षेत्रमे बनल। एकरा लेल जे बिल्डिंग, रोड आ परिसर निर्माणक प्रक्रियामे छल से इ.सी.आर.क निर्माण विभाग द्वारा होइक छल जकर मुख्य प्रशासनिक अधिकारी छलाह हमर मित्र श्री मधुरेश कुमार। हुनक विभागक काजकेँ सेहो एक स्तर तक पूरा करैत, अस्पतालक उद्घाटन भऽ गेल। रेलमंत्री एहि समयबद्ध काजक निष्पादनक लेल 40 लाख रुपयाक पुरस्कारक घोषणा कयलनि। भंडार विभागकेँ 16 लाख रुपया भेटल आ 24 लाख इंजीनियरिंग, वित आ मेडिकल डिपार्टमेंटमे बाँटल गेल।

हमर प्रस्ताव छल जे भंडार विभागक भेटल पुरस्कार राशिसँ एकटा कार्पस बना देल जाय जाहिसँ बेर-बेगरतामे कर्मचारी कल्याणक काज होअय। लेकिन स्थानीय यूनियनक प्रस्ताव भेल जे सभ कर्मचारीकेँ Cash (नकदे) देल जाए। अन्तमे सएह भेल।

एहि तरहेँ करबिगहिया पटना रेलवे स्टेशनसँ सटल पू.म. रेलवेक सुपर स्पेशलीटी अस्पताल बनि गेल। ई केन्द्रीय चिकित्साक अस्पतालक रूपमे विशिष्ट सेवा देमऽ लागल।

रेल निरीक्षणक संस्कृति

रेलवेक परिचालनमे निरीक्षणक विविध रूप देखल। भंडार डिपोक सामग्री आ प्रशासनक निरीक्षण मंडलक सामग्री प्रबन्धक करैत छलाह। अन्य विभागक आवश्यकताक मूल्यांकन सतत करबाक छल। बीच-बीचमे चलैत गाड़ीक इंजिनमे ड्राइवरक निरीक्षण फुट-प्लेट द्वारा करैक छल।

एक बेर हम अपन एम्बेसेडरसँ 3-4टा स्टाफ संग विदा भेलहुँ रात्रि निरीक्षण पर। समस्तीपुर होइत सोनपुर डिवीजनक गुमती (एल.सी. गेट) पर पहुँचैक छल। रातिमे गाड़ी अनजान बस्तीसँ गुजरैत गेल। जखन ओ अभीष्ट गुमती लग पहुँचल तँ देखल जे गुमती खूजल छल आ अन्हार गुज्ज छोटकी घरमे एकटा प्रौढ़ सूतल छल। हमर कर्मचारी सब ओकरा उठाय ओकरा पूछऽ लागल जे ओकर पोस्ट, प्रशिक्षण आ कार्य कोना चलैछ। पता चलल जे ओ गेट-मेन नहि छल। गुमती मेनक अभावमे 'पोर्टर' केँ जकर काज सामान उबाक छलैक, ओतऽ बैसा देल गेल छलैक। ओ अपन एल. सी. गेटक दशा सेहो देखओलक। ओकरासँ कनिञे दूर शहरमे बिजली जरैत छलैक मुदा एल.सी. गेट केँ बिजली लाइन नहि देल गेल छलैक। ओ एकटा मटिया तेलक लैम्पसँ अपन काज चलबैत छल, हस्तचालित कलसँ पानि भरैत छल। ओ कहलक जे ओकरा जल्दी निन्न आबि जाइत छैक। ओकरा सब तरहक सलाह दैत, राता-राती हम सब 2 बजे पटना लेल विदा भऽ गेलहुँ। परात होइते डी.आर.एम. (मंडल रेल प्रबन्धक)केँ ओतऽ बिजलीक प्रबन्धक लेल कहलियनि। हुनक आग्रह पर दुइ सप्ताहमे पूरा खण्डमे सोलर लाइटक प्रबन्ध कएल गेल जाहिसँ दिन-राति कखनहुँ बिजलीक अभाव नहि हो।

महाप्रबन्धक, पू.म.रे.क वार्षिक निरीक्षण रेलवेक सब जोनमे निश्चित रूपेँ होइत छल। एहिमे प्रति मंडलक किछु खण्ड निरीक्षण लेल राखल जाइछ। मंडलक सभ ब्रांच (शाखा)क उच्च अधिकारी अपन-अपन विषय प्रस्तावित करैत छलाह। महाप्रबन्धक विशेष ट्रेन सँ मुख्यालयक सभ विभागीय प्रमुखक संग ओहि खण्डक निरीक्षण करैत छलाह। भोरसँ साँझ धरि ई काज चलैत छल। एहिमे रेलवे लाइन, पुल, सिग्नल एवम् स्टेशनक सभ बिन्दुक निरीक्षण होइत छल। एकर प्रतिफल छल जे रेलवेक सब मंडल साल भरि अपन-अपन शाखाक सब विषयक टास्क आ टारगेट बनबैत अपन काज

करैत रहय। ई प्रथा रेलवेमे ब्रिटिश राजक समयसँ चलैत अबैत छल। एहि क्रममे सभ अधिकारीक स्वागत बरियाती जकाँ होइत छलनि।

कतेको खण्डक निरीक्षणक अवसर भेटल आ स्थानीय लोक, शहर आ संस्कृति देखैक अवसर सेहो भेटल। धनबाद मंडलक सब स्टेशनक लग दशरथ माझीक तोड़ल पहाड़सँ निकलैत रेल गाड़ी जे सजाओल गेल छल, से अद्‌भुत। गढ़बा छल एहन इलाका जे दिनेमे नेक्सलाइट रेल-कर्मचारीके बान्हि, टका-पैसा छीनि लैत छल। ओतहि निरीक्षणक क्रममे हमर टोलक एकटा ग्रामीण ओतऽ भेटलाह कामेश्वर मिश्र जे कहलनि जे ओतऽ बड़ दुःख दैत छल ओतुक्का लोक। हुनक बरतन-बासन चोरा लैत छलनि। अपन पैघ अधिकारीकेँ लऽ कऽ ओ आग्रह कैलनि जे हुनका धनबाद स्थानान्तरण कऽ देल जाइन। एहिमे समय लागल, मुदा भऽ गेल। बादमे ओ अवकाशप्राप्तिक बाद अपना गाम जाए रहऽ लागल छलाह।

एक बेर सोनपुर मंडल पर कोनो पुल लग, गामक लोक सब पूरा ट्रेनेकेँ घेरि लेलक आ अपन टीशन पर ठहरावक लेल हल्ला कैलक। ओ सब अधिकारी लोकनि पाग-दोपटा देलनि आ आरती सेहो उतारलनि।

एहि निरीक्षणक अन्तरालमे विशिष्ट जलपान-बादाम, काजू आ अखरोटक संग जूस आ चाहक प्रबन्ध समय-समय पर होइत छल। दोपहरमे कतहुँ टे ्रेन रोकि भोजनक विशेष प्रबन्ध होइत छल। मंडल अधिकारी सब एकर सभक विशेष ध्यान राखथि।

एक बेर जयनगरसँ दरभंगाक बीच मधुबनी-पंडौल-सकरी खण्डक बीच निरीक्षण गाड़ीके स्लो कऽ देल गेल। भवानीपुरक लगीच करीब 20-25 आदमीक समूह ओकरा घेरि लेलक आ अपन माङ्ग प्रस्तावित करऽ लागल। हम नीचाँ उतरि अपन परिचय देलहुँ। हमरो गाम एही पंचायतमे अछि। बेशी लोक हमरा नामसँ पूर्व परिचित छलाह। हम हुनका सभके कहलियनि जे अपन प्रस्ताव आ इच्छा लिखि कऽ दऽ दी आ किछु दिनक बाद सभटा काज पूरा भऽ जाएत।

निरीक्षण दलक सभ प्रमुख अधिकारी हमरा एहि इलाकाक बारेमे पूछऽ लगलाह। हम हुनका सभकेँ 'उग्रनाथ महादेव'क परिचय देलहुँ जतऽ महाकवि विद्यापतिकेँ उगना रूपमे महादेव दर्शन देने छलाह। धीरेन्द्र उपध्यायक स्थल छल। ओ भगवतीकेँ सिद्ध केने छलाह। आदरणीय सुबोध झाजी (आइ.ए.एस./यू.पी.)क गाम। ताहिसँ पूर्व हनुमाननगर जे श्री सी.एस. झा (आइ.सी.एस)क गाम। आ भवानीपुरक पश्चिम ब्रह्मोतरा, जाहि गामक प्रकाशजी (श्री पी.सी. झा) ओहि समय अध्यक्ष (सीमा शुल्क) छलाह। हुनके गामक श्री चन्द्रशेखर झाजी सी.आइ.एल.क अध्यक्ष रहथि। एहि विशेष परिचयसँ सब पी.एच.ओ.डी. आश्चर्यचकित छलाह जे ई इलाका कतेक

पढ़ल-लिखल लोकक अछि। हुनका सभकेँ आश्चर्य लागनि जे एतेक प्रबुद्ध लोकक अछैत बिहार आ मिथिलांचल किऐक पिछड़ल अछि।

वार्षिक निरीक्षणक बाद हम सब समस्तीपुर आबि गेल रही जतऽ मंडल द्वारा एकटा विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम राखल गेल छल। ओहिमे सब शाखाक परिवारिक लोक-वेद अपन सहभागिता देलनि। राजस्थानी, गुजराती आ बंगालक गीत-संगीत। हम हुनका सबकेँ मैथिलीमे गीत-संगीतक आग्रह केलियनि। केओ तैयार नहि भेलाह। अन्तमे हमरा स्वयं मैथिलीक लोकगीत गाबऽ पड़ल—एक-दूटा श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुरक आ अन्य हमर स्वरचित। वातावरण गद्‌गद्‌ भऽ उठल। तकरा बाद सब मंडलमे—मुगलसराय, धनबाद, सोनपुर आ दानापुरमे जखन एहि तरहक कार्यक्रम होइक तँ हमर सहभागिता रहिते छल।

पू.म.रे. हाजीपुरक जीवनचर्या

2006 सितम्बरमे भंडार नियंत्रकक प्रभार भेटलाक बाद हमर क्रिया-कलाप आओर बढ़ि गेल। पाँचो मंडलक आपूर्ति सेवाक संग प्रशासन, रेल परिचालनक निरीक्षण एवम्‌ नीति निर्धारण आ समन्वयक काज बढ़ि गेल। विभागीय अध्यक्षक समयबद्ध सभा, पी.एन.एम. (स्थायी वार्ता मशीनरी) आ (पार्टिसिपेशन ऑफ रेलवे इम्प्लॉयीज इन मैनेजमेंट) पी.आर.इ.एमक बैसकमे उपस्थिति, राजभाषा समिति आ सतर्कतामे सहभागिता बढ़िते गेल। रेलक उद्‌घाटन आ आलंकारिक अवसर पर आत्म दर्शनीयता स्वाभाविके छल। रेलमंत्रीक ओतऽसँ इप्तार पार्टी आ श्रीमती राबड़ी देवीजीक खरनाक नोंत आ हकार आ होली-मिलनक अवसर अबैत छल। राबड़ीजीक सहजता आ शालीनता हमरा नीक लागल।

पू.म.रे. हाजीपुर नव मुख्यालय छल। रेलवे बोर्डक अन्तर्गत करीब 70टा मंडल (डिवीजन) आ 19टा जोनल ऑफिस छल। मंडलक उच्चाधिकारी डी.आर.एम. तथा जोनक सर्वश्रेष्ठ अधिकारी जी.एम. (महाप्रबन्धक) होइत छलाह। 8टा विशेष विभाग (यांत्रिक, विद्युत, संकेत, संचार, अभियंत्रणा, वित्त, मानव-प्रबंध, संरक्षण/सुरक्षा और परिचालन/वाणिज्य) छल। तकर अलावे IT संरक्षा, राजभाषा, चिकित्सा सभक सहयोगी विभाग छल। हाजीपुरमे मुख्यालय बिल्डिंग बनि रहल छल। अधिकारीक लेल बंगला आ घर नहि बनल छल। हम पहिने जी.डी. मिश्रा पथ, न्यू पाटलिपुत्रक रघुवंश अपार्टमेण्टमे रही। 2007मे ओकरे लग गणपति एपार्टमेण्टमे चलि गेल रही। आरम्भमे दू गोटे एके गाड़ीसँ जाइ, जाहिमे बेशी दिन हमर सहगामी छलाह श्री दयानन्दझाजी जे विद्युत विभागक मुख्य अभियंता छलाह। ओ बादमे मधेपुरा प्रोजेक्ट

(रेल कारखाना)क सी.ए.ओ. बनि गेलाह। हुनकर सान्निध्यमे आनन्द भेटि जाइत छल। बड़ सहृदय आ कर्मठ व्यक्तित्व। हमरा भंडार नियंत्रकक पद भेटलाक बाद विभागीय गाड़ी भेटल जकर ड्राइवर 'आनन्द' अपन एकनिष्ठ सेवा देबऽ लागल।

प्रधानमंत्री श्रीअटल बिहारी वाजपेयीक एन.डी.ए. सरकार जे 18.3.1998-22.5.2004 तक कार्यरत रहल ताहिमे रेलमंत्री भेलाह बिहारक श्री नीतीश कुमार जनिक कार्यकाल छल 22.3.2001सँ 22.5.2004। हुनकासँ पूर्व ममता बनर्जी छलीह रेलमंत्री। ओ धनबाद मंडल, जे बेशी रेवेन्यू कमाइ करैत छल (6000 करोड़), तकरा पू.रे. कलकत्ताक संग जोड़ऽ चाहैत रहथि। मुदा कतेको कोशिशक बाद से नहि भऽ सकल। 22.3.2001सँ 22.5.2004 तकक समय बहुत उर्ध्वगामी रहल आ जनतांत्रिक रूपें निष्ठासँ काज होइत रहल। एही बीच कोशी पुलक निर्माण शुरू भेल। मैथिलीकेँ अष्टम सूचीमे सेहो स्थान देल गेल।

3.5.2004 दिन यू.पी.ए. गवर्मेण्ट शपथ लेलक आ प्रधानमंत्री भेलाह डा. मनमोहन सिंह। हुनकर कैबिनेटमे रेलमंत्री भेलाह श्री लालू प्रसाद यादव, 23.5.2004सँ 25.5.2009 तक। ओही समय छपड़ा रेल पहिया RPK कारखानाक मेञो राखल गेल। एक राति मुख्य यांत्रिक अभियंता श्री वी.के. मांगलिक हमरा फोन कैलनि जे छपड़ा कारखानाक प्रस्ताव बनेबाक अछि। प्रस्ताव पर हमरो मंतव्य पुछलनि। हम कहलियनि जे छपड़ामे कारखाना खूजए से नीक, मुदा रेलक पहिया (कास्ट ह्वील)क केन्द्र डब्लू.ए.पी. बंगलोरमे काफी दिनसँ कार्यरत अछि आ ओकर क्षमता 2 लाख ह्वील सालक बनि गेल अछि। कास्ट ह्वीलक गुणवत्ता आ जीवन बढ़ि गेल छैक तेँ एकर माङ्ग भविष्यमे कम हयत। एकरा बदला जँ फोर्ज्ड ह्वीलक कारखाना हो तँ बहुत नीक, कारण जे ई मद चीन, हंगरी आ फ्रांससँ आयात करऽ पड़ैत अछि। दुर्गापुर स्टील प्लाण्ट जे एस.ए.आइ.एल. (SAIL) क द्वारा संचालित छल से 157टा ह्वील (फोरगेड) तैयार करऽमे 3-4 साल लगौलक। तथापि फोर्ज्ड, ह्वील पूर्त्तिक आधार भारतमे नहि बनि सकल। रेल इंजिनमे तथा मेट्रो रेल परिचालनमे एही तरहक पहियाक उपयोग होइत छल। रेल मंत्रालयकेँ ततेक धरफरी छलैक जे एहि पर विचार नहि भेल। रेलमंत्रीक त्वरित प्रसन्नता होइक तेँ डब्लू.ए.पी. बंगलोरसँ ड्राइंग मङ्गाए (ग्रिफिन) जर्मनीक टेक्नोलॉजी पर बनल कास्ट ह्वीलक कारखानाक प्रस्ताव अनुमोदित भेल।

दूटा आओर पैघ प्रोजेक्ट जे बिहारक लेल भेटल से छल मधेपुराक विद्युत रेल कारखाना आ मढ़ौराक डीजल इंजिन कारखाना। एकरहु लेल प्रस्ताव ओही समयमे बनल। ई दुनू कारखाना पी.पी.पी. (पब्लिक प्राइवेट पार्टनशीप) मोडमे 2015मे

आरम्भ भेल जखन प्रधानमंत्री बनलाह श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी। मधेपुरामे विद्युत रेल इंजिन 'ALSTOM' (अल्सटाम) बनौलक आ मढ़ौड़ामे डिजल इंजिन USAक GE (जेनरल इलेक्ट्रिक)।

20.5.2009सँ मार्च 2011 तक रेलमंत्री रहलीह प. बंगालक तृणमूल काँग्रेसक नेतृ ममता बनर्जी। हुनका समय दुइटा निविदा ह्वील प्रेस हाइड्रोलिक उपकरण आ लोको ट्रनिंग सिमुलेटरक निर्णय रेलवे बोर्डक कोफमोव संस्था द्वारा भेल। ई संस्था छल 'सेण्ट्रल आर्गनाइजेशन फॉर मोडर्नाजेशन ऑफ वर्क्सशॉप (COFMOW)'। एकर ऑफिस तिलक ब्रिज दिल्लीमे छल। ई रेलवेक एक विशिष्ट संस्था छल जे प्रोजेक्ट सभक कैपिटल गुड्स (मशीन एंड पार्ट्स) खरीद करैत छल। सभ जोन आ 62 विनिर्माण इकाइसँ डिमांड संकलित कऽ अपन मांग मात्र एतऽ पठाबय आ एतऽसँ केन्द्रीय खरीद होइत छल। एहि दूटा टेंडरमे निविदा निर्णायक समिति आ अनुमोदनकारी अधिकारी सबमे मतभिन्नता भऽ गेल। प्रस्ताव जखन रेलवे बोर्ड पहुँचल तखन तीनटा प्रस्ताव देल छल जाहिमेसँ एक मंतव्यक स्वीकृति दैक छल। रेलवे बोर्डक समिति एहि भिन्न मतिक प्रस्तावकेँ देखि अपन निर्णय देलक जे ओहि निविदाके रद्द कयल जाए। निविदा खुलैक 2 साल बाद ममता बनर्जी लग जखन ओ प्रस्ताव पहुँचल तँ ओ विस्मृत भऽ गेलीह। ओ अपन शासनमे रेलवेक इंजिन ड्राइवरक ट्रेनिङ पर जोड़ दैत छलीह। हुनकर इच्छा रहनि जे एहि तरहक यंत्र शीघ्र आबय जाहिसँ ड्राइवरके उचित प्रशिक्षण भेटैक। एहि तरहक निविदा रद्दक प्रस्तावसँ पीड़ित भऽ ओ निर्णय लेलनि जे कोफमोवमे प्रतिष्ठित सभ उच्च अधिकारीक ट्रान्सफर कऽ देल जाए। ओहि समय रेलवेक सदस्य (यांत्रिक) छलाह श्री प्रवीण कुमार जे पहिने पू.म.रे.मे मुख्य यांत्रिक अभियंता सह मुख्य प्रबन्धक पद पर काज केने छलाह। ओ हमरा बढ़ियाँसँ जनैत छलाह। मशीन खरीदक हमर पूर्व अनुभवसँ विशेष रूपेँ परिचित छलाह।

हमरा राता-राती पटनामे खबरि भेटल जे हमर ट्रान्सफर दिल्ली भऽ गेल। हमरा विश्वास नहि होइत छल। रेलवे बोर्डक उच्च अधिकारी सब पहिने कहि देने छलाह जे हमर पदस्थापन दिल्ली नहि भऽ सकत कारण जे हमर स्तरक कोनो अधिकारी हाजीपुर जाइक लेल तैयार नहि छल। हमर पदस्थापन काफमोक भंडार नियंत्रक पद पर भऽ गेल तकर अपेक्षित आदेश रेलवे बोर्डसँ दोसरे दिन आबि गेल। बेशी लोकके बुझाइत छलनि जे हम पटनामे रहि कोनो राजनीतिक प्रभाव देखओलहुँ, तेँ दिल्लीक पद भेटल। हम चुप्पे रही कारण कोनहु राजनैतिक पैरवी हमर स्वभावसँ बाहर छल। अपन काजसँ, व्यवहारसँ आ कौशलसँ जे भेटल सएह हमर सम्बल छल।

दिनांक 19.5.2010 हम काफमोमे रिपोर्ट केने रही। ओहिठाम टेण्डरक निर्णय 9 माससँ डेढ़ सालमे होइत रहय। पुरना संचिकाक अध्ययनसँ लागल जे ओतऽ प्रोक्योरमेण्ट सुधार (क्रय नीति सुधार)क आवश्यकता छल। ओतुक्का प्रमुख प्रशासनिक अधिकारीक सहयोगसँ एकटा 3 सदस्यीय समिति बनल जाहिमे हमर भूमिका मुख्य छल। दोसर सदस्य इलेक्ट्रिकलक श्री R.K. Rai आ वित्त विभागक हेड अधिकारी (श्री पी. के. सिन्हा) छलाह। हम सब प्रतिदिन विमर्श करैत अपन रिपोर्ट लिखलहुँ जे रेलवे बोर्ड द्वारा मान्य भेल। टेण्डरक नियम आ शर्त्तमे सुधार कैल गेल। टेण्डरक निर्णयक सीमा 3 माससँ 6 मासक अन्तर्गत करैक सुझाव देल गेल। ई व्यावहारिक रूपेँ लागू भऽ गेल।

किछु दिनक बाद दिनांक 20.01.2011 कऽ हमर ट्रान्सफर उत्तर रेलवे भऽ गेल जे हम नहि चाहैत रही। ओतऽ हमरा अवकाश प्राप्त (30.6.2012)सँ पूर्व विभिन्न पद पर काज करबाक मौका भेटल। बनारससँ लऽ कऽ जम्मू कश्मीर आ श्रीनगर तक क्षेत्र छल। पाँचो मंडल (दिल्ली, लखनउ, फिरोजपुर, बनारस आ मोरादाबाद) सभक भ्रमण आ निरीक्षणक मौका भेटल। सभ मंडल अपन-अपन अलगे प्रकृतिक छल। विभिन्न प्रदेशक संस्कृतिमे पलल छल। लखनउ प्रीटिंग प्रेस, जगाधारी (यमुना नगर)क रेलवे वर्कशॉप अमृतसरक बैगन वर्कशॉप इत्यादिक क्रिया-कलापमे योगदान देबाक मौका भेटल।

ओही बीच 3 सप्ताहक विशिष्ट प्रशिक्षणक लेल रेलवे स्टाफ कॉलेज गेल रही जतऽ हमर प्रपत्र 'सरकारी क्रयमे प्रतिस्पर्धा'क विशेष रिपोर्ट पर खूब चर्चा भेल। हमरा लागल जे एहि विषयक आगाँ सेहो अध्ययन कएल जा सकत। एहि विषयक एक प्रदर्शन हम सी.सी.आइ.क अध्यक्ष लग सेहो देलहुँ जे PPG (Public Procurement Group) आ CUTS (Consumer Unity & Trust Society)क सहयोगसँ देल गेल।

***

अध्याय–12

पारिवारिक जीवन

दाम्पत्य जीवन

प्रेम, त्याग, समर्पण आ सामञ्जस्य दाम्पत्य जीवनक दिव्य अनुभूतिक आधार-स्तम्भ होइछ। जीवनी-शक्ति आ जीवनक सामर्थ्यसँ समृद्धिक लेल प्रयासरत लोक कतेको रस्ता पर चलैत रहैत अछि कारण मंजिल अस्पष्ट रहैछ।

हमर पत्नी, अंजीराक तेरहम सालक 'मुग्धा' वयस आ हमर दिशाहीन युवा उर्जाक अठारहम साल, हमरा दाम्पत्यक आसठि पर आनि देने छल।

विवाहक लेल हमर विरोध, सामाजिक बन्धन आ परिवारक लिलसाक तर दबि गेल। हमर विवाह धरफरमे ठीक भऽ गेल छल–13.7.1970 तारिख (सोम दिन)। विवाहक निर्णय आ विवाहक मुहूर्त्तक बीच मात्र दुइ दिनक अन्तर छल तेँ बहुत गोटे सहभागी नहि भेलाह। टाटानगरमे रहैत सलिल बहिन (नूनू ककाक पुत्री) नहि पहुँचि सकलीह। नूनू कका (डा. शम्भूनाथ चौधरी) हमर सासुरक परिवारक मुखिया छलाह। सलिल बहिनक देरीसँ उपस्थितिक कारण छोटकी काकी (केदार बाबूक पत्नी) 'विधकरी' बनलीह। केदार बाबू ओहि समय अमेरिकामे छलाह। छोटकी दीदीटाटा नगरसँ दू दिन बाद अएलीह। हुनक पति इन्दुशेखर झा (पीसा) इंडियन नेशनक प्रतिनिधि छलाह टाटानगरमे।

आदरणीय प्रो. (डा.) रामचन्द्र झा (विज्ञान महाविद्यालयक रसायन विभागक व्याख्याता) हमरा विज्ञान महाविद्यालयमे पढ़ौने छलाह। हुनक पत्नी शुभ बहिन सेहो पटनासँ पहुँचि गेल छलीह। अंजीराकेँ बुझाबऽ-सुझाबऽमे हुनक विशिष्ट भूमिका रहल छलनि।

विवाहोपरान्त जे चारि दिन बीतल से अविस्मरणीय छल। नव वातावरण आ अभिन्न अनुभव हमर पत्नीक उज्जर दप-दप गात आ मौन व्यक्तित्व हमर भटकैत

उर्जाकेँ शान्त कऽ देलक। कन्या निरीक्षण समय हुनकर सौम्य मुख-मंडल कोहबरमे लजाइत लाल साड़ीक घोघ तरसँ उद्‌भासित होअऽ लागल।

चतुर्थीक दिन तक प्रति राति हमर पत्नीकेँ कोहबरक घरमे जतऽ हम पड़ल रही, शुभ बहिन आ किछु जाग्रत युवा स्त्री द्वारा हमर पत्नी, अंजीराकेँ ठेलि जाइत छल आ केबार बन्न कऽ देल जाइत छल। घरमे प्रवेश लैते हमर पत्नीक बकार बन्द भऽ जाइत छल। कचहरीक इजलास जकाँ जवाब भेटए—हँ या नहि। खोजपूर्ण प्रश्न फेकि हुनकर उतारा लेबक प्रयास कैलहुँ मुदा बड्ड कम सफलता भेटल। तीन-चारि दिनक बाद ओ हमरासँ बाजऽ लगलीह। ओहिसँ पहिने कठमूरी देने ठाढ़ि रहैत छलीह आ प्राथमिक विद्यालयक विद्यार्थी जकाँ जे कहियनि से करथि। चारि दिनक बाद हम बनारसक यात्रा लेल विदा भेलहुँ। किछु दिनक बाद जखन घूरि आएल रही तँ फेर गामसँ नेहराक लेल विदा भेलहुँ।

गामक रिक्शा सकरी तक छोड़ि देलक। लाइन टपलाक बाद दक्षिण बाट पर नेहराक लेल रिक्शा पकड़लहुँ। दहौड़ा, नारायणपुर, कबै आ राघोपुर बीचमे पड़ैत रहल। जँ-जँ रिक्शा आगाँ बढ़ैत रहल हमर मोन पल्लवित होइत गेल। पुबरिया बसातक सिहकैत स्पर्श। जेना पूरा यात्रा पद्यमय भऽ गेल। रिक्शे पर अँसुआ कऽ पड़ि रहल रही—उठलहुँ तखन, जखन रिक्शा हमर सासुरक दलान पर रुकल।

एकरा बाद थोड़ेक दिन धरि सासुरक आनन्द भेटल—दही-दूध आ ड्राइ फ्रूट नाश्ता, विशुद्ध भोजन, पाहुन जकाँ विराम आ साँझ खन सारि सभक संग रङ्ग-रभस। एहि तरहक वातावरण अन्तक कल्पनो नहि करैत रही कि ओ दिन आबि गेल जखन गामसँ कहा पठाओल गेल जे “कओलेज जयबाक समय आबि गेल।”

हम बनारस जाए अपन पढ़ाइमे ओझरा गेलहुँ। कैक दिन तँ किलासेमे सूति रही। मोन गामे पर छल। मौरवी छात्रावासमे सङ्गी-साथी सभसँ पूरा खुलल नहि रही। एकटा हरियर ‘अन्तर्देशीय पत्र’ आनि पत्नीक नामे चिट्ठी लिखलहुँ। भावपूर्ण वाक्यक अभिव्यक्ति आ खसा देलहुँ होस्टलक गेट पर राखल पत्र- मञ्जूषामे। प्रत्युत्तरक उम्मीदो नहि केलहुँ।

किछुए दिनक बाद बी.एच.यू.क परिसरमे छात्र नेता कपूरियाक हत्या भऽ गेलैक। वाइस चांसलर श्रीकालू लाल श्रीमालीजी बी.एच.यू.क सभ सङ्काय केँ बन्द कऽ देलनि। अनिश्चितकालीन हड़ताल (SINE-DIE) भऽ गेल। सभ छात्रावासकेँ खाली करा देल गेल। छात्र सभकेँ विद्यार्थीवला पास भेटल। हमरा नीक लागल। हम तुरत रेल टिकट लऽ बनारससँ गाम पहुँचि गेलहुँ।

गाम, नेहरा (सासुर) आ बनारसक बीच ई यात्रा चलैत रहल तावत तक यावत

हम 28.2.1971 (दुरागमनक दिन)सँ किछु पहिने नेहरा पहुँचि गेलहुँ। नेहरासँ दुरागमनक साँझ, उदासी-समदाओन सुनैत हमर आँखि डबडबा गेल छल।

हमरा गाम अयलाक बाद हमर पत्नीक समय हमर पुरना आङनक पलानी घरमे बितैत रहल। ओकरा पाछाँ दूटा लतामक गाछ छल जे बड़ झमटगर। ओहि पर छोटका बच्चा सभक विशेष ध्यान रहैक। हमर भातिज भगवान बाबू आ लम्बो बेशीकाल लताम तोड़य जाइत छल। हमर पत्नीक नाम हमर माए 'काली सुन्नरि' रखलनि आ धिया-पुता सभमे ओ लाल काकीक नामे प्रचलित भऽ गेलीह। हम एसगर भाए छी तेँ देओरक अभाव रहलनि। हमर अपने पिसियौत 'नागी' बड्ड छोट छल। जखन कहियो छोट बच्चा सब लतामक गाछ पर चढ़ि जाए तँ ओकर माए सभ (हमर भौजी सब) कहथिन्ह जे—"लाल काकी अबै छौ।" बच्चा सभ धाखसँ पड़ा जाइत छल। ओना भगवान बाबू दू-तीनटा लताम आनि बहटारए आबि जाइत छल—"लाल काकी खा कऽ देखियौ।" सभक खिधांस बन्द भऽ जाइत छलनि।

किछुए दिनक बाद हमर दाइ (काकी) नवका कोठाक पुबरिया घरमे कनियाँक बिछाओन लगा देलथिन। पछबरिया घरमे किताक-कॉपी आ पेटी-बाकस सभक भंडार। खेनाइ-पिनाइ पुरना आङनसँ आबि जाइत छल। हम बेशीकाल पुबरिए घरमे रहैत छलहुँ। बड़का दलान जे आधा फर्लांग पर ततहु कम्मे जाइ, कारण ओतऽ वरिष्ठजनक खेल 'तास' जोतले रहैत छल, जाहिमे हमरा कोनो रुचि नहि छल। हमर पत्नी धीरे-धीरे हमर माए, दाइ आ काकी सभक सङ रितिया गेलीह। पूरा टोलमे हुनक सत्कार होइत रहल।

हमरा बनारस प्रवासक समय हमर ससुरजी अंजीराक लेल बिस्कुट, घृतकुमारी तेल, साबुन आ किछु कैञ्चा सेहो पठा देथि। हम गामसँ अबैत काल 'स्टाम्पवला खाली लिफाफ' राखि दैत छलियनि जारि सँ जे कि कोनो चिट्ठी वा समाद देबाक होइन तँ काज दिअए।

हमरा सभक दाम्पत्य-जीवन लऽग-दूर रहैत, ऊँच-नीचक बीच खधियाकेँ भरैत आ हमर पत्नीक रूढ़वादिता, व्यक्तिगत जिद्द आ हमर आमदसँ बेशी खर्चक प्रकल्पक सङ्ग चलैत रहल। हमरा सभक चिन्तनक धरातल बहुत अलग रहल। हमरा किताबसँ प्रेम छल तेँ विभिन्न विषयक (साहित्य, दर्शन, इतिहास, मनोविज्ञानक अलावे टेक्नालॉजी, प्रबन्ध-विज्ञान आ आर्थिक नीति) किताब कीनि लैत छलहुँ अथवा जे उपहार स्वरूप भेटए से घरमे सजा दी। हमर पत्नीक सभसँ पैघ दुश्मन 'किताब' जे हुनका कहियो ने सोहयलनि। ओ मोट आ पातर इएह दुनू भागमे किताबक आकलन करथि। पातर किताबकेँ नीचा आ मोटके तेहन ठाम ऊपरसँ

झाँपि देथि जे ओ पुरान सामग्री सन ओतहि पड़ल रहि जाए। हमरा संग सतत झगड़ा करथि। जेना 'गामक लेखे ओझा बताह' आ ओझाक लेखे गाम बताह'।

कोनो तरहक विषयक लेल उपजल गृह-युद्धमे सामञ्जस्य आनबाक प्रयासमे धनुष बेशीकाल लिबले रहैत छल। हुनक बाणक दिशा सतत आरोही रहैत छल। अत्यन्त दुर्दशाक बाद हमरा ओकरा मोड़ऽ पड़ैत छल।

समाजक लेल कर्त्तव्य-बोधमे आ पारिवारिक प्रकल्पमे ओ हमरा सङ्ग हमर छोट भाए जकाँ छथि। तेँ हमर बहुत भार उठा लेने रहथि। शैक्षणिक डिग्री नहिञो रहैत, जीवन-यात्रामे पैघ नगर (बम्बइ, दिल्ली, कलकत्ता इत्यादि)मे रहैत आ विभिन्न समुदायक संग गप-सप करैत आ महानगरीय संघर्षक सामना करैत हुनक व्यवहार आ आत्म-विश्वास प्रगतिशीलरूपेँ परिष्कृत होइत रहल।

शुरूमे हवाइ यात्रासँ हुनका डऽर लगैत छलनि। एक बेर हम सब एल.टी.सी. पर सवार, गुवाहाटी गेल रही। आपसीक टिकट छल गुआहाटीसँ कलकत्ता लेल, इंडियन एयरलाइन्समे। कलकत्ताक बाद पुनः ट्रेनसँ यात्रा छल। स्मिता आ सौरभ (प्रशान्त) दुनू सङ्गे छल। सौरभ (प्रशान्त) अपन माएसँ मजाकक क्रममे कहलकैक– "मम्मी, हवाइ जहाज ऊँच अकाशमे लऽ जाएत, ओतऽ हवा नहि भेटतौ।" स्मिता सेहो ओहिमे अपन सहयोग देबऽ लागल। दुनू मिलि माएक मोन तेना ने बदललक जे हमर पत्नी 'हवाइ जहाज'क टिकट रद्द करैक जिद्द करऽ लगलीह।

हम हुनक जिद्दक कारण साँझ खन गेलहुँ इंडियन एयरलाइन्सक ऑफिस। ओहि समय कम्प्यूटरक प्रचलन नहि छलैक। ने मोबाइल फोनक कोनो व्यवस्था। मोबाइलक उपयोग तँ 21म शताब्दीक उपलब्धि छी। हम जखन एयरलाइन्सक ऑफिस पर पहुँचलहु, तखन टिकट काउण्टर बन्द भऽ गेल छलैक। हम हताश भऽ गेल रही। भेल जे भगवान जे लिखने हेताह से हैत। धीरे-धीरे हमर पत्नी (अंजीरा) सेहो मानि गेलीह आ कहलनि जे जखन कोनो आन उमीद नहि तँ 'हवाइए जहाज'सँ यात्रा करब। हम सब जखन दोसर दिन गुवाहाटी एयरपोर्ट पहुँचलहुँ आ हमर पत्नी ओहि वातावरणमे अपन दुनू बच्चाकेँ प्रसन्न होइत देखलनि तँ ओहो शान्त भऽ गेलीह। जखन हवाइ जहाज उड़ि कऽ अकाशमे पहुँचल, तँ सभ गोटे अचम्भित, प्रसन्न आ आलोकित रही।

तकरा बाद तँ कतेको बेरि हवाइ-यात्रा कयलनि हमर पत्नी। आब तऽ ट्रेनसँ बेशी हवाइ जहाजेकेँ अपन यात्रामे प्राथमिक दैत छथि।

आरम्भमे दिल्ली आ बम्बइक यात्रा हम सभ रेलवेक तृतीय श्रेणीमे करी–पूरा परिवार। (निशान्त) सागरक जन्मसँ पहिने स्मिता आ सौरभ सेहो ओहीमे यात्रा

करय। ट ्रेनक ए.सी. वर्गक टिकट बड़ महग होइत छलैक। निशान्त (सागर)क जन्मसँ पहिने हम रेलवे बोर्डमे प्रतिष्ठापित भऽ गेल रही। सात साल तक रेलवे बोर्डक सेवा करैत पू.रे. कलकत्ता चलि गेल रही। हमर सेवा 'रेल अधिकारी'क रूपमे छल। तेँ सतत ए.सी. (2 या 1)मे चलैत रहलहुँ। सागर (निशान्त) कहियो शयन क्लासमे यात्रा नहि केलक। जखन हम तीनू संतान स्मिता, सौरभ (प्रशांत) आ सागर (निशान्त) संग ट ्रेनमे यात्रा करी तँ स्मिता आ सौरभकेँ होइक जे ए.सी.क डिब्बा चारू दिशसँ मूनल किएक अछि आ हवा कनियो किएक ने अबैत अछि। सागरकेँ एक बेर तृतीय श्रेणीमे पठेबाक मौका भेटल। ओ ट्रेनसँ उतरि गेल जे ए.सी. कहाँ अछि। हमर पत्नी दुनू द्वन्द्वकेँ सम्हारैत रहलीह।

स्मिताक विवाह

पटनामे हमर डेरा रघुवंश एपार्टमेण्ट, जी.डी.मिश्रा पथ, न्यू पाटलिपुत्रामे छल। ई घर हमर एक परिचित अधिकारी रवि शेखर सिन्हा, उ.सा.प्र. (पू.रे.) कलकत्ताक माध्यमे भेटल छल। ओतऽसँ प्रतिदिन हाजीपुर जाइ। दिन भरि हाजीपुर-पटनाक दू-तीन फेरा लागि जाइत छल। दिल्लीमे हमर पत्नी एकसरे धिया-पुताक संग रहैत छलीह। स्मिता आ सौरभ छेटगर भऽ गेल छल। स्मिता एम.बी.इ. केलाक बाद आइ.एम.आर.बी.मे कार्यरत छल। सौरभ एन.एस.आइ.टीमे बी.टेक करैत छल आ एम.बी.ए.क लेल तैयारीमे रहय। 'सागर' डी.पी.एस. द्वारका जाइत छल। ओकरा हमर पत्नी विकासपुरीमे बस पर बैसा देथि आ घर आबि जाथि। जतेक बेर गप्प हो तँ 'स्मिताक विवाह'क चर्चा करैत जोड़ करथि। हम बीच-बीचमे ड्यूटी बनाय दिल्ली चलि जाइ। संयोगसँ गौहाटीक मित्र सब (जाहिमे मनोरंजनजी, डिप्टी डायरेक्टर, सी.डब्लू.सी., श्रीअशोक चौधरीजी एवम् पी.सी. राय छलाह)क सहयोगसँ एकटा कथा ठीक भेल। विनोदानन्दझा (विनोद बाबू) वालफोर्ड मोटरमे जी.एम. छलाह। हुनक छोट पुत्र ''विश्वजीत''क संग विवाहक प्रस्ताव भेटल। विनोद बाबू बड़ क्रियाशील आ भद्र लोक। लालबाग दरभंगामे घर छलनि जतऽ ओ सभ भाए कोइलखसँ आबि बसल छलाह, त्रिवेणी निवासमे। प्रथमहि भेटमे प्रभावित कयलनि एवम् बिना कोनो माङक विवाहक लेल स्वस्ति दऽ देलनि। हमर पत्नी सुनलनि तँ आँखिसँ खुशीक नोर खसऽ लगलनि जे भगवती कामाख्या कृपा कऽ देलनि। हमरा अपन सीमित आमदनीमे एहन काज भऽ जाएत तकर आशा नहि छल। हम अपन ऑफिसमे जी.पी.एफ. एकाउण्टसँ टाका निकालबाक दरखास देलहुँ आ विवाहक इन्तिजाम शुरू कऽ देलहुँ। ऑफिससँ फुरसति नहि हेबाक कारणे पटनेमे विवाहक कार्यक्रम राखल–दिनांक 11.06.2004 कऽ।

ऑफिससँ छुट्टी मात्र एक दिनक भेटल जाहि दिन विवाहक मुहूर्त छल। मुदा रेलवेक अधिकारी-कर्मचारी सभक विशेष सहयोग भेटल विवाह स्थल आ बरियाती स्थल तकबामे। स्थानीय परिचित सभ सेहो मदति केलनि। हमर मझिला सार 'झलकू'जी (अमलेन्दु कुमार चौधरी) आ आदरणीय प्रो. तिरपित बाबू (पूर्व प्राचार्य बी.एस. कॉलेज, दानापुर)क संग हुनक बालक राजीव काफी सक्रिय रूपेँ छलाह। हमर गाम 'मेघौल'सँ एकटा पूरा बस आएल छल जाहिमे गाम-परिवारक सब गोटे आएल छलाह।

हमर बेहट गाँववला मसियौत 'शिव' भाइ (श्रीशिवशंकरझा) जे राधा बाबूक डेरा पर रुकल छलाह, ओ हुनको नोति देलथि। संगहि निमंत्रण पत्र रेलमंत्री (लालू प्रसाद)क ओतऽ सेहो पठा देलथि। हुनक पत्नी राबरी देवी ओहि समय बिहारक मुख्यमंत्री छलीह। ओहि दिन (11 जून, 2004) लालू प्रसाद, रेलमंत्री अपन जन्म दिन मनबैत छलाह, तेँ ओ सब नहि अयलाह। राधा बाबू भेलाह श्रीराधानन्दनझा (पूर्व स्पीकर, बिहार विधान सभा) जे ओहि समय रेलमंत्रीक विशेष सलाहकार छलाह। हमरा फोन पर कहथि—"हम किछु आर.जे.डी.क कार्यकर्ता सभकेँ पठा रहल छी, मुदा ओकर काज तर्कसङ्गत होइक तखनहि करबैक"। हुनका संग हमरा व्यक्तिगत भेट नहि छल। मुदा एतबा भेल जे रेलमंत्रीक नामसँ जे विघटनकारी लोक सब आबय से बन्न भऽ गेल। रेलमंत्री वा कोनो राजनैतिक व्यक्तिक प्रभाव हमरा पर नहि पड़ल। हम आश्वस्त भऽ सभकेँ निपटारा करैत रहलहुँ।

विवाहक साँझ। दरभंगासँ बरियाती दिनेमे पहुँचि गेल। हुनका सभक रहैक इन्तिजाम 1, पाटलिपुत्र कॉलोनीमे छल। विवाह स्थल, कनिञे दूर 131, पाटलिपुत्र कॉलोनीमे। सरियातिक लेल पाटलिपुत्र कॉलोनीक सहयोग अस्पताल लग लाल कोठीमे छल। हम अपने रही रघुवंश एपार्टमेण्ट, न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी। उ.मु. संचार अधिकारी (अरुण कुमार) अपन टीमकेँ बाकी-टॉकी लेने तैयार केने छलाह जाहिसँ चारू स्थलमे संचार सेवा उपलब्ध छल।

स्थानीय लोक सब उत्साहित भऽ उपस्थित छलाह। हमर पूर्व परिचित श्रीमंत्रेश्वर बाबू जे ओहि समय आइ.ए.एस.सँ निवृत्त भऽ कैट, पटनाक वाइस चेयरमैन छलाह, 7 बजे साँझे पहुँचि गेलाह। हमरा विवाह स्थल पर पहुँचबासँ पूर्व ओ उपस्थित भऽ गेलाह। ओतहि श्रीके.एम. लाल, आइ.ए.एस. (पश्चिम बंगाल) जे अवकाश प्राप्त केलाक बाद गुरुग्राम (पालम)मे छलाह, सेहो जल्दीए आबि गेलाह। कतेक एम.एल.ए., एम.एल.सी. सेहो पहुँचि गेलाह। आदरणीय तारा बाबू अधिवक्ता, उच्च न्यायालय पटना, कहलनि जे अहाँके मात्र 6 मास भेले अछि पटना एना, ताहिमे एतेक गोटेक संग आपकता कोना भऽ गेल। हमरा जवाब किछु नहि फूरल। हमर महाप्रबन्धक ए.

के. वार्ष्णेयकेँ श्री सुरेश बाबू, सी.जी.एम. टेलकमसँ रुड़की विश्वविद्यालयसँ निकललाक बाद कतेको वर्षक बाद एतहि भेट भेलनि। बिहार सरकारमे कार्यरत श्री सुरेन्द्र यादव जी अपन टीमक संग मैथिली गायनक विशेष मंच बनौलनि। खूब नीक गीत-नाद भेल। एहिमे समियाक वीर बाबू (श्री विरेन्द्र मिश्र)क विशेष योगदान छल। आदरणीय तिरपित बाबू (अवकाश प्राप्त पिंसपल), बी.एस. कॉलेज, दानापुर, बरियातीक स्वागतक नेतृत्व कैलनि।

स्मिताक दुरागमन हमर गाम 'मेघौल'सँ भेल। ओतऽसँ दरभंगा चलि गेल। तत्पश्चात् विश्वजीत आ स्मिता बम्बइ चलि गेल रहथि।

सौरभ पटनासँ दिल्ली आबि गोवा चलि गेल जतऽ ओकर प्रवेश गोवा इन्स्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेण्ट (GIM)मे भेल रहैक। हम अपन कार्यकलापमे हाजीपुरमे व्यस्त भऽ गेलहुँ।

दाइक दुनिया

हमर काकी (बाल विधवा) दाइक नामे पूरा गाममे लोकप्रिय छलीह। 'दयावती' छल हुनक नाम। हमर ककाक आकस्मिक देहान्त भऽ गेल छलनि। हम नहि देखने छलियनि। दाइ हमरा जन्महिसँ पोसैत रहली। हमरा माइयोसँ बेशी मानैत छलि। ओ हमरा जन्मक लेल कबुला-पाती करैत रहली आ हमर माएक गार्जियन छली। पटना आ बनारसमे जखन हम पढ़ैत रही तँ ओ बीच-बीचमे गामसँ चूड़ा आ सनेस अनैत छली। भवानीपुर उग्रनाथ बाबाक मंदिरसँ जखन अबैत छली तँ लोटासँ रसगुल्ला निकालि पहिने हमरे दैत छलि।

हुनका रेल यात्रा दुरूह नहि लगैत छीन। समूहमे स्त्रीगणक नेतृत्व करैत 'सिमरिया घाट', बाबा बैद्यनाथ धाम आ हरिद्वार इत्यादिक तीर्थाटन करैत छल, ककरो जँ दरभंगा अस्पतालमे किछु काज होइक तँ ओ पाइ-कैंचा लऽ कऽ तैयार रहैत छली। दरभंगाक बेशी डाक्टर हुनका चीन्हि गेल छलाह। गाँवमे कोनो बेटीक बियाहमे आर्थिक कारणे बाधा अबइ तँ ओ अप्पन संचित टाका आ हमरा घरक 'सोनासँ' ओकर सहायता करैत छलथिन। कोनो बेटीक महफा उठैमे हुनका अछैत दिक्कत नहि होइक।

एक बेर जखन ओ आङनमे खसि पड़ली तँ हड्डी टूटि गेली छलनि। मनीगाछीक स्थानीय डाक्टरक क्लिनिकमे पड़ल रहथि। हमरा बम्बइमे खबरि भेटल छल। हम गाम आबि हुनक इलाजक लेल मनीगाछी गेलहुँ। पुनः गाम आनि हुनक इलाज एतहि कराओल। एक दिन हल्ला भऽ गेल जे 'दाइ' नहि रहलीह। सौंसे इलाकासँ लोक सभ आबऽ लागल। कतेको तँ सिरमामे 50/-रु., 20/-रु. राखि भगवानसँ

प्रार्थना करैत रहल। पूरा गाम द्रवित भऽ गेल। भगवानक कृपासँ दाइ हमर बचि गेल। हुनका मात्र एकटा ठेङाक सहारा लागि गेलनि। हम सब हुनका लेल एकटा विशेष खबास रखलहुँ। 'कुमर मंडल' छोट छल। ओकरा कलम परक घराड़ीक जमीन देलिऐक आ मासिक किछु टाका। दाइक सेवा राति-दिन आरम्भ भेल।

जखन हम रेलवे बोर्डमे निदेशक (रेल भंडार) रही 2002मे, तखन दादा सेहो बीमार भऽ गेल छलाह। ओना जखन हुनकर आँखिक मोतियाबिन्दक सर्जरी दिल्लीमे भेल रहय, तखन ठीक छलाह। दाइ कहियो-कहियो हमरा माएसँ झगड़ा करैत छली आ भिन्न भऽ अपन भानस करथि। हमर दादाक अवसान (फरवरी, 2004)क बाद ओ पुनः घरक संचालन करऽ लगली। 'कुमर' आब पूर्णतः दाइक सेवामे लागि गेल।

हमरा गामक गुलाब यादवजी हमर पिताक मित्र छलाह। हुनकर परिवारसँ बोतल यादव यदा-कदा हमर पिताक सेवा करैत छलाह। महींस सेहो पोसैत छलाह। दादा जखन दूध लेबा लेल जाइत छलाह तखन अपन डोलसँ एक गिलास दूध निकालि बोतलक छोट बालक 'मनोज'केँ पिया दैत छलाह। दादा ओकरा बड़ मानैत छलथिन। एक बेर जखन दादा सज्जा पकड़ि नेने छलाह तखन कहलनि जे मनोज एखन बम्बइमे कोनो छोट-छीन काज करैये। ओकर परिवारकेँ बड़ कष्ट छैक तेँ ओकरा कोनो नोकरीक जोगार कऽ दी। हम जखन हाजीपुर मुख्यालय एलहुँ तखन 'मदन' हमरा संगे छल। एक बेर हाजीपुरमे रेलवे लेल कर्मचारीक आवश्यकता भेलैक जकरा लेल सब बंगला पियुनक नियुक्ति मुख्यालयक अधीन भेल। हमरा सभक लेल नव बंगला पियूनक नियुक्ति करक अधिकार भेटल। हम मनोजक नियुक्ति अपन बंगला पियूनमे कऽ लेलहुँ। ओ खेनाइ बनेबामे निपुण छल। ओकर व्यवहार सेहो सब संग शालीन छल। हमर ट्रान्सफर उ.रे. मुख्यालयमे जखन भेल (19/5/2010 इ.मे) तखन हम मनोजकेँ इ.सी.आर.मे स्थापित कऽ देलहुँ। आब ओ अपन प्रतिभासँ प्रोन्नति पाबि 'किरानी' बनि गेल अछि आ सभटा इ. ऑफिसक फाइल चलबैत अछि।

एक बेर मनोजकेँ हम बंगलोर पठौने रही जतऽ स्मिता रहैत छलि—ह्वाइट फिल्डक प्रेस्टिज अपार्टमेण्टमे। विश्वजीत (हमर जमाय) स्टेण्डर्ड चाटर्ड बैंकमे कार्यरत छलाह। हुनका नव कार्यभार भेटि गेल रहनि। सिंगापुरसँ हम सब बंगलोर नहि जा सकल रही कारण दाइ बीमार छली। अंजीरा (हमर पत्नी) पटनेमे आबि गेल छलीह। दिल्लीमे धिया-पूताक ताक-छेम हमर छोट सरहोजि विभा करैत छलीह। मनोजकेँ बंगलोर जाए स्मिता आ विश्वजीतक छूटल सामान पटना आलैक। ओ सभ सामान ट्रान्स्पोर्ट द्वारा पटना पठा देलनि आ मनोज पटना आबि गेल। स्मिता आ विश्वजीत दुनू बच्चाक संग सिंगापुर चलि गेल।

31.7.2009 एहन दिन आएल जे हम इ.सी.आर. मुख्यालयमे हाजीपुरमे कार्यरत रही। पटनासँ अंजीराक फोन आएल जे 'दाइ' नहि रहलीह एहि दुनियामे। हमर माथ सुन्न भऽ गेल। अंजीरा एकटा गाड़ीसँ हाजीपुर अएलीह। हमरा संग लैत ओ गामक लेल विदा भऽ गेल छलीह कारण सभटा काज हमरे करबाक छल। हाजीपुरसँ गामक रस्ता अबूह भऽ गेल छल। झाँट-बिहाड़ि से शुरू भऽ गेल। जोरसँ बरखा होमऽ लागल। बिपत्तिक एहन दिन नहि देखल छल।

हाजीपुरसँ गाम पहुँचैत-पहुँचैत साँझ पड़ि गेल। मिथिलांचलमे साँझ पहर दाह-संस्कारक विधान वर्जित अछि। तेँ दाह संस्कार अगिला दिन (1.8.2009) भोरे भेल। जिराति परक गाछीमे एकटा पैघ गाछ काटल गेल। पूरा गामक लोक आ टोल- पड़ोस स्त्रिगणे-पुरुषे पहुँचि गेल छल दाह स्थल पर। श्राद्धकर्म, पुरना प्राथमिक विद्यालयक प्रांगणमे भेल। एकटा पानिक पम्प गड़बा देने रही ओतऽ। श्राद्धकर्मक बाद ओ विद्यालयकेँ अर्पित कऽ देलहुँ। हमरा जीवनक एक भावुक आ प्रेरक स्तम्भ टूटि गेल।

हाजीपुर ऑफिसमे खबरि दऽ देलहुँ। श्राद्धकर्मक बीच जे कोनो विशेष निर्णयात्मक संचिका रहय से ओतऽसँ कर्मचारी सभ हमरा गाम लऽ आबथि। एकादशा आ द्वादशामे बहुतो रेलकर्मी पहुँचि गेल छलाह आ गामक भोजके सम्हारलनि। अरुणजी रणजीत आ रिपुञ्जय, विकास सभ अपन कर्मठताक परिचय देलनि। काज पूरा भेलाक बाद पराते हम हाजीपुर चलि गेल रही।

***** ***** *****

नवम्बर 2003मे जखन हमर स्थानान्तरण आ पदस्थापन पू.म.रे.क मु.सा.प्र.क पद पर भेल छल ओहि समय हाजीपुरमे एक पुरान बिल्डिंग छल जतऽ मुख्यालयक पी. एच.ओ.डी. सभ बैसथि, जी.एम./ए.जी.एम. सेहो। हमर ऑफिस ओतऽ प्रथम तल पर छल। तकरा अलावे 2टा ऑफिस हाजीपुर बाजार आ दिग्घी पर छल। बेशी काज (टेण्डरक प्रक्रिया) पटनासँ होइत छल जकर सुपरभिजन हमरा अन्दर छल। पटनामे सेहो 2टा ऑफिस छल—कुल्हरिया कम्प्लेक्स आ शिकारपुर हाउस। बादमे ओ बिस्कोमान भवनक पाँचम आ छठम तल पर स्थानान्तरित भऽ गेल छल।

मइ, 2010मे जखन हमर स्थानान्तरण दिल्लीक लेल भेल, तखन हाजीपुर मुख्यालयक विशाल बिल्डिंग मुख्य रोडक पूब बनि गेल। पुरान बिल्डिंगक कायाकल्प सेहो भऽ गेल। बीचमे एकटा आन्तरिक रस्ता दुनू बिल्डिंगके कनेक्ट करैत छल। जतऽ पोखरि जकाँ पानि भरि जाइत छल। ओतऽ आब एकटा गाछी विकसित भऽ गेल छल।

नव बिल्डिंगमे यांत्रिक विद्युत सिग्नलिंग आ दूरसंचार संगहि इंजीनियरिंग परिचालन, वाणिज्य, कार्मिक आ मेडिकलक मुख्य कार्यालय छल। मूल बिल्डिंगमे भण्डार, वित्त, आ सतर्कताक मुख्यालय छल। भंडार विभाग जे ग्राउण्ड फ्लोर पर छल तकर पू.द. कोनमे भंडार नियंत्रकक एक विशाल ऑफिस जाहिमे दुपहरमे खाना एवम् आरामक लेल विशेष प्रबन्ध छल। बिल्डिंगक चारू कोन पर चारिटा पैघसन कमरा चारिटा मु. सा.प्र.क लेल बनौने रही। ओकर शाखा (ब्रांच) जे वैगन, लोको, बिजली, संचार, इंजीनियरिंग आ सामान्य मद कम्प्यूटर, कपड़ा, पेट्रोल, डीजल आ लुब्रीकेण्ट खरीद करए तकर, ऑफिस छल। बीचमे सामग्री वितरण आ भंडार नीतिक विषयक शाखा छल।

ओहि समय तक इ.सी.आर.क रूपरेखा आ भंडार विभागक क्रिया-कलापमे आमूल परिवर्तन भऽ गेल छल। एहि मुख्यायलक आमदनी भारतीय रेलवेक द्वितीय स्थान पर पहुँचि गेल छल। भंडार विभागक खरीद सेहो 3 हजार करोड़सँ बेशी छल। भंडार डिपो सभक निर्माण आ आधुनिकीकरण सभ मंडलमे भऽ गेल छल। 2009-10मे कुल स्क्रैप रेवेन्यू 500 करोड़सँ टपि गेल जे सब जोनसँ अधिक छल। भंडार विभागक गरिमा बढ़ि गेल छल आ सब विभागकेँ एकर आवश्यकता अत्यधिक बुझाइत छल। विभागाध्यक्ष सबमे छलाह विद्युत अभियंता (श्री आर.के. सिंह), मु. संचार अभियंता (महेश मंगल), मु. परिचालन अधिकारी (श्री आर.एस. पांडेय), मुख्य वाणिज्य अधिकारी (श्री एस.के. दास मु. कार्मिक अधिकारी (जय शंकर प्रसाद सिंह), मुख्य वित्त सलाहकार (शरद कुमार मल्लिक), मु. अभियंता (श्री चन्द्रशेखरझा), मु. स्वास्थ्य अधिकारी (डा. महादिक), मुख्य निर्माण अधिकारी (मधुरेश कुमार आ प्रमोद कुमार)। हमर पद छल मुख्य भंडार नियंत्रक (COS)। सभक तालमेल एहने विलक्षण जे पू.म.रे. अपन उत्कृष्ट परिचालन आ वित्त प्रबंधन लेल रेल मंत्रालयमे लोकप्रिय भऽ गेल।

ECR पू.म. रेलवेक स्तर भारतीय रेलवेक आन-आन मुख्यालयसँ बेशी महत्वपूर्ण भऽ गेल छल। रेलवे बोर्डक सदस्य वा अध्यक्षक स्तर पर जे चुनाव होइत छल ताहिमे एतुक्का अधिकारीकेँ प्राथमिकता रहैत छल।

हमरा सङ्ग मुख्यालयमे चारिटा सी.एम.एम. छलाह—श्री विजय कुमार (विद्युत), मधुरंजन कुमार (यांत्रिक), हरीश चन्द्र राम (इंजीनियरिंग आ सामान्य), आ श्री पी. एन. पांडेय (दूर संचार एवम् स्क्रैप सेल)। हुनके अन्दर स्थापित भेल 'डालमिया नगर, डेहरी ऑनसोन'क पुरान औद्योगिक निष्पादन, प्रति शाखामे उपलब्ध कर्मचारी कम्प्यूटरमे निष्पात आ टेण्डरक प्रक्रियामे प्रशिक्षित भऽ गेल छल। चूँकि बिहारमे उद्योगक स्थिति ठीक नहि तेँ बेशी सामान बाहरेक प्रदेशसँ अबैत छल। भारतक सब औद्योगिक क्षेत्रमे दिल्ली, कलकत्ता, बम्बइ, बंगलोर आ मद्रासमे पू.म.रे.क विशेष

स्थान छल। आपूर्त्ति शृंखला पूर्णतः गठित भऽ गेल छल।

निचला कर्मचारी सबमे सेहो उत्साह छल। अपन इच्छा, शिकाइत आ अभिलाषा स्वतंत्ररूपेँ हमरा लग अबैत छल। हमर ऑफिसमे सदिखन हरियर बत्ती छल आ सभक प्रवेश छल। लाल बत्ती मात्र टेण्डरक बैसक वा कोनो गुप्त विषय पर वार्ता वा काज हो तखनहि। ओना बिहारक सामान्य संस्कृतिमे जाति समीकरणक मूल्य ज्यादे छल, तथापि हमर प्रयास रहल जे ओकरा बैलेंस कऽ राखल जाए। श्रमिक यूनियन दिससँ मनीश यादवकेँ छूट रहैक जे कोनो तरहक कष्ट हो कर्मचारीक, से हमरा लग स्वतंत्ररूपेँ लाबय। ओकर पूरा सहयोग भेटल।

हमरा अधीनस्थ अधिकारीकेँ कष्ट नहि होइक तकर विशेष इच्छा छल। सबटा मु.सा.प्र. बाहरेसँ आएल छलाह जनिक। लोकनिक परिवार, बनारस, प्रयाग, गोरखपुरमे रहैत छलनि। एक बेर सब नेआर कयलनि जे सब गोट अपन परिवारक संग दिवाली मनाबऽ जएताह। नीचा स्तरक उप मु.सा.प्र. सब सेहो। मात्र पंकज कुमार सिन्हा, महेश कुमार आ संजय दयाल बचि गेलाह जे स्थानीय छलाह। हमरो परिवार दिल्लीमे छल आ इच्छा छल जे 2-3 दिनक छुट्टी लऽ दिल्ली जाइ। मुदा सब अधिकारीक दरखास्त देखि मोन द्रवित भऽ गेल जे–रेलवेक आपातकालीन काज कोना चलत। हम सब अधिकारीक छुट्टीक दरखास्त स्वीकृत कऽ देलियनि आ निश्चय केलहुँ जे एहि बेर दिआबातीमे दिल्ली नहि जाएब। हमर पत्नी सेहो मानि गेलीह। एहि तरहक कष्टक आदति रहन्हि। हम स्टेशन इन चीफमे पी.के. सिन्हाकेँ नामित कऽ अपने मुख्यालय परिचालन सम्हारलहुँ।

एहिना एक बेर दरभंगामे बागमतीक बाढ़ि आएल छल आ पूरा शहर त्राहि-त्राहि करऽ लागल। लोक सब स्टेशनक छत पर जाए शरण लेलक। समस्तीपुर मंडलक दोसरो शहर प्रभावित भऽ गेल छल। हम अपन समस्तीपुर डिपोक मु.सा.प्र.के आदेश देलहुँ जे एकरा 'बाढ़ि रिलीफ'क भंडार बनाओल जाए आ पूरा देशसँ अबैत कपड़ा-लत्ता, खाद्य सामानक भंडारण आ वितरणक व्यवस्था कएल जाय। ओ 24X7 राति-दिन काज करऽ लागल आ हम ओकर औचक निरीक्षण करैत रही। करीब 15-20 दिन धरि ई प्रक्रिया चलल। ओहिमे हमरा कर्मचारी एवम् अधिकारी सभक विशेष सहयोग रहल।

पटनामे मिथिलांचलक कतेको गोटेसँ भेट भेल जे अविस्मरणीय अछि। ओतहि चेतना समितिक आजीवन सदस्य सेहो बनलहुँ। श्री मन्त्रेश्वरझाजी ओहिसँ जोड़लाह। ओतहि शेखर प्रकाशनक श्रीशरदिन्दु चौधरीजी आ बीरबाबूसँ सेहो परिचय भेल आ हुनका लोकनिक उद्यमिता आ दक्षताक प्रभाव सेहो पड़ल।

हाजीपुरक पदस्थापन हमर एखन तकक सभसँ पैघ अन्तराल छल। बिना कोनो सुविधाक (जे आन जोनमे भेटैत छल) अनिश्चय आ आकस्मिक चुनौती सभक हल करबाक मौका भेटल। कष्टक समयमे लोकक बीच सम्बन्ध नीक बनि जाइछ। जेना बाढ़िमे छत पर नुकायल लोग आगाँ ठाढ़ गाछ पर लटकल साँप संग दोस्तीक मुद्रामे रहैछ, तहिना कष्टक समय संगक कर्मचारी आ अधिकारी शान्त भऽ काज करैत अछि। ओकरा सभक संग हमर व्यवहार नीक रहय आ शिकायत दूर भऽ जाए, से प्रयास रहल।

बहुत दिन तक केओ अधिकारी नहि आयल हमरा बदलामे अधिभार लेबऽ। अन्तमे लखनउक रहऽबला श्री राजेन्द्र सिंह जे आर.सी.एफ. कपूरतलासँ विस्थापित छलाह, पहुँचि गेलाह। हमर पूर्व परिचित आ नीक स्वभावक लोक। हुनका हम खूब ढाढ़स बन्हाओल आ सभक संग परिचय राओल।

***

अध्याय–13

दिल्ली पुनरागमन

अंतिम दिन आएल मइ 15, 2010 जखन इ.सी.आर. हाजीपुरक कन्फ्रेंस हॉलमे हमर विदाइक कार्यक्रम तैयार भेल। विशाल हॉलक सब कुर्सी भरि गेल आ पाछाँ सेहो लोकक भीड़ जुमि गेल। सभ अधिकारी अपन सुझाओ बजैत गेलाह आ फोटोग्राफी होइत रहल। ई बड़ भावुक दिन छल। रहैत-रहैत बहुतो लोक (अधिकारी आ कर्मचारी) सङ भावनात्मक सम्बन्ध बनि गेल रहय। ओकरा छोड़बाक विरहमे हमहूँ भावुक भऽ गेल रही।

सभ गोटे हमरा नीचाँ तक अनलनि आ पोर्टिकोमे एकटा बड़ नीक जकाँ सजाएल गाड़ीमे हमरा बैसा देलनि। फूल-मालासँ सुसज्जित ओ गाड़ी दू बेर आगाँ चलल आ एक बेर पाछाँ। तकरा बाद ड्राइवर ओहि गाड़ीके हँकैत रेलवे मुख्यायल कैम्पसँ मुख्य रोड पर आबि गेल छल। हमरा संग हमर कर्मचारीमे अरुणजी अगिला सीट पर छलाह। सब सामान डिक्कीमे राखल छल। रामाशीष चौक तक गाड़ी कोना पहुँचल से पता नहि चलल। ओतऽ चारू दिससँ लोक ताकऽ लागल जे ककर गाड़ी जा रहल अछि। गाड़ीक आगाँ हमर पदक प्लेट लागल छल। हम गाँधी सेतु पहुँचि गेल रही आ गंगा माइकेँ प्रणाम करैत आगाँ बढ़ि गेल रही।

दोसरा दिन जखन हम सम्पूर्ण क्रांति एक्सप्रेसक फर्स्ट क्लास ए.सी.क कम्पार्टमेण्टमे चढ़ल रही सामानक संग, तखन हमर छोट बालक 'सागर' जे दिल्लीसँ एक सप्ताहक लेल पटना आएल छला, हमरा संग छला। प्लाटफार्म पर हमर अधिकारी आ कर्मचारी सब फूल माला लेने हमरा विदा करऽ आएल छला। हुनका सभक आँखिमे नोर देखि हमर सागर सेहो द्रवित भऽ गेल। हम ओहि वियोगक क्षण नहि बिसरि पबैत छी।

गाड़ीसँ अपन समयसँ विदा भऽ गेलहुँ। हमर हाजीपुरक यात्रा पूरा भऽ गेल छल।

दिल्लीमे कॉफमो (जे रेलवे बोर्डक अधीन संस्था छल)मे करीब 7-8 मास भंडार नियंत्रकक पद पर काज करबाक अवसर भेटल तकरा बाद एकाएक हमर स्थानान्तरण उत्तर रेलवे मुख्यायल, बड़ौदा हाउस भऽ गेल छल। उ.रे.क अन्तर्गत 5टा मंडल छल। बनारससँ लऽ कऽ श्रीनगर तक।

बनारस स्टेशनक किछु भाग उ.पू.रे. (गोरखपुर) मुख्यालयक 'बनारस मंडल'मे अबैछ जकर प्रशासन डी.एम.आर. वाराणसी करैत छलाह। आधा भाग बनारसएक छल उ.रे.क लखनउ मंडलक अन्तर्गत। तेँ बनारसक निरीक्षणमे जाए कयक बेर पी. आर.एस. (पैसेंजर आरक्षण प्रणाली) आ सम्बन्धित कार्यक निरीक्षण कऽ प्लाटफार्म पर ट्रेन इंडिकेशन बोर्ड, यू.टी.एस. (अनारक्षित टिकट व्यवस्था) आ प्लाटफार्मक सफाइ इत्यादिक निदेश देने रही। उत्तर रेलवेक अन्दर लखनउक अलावे आओर चारिटा मंडल छल जेना अम्बाला, दिल्ली, फिरोजपुर ओ मोरादाबाद।

फिरोजपुर मंडलक अन्तर्गत श्रीनगरमे ट ्रेन चालू भऽ चुकल छल। जम्मूसँ उधमपुर रेल लाइन निर्माणक अधीन छल। बड़गाम ओतुक्का मुख्य स्टेशन छल जे बड़गाम, बारामुला लाइनक बीच छल। बड़गाममे रेलवेक अधिकारी निवास बहुत नीक छल। चूँकि एतऽ रेल लाइन खुजले रहय तेँ डीजल इंजिनक स्पेयर पोर्ट्स आदि जलन्धर स्थित डिपोसँ जाइत छल। हम बड़गाम जाय ओतए स्वतंत्र भंडार डिपोक निर्माण आ संगठन करौलहुँ। कर्मचारी सभकेँ स्थापित कऽ सब तरहक सुविधाक इन्तिजाम कराओल। ओतऽ पूरा रेल खण्ड देखबाक मौका भेटल। श्रीनगर घाटी बर्फसँ ढकल छल। स्टेशन सब पर एकटा बर्षा/शीत रक्षा गृह छल जाहिमे जाए लोग सब वर्षा आ ठंढीसँ अपनाके बचाबय। ओतुक्का पसिंजर किछु महिला शिक्षिका आओर व्यवसायी भेटलीह। ओ सब प्रसन्न छलीह जे श्रीनगर ट्रेनक एतेक सस्ता भाड़ा पर सुविधा भेटि गेल छलनि। आब तँ श्रीनगर जम्मूतवीसँ पूर्णतः जुड़ि गेल अछि आ चेनाव रेल ब्रिज 1315 मीटर जे उच्चतम रेल ब्रिज (आर्क बिज) जम्मूकेँ बारामूला लाइनसँ जोड़ैत अछि।

बड़गाम अधिकारी निवासमे कर्मचारी सब श्रीनगरक अनुपम चीज सब आनथि। भोरे-भोर अपना खेतक 'कहुबाक' पेय बना कऽ आनथि जे 'चाय'क बदला उपयोगमे आबय। श्रीनगर रेलवे स्टेशन अखरोटक लकड़ीसँ सुसज्जित छल। सोना जकाँ पियर दप-दप ओतुक्का लोकक आतिथ्यसँ अभिभूत भऽ गेलहुँ। ओतऽसँ आपस यात्रामे हवाइ जहाज भेटल श्रीनगरमे, कारण रेल लाइन तावत जोड़ल नहि छल। बलिहाल सुरंग जे काजीगुंड जोड़ैछ 2.85 किमी. छल जे जम्मूकेँ श्रीनगरसँ जोड़ैत छल।

उ.रेलवेक एकटा प्रमुख जगह अछि 'अमृतसर' जे फिरोजपुर मंडलमे अवस्थित अछि। ओतऽ जालियावाला बाग, बाघा बॉर्डर आ अमृतसर गोल्डेन टेम्पुल बहुत प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल अछि। गोल्डेन टेम्पलमे श्री हरमंदिर गुरु साहेबक समक्ष माथ टेकबाक मौका भेटल। भक्त सब अभिभूत भऽ मंदिरक चारू कातक तिरपेक्षण करथि आ ग्रंथ साहेबक दर्शन। बहुत रमणीय स्थल अछि। ओतऽ जाइते विशेष शांति भेटल। हमरा संग 'सागर' हमर छोट पुत्र छल। दोसर दिन ओकरा संग अमृतसर वर्कशॉप गेलहुँ जतऽ कोचक मरम्मत होइत रहय। ओकरा मशीन सभक व्यावहारिक ज्ञान कराओल गेल जे ओकर बी.टेक.क एक पत्रमे सहायता करितैक। ओतऽसँ कनिञे दूर जाए एकटा विशिष्ट दोकान जाए 'अमृतसरी कुल्छा'क जलपान देल गेल छल ओतुक्का अधिकारी द्वारा। एकटा कुल्छा खेलाक बाद लस्सीक इन्तिजाम छल। सागर अधिकारी निवास जाए सूति रहल। दू दिन धरि किछु नहि खेलक। ओकरा मोन ततेक भरि गेल छलैक जे ओ सुतले रहि गेल।

साँझ कऽ बाघा बॉर्डर गेल रही जतऽ भारत तथा पाकिस्तानक बॉर्डर पर एकटा गेट छल। दुनू पार दुनू देशक सिपाही पूरा ड्रेसमे अपन पैरेड करैत छल। दुनू देशक ध्वजाके मिलाओल जाइत छल। संधि आ मेलक अजीव दृश्य। दुनू दिशसँ आनन्दक अनुभव आ ताली।

देशक राजधानीमे अवस्थित रहबाक कारणे दिल्ली मंडल बहुत विशिष्ट छल। सबसँ बेसी कोचक आवण्टन छल, कारण एतहिसँ दूर-दूर तक गाड़ी जाइत छल। दिल्ली मंडलक सेवार्थ सकूर बस्ती डिपो, सकूर बस्ती डीजल शेड आ तुगलक बाग डीजल शेड कार्यरत छल। एकरा अलावे गाजियाबादमे इलेक्ट्रिक लोको शेड आ इंजिन वर्कशॉप अपन-अपन क्षेत्रमे क्रियाशील छल।

मात्र दिल्ली रेलवे स्टेशनसँ करीब 40,000 बिजलीक बल्ब/लैम्प इत्यादि प्रतिदिन निकलैत छल। ओकरा लेल 'सकूर बस्ती'मे स्टोरेज आ निष्पादनक इन्तिजाम कएल गेल। सकूर बस्तीमे इलेक्ट्रिक आ एलेक्ट्रॉनिक उपस्करक एकटा अलग स्थान निर्धारित कराओल जतऽ इ. वेस्टक निष्पादन हो। ओहि समय भारत सरकार 'वन एवम् पर्यावरण मंत्रालय' द्वारा एकटा कानून आएल छल जे विषाक्त एलेक्ट्रॉनिक पदार्थक निष्पादन कएल जाय जकर आरम्भ 1989मे भेल छल। मुदा 2008मे ओकरा कानूनक दर्जा दऽ देल गेल छल। एकर ताक-छेम सी.पी.सी.बी., भारत सरकार द्वारा होइत छल। हम एक बेर एम.ओ.इ.एफ./सी.पी.सी.बी. आ विद्युत उपस्कर बनाबऽवला उद्योगकेँ बजाए बड़ौदा हाउसमे बैसक केलहुँ। पता चलल जे सबसँ कमजोर कड़ी छल पर्यावरण मंत्रालय जे मात्र सैद्धांतिक रूपेँ एकटा कानून The Hazardous

and Other Wastes (Management and Transboundary Movement) Rules, 2016 बना देने छल, मुदा ओकर इम्पलीमेण्टक कोनो रूपरेखा नहि। विद्युत उद्योग पूर्णतः अनभिज्ञ छल। तथापि सकूर बस्तीमे एकरा लेल हम एकटा जगह निर्धारित कयल एवम् सभ कर्मचारीकेँ निदेश देल जे वातावरणकेँ दूषित करऽ वाला सामानक निष्पादन सी.पी.सी.बी.क मर्यादित संस्थान द्वारा कराओल जाए। एहि तरहक काज ओहि कम्पनीक होइ जे एहि काजमे रत छल। 2021-2022-2023मे एहिमे संशोधन भेल। एहिमे चारि तरहक अवशिष्ट ज्वलनशील (Ignitable), संक्षारक (Corrosive), प्रतिक्रियाशील (Reactive) आ विषाक्त (Toxic) सामग्रीक निर्धारण एवम् निष्पादनक प्रारूप आएल।

उत्तर रेलवेक समय बेशी नहि छल। ताहूमे ओतऽ स्थानीय रेल राजनीति हावी छल। हमर पदस्थापन जखन भंडार नियंत्रकक पद पर भेल तखन सदस्य (यांत्रिक) छलाह श्रीकेशव चन्द्रा जे पहिने हमरा समयमे इ.सी.आरमे ए.जी.एम. छलाह आ बादमे उत्तर पूर्व रेलवेमे महाप्रबन्धक बनि गेल छलाह। ओ व्यापक आ उत्साही व्यक्ति छलाह। आर.ए. बर्लिनक कार्यकालक बाद हाजीपुर गेल छलाह। हुनक सोचक फलक विशाल छल। ओ लेखक सेहो छलाह। ओ जखन सदस्य (यांत्रिक) बनि रेलवे बोर्ड एलाह तँ मात्र एक बेर औपचारिक भेट भेल। हुनका लग भंडार विभागक एकसँ एक प्रभावशाली लोक पहुँचऽ लगलनि जे हमर पद (सी.ओ.एस.) पर दोसराकेँ प्रतिष्ठित कएल जाइन्ह। हम कहियो हुनका अपन मन्तव्य नहि कहलियनि। हमरा पता चलल जे ओ प्रशासनकेँ निर्देश देने रहथि जे जावत धरि हम सेवामे रहब, दोसर ककरो लेल प्रस्ताव नहि आबय। ई हुनक महानता छल। तेँ हमर समय बीति गेल। 30.6.2012 कऽ रेल सेवाक हमर अंतिम दिन छल।

***

अध्याय–14

रेल सेवासँ अवकाश

सौरभक विवाह

ओहिसँ पूर्व हम दिनांक 24.6.2012 सौरभक विवाह भागलपुर जाए डा. तुलाकृष्ण झा (डीन/संस्कृत, भागलपुर विश्वविद्यालय)क पुत्री मधुमिता (जे बी.ई. आ एम.बी.ए.केने छलीह)क संग कराओल। दिल्लीसँ भरि ट्रेन करीब 50टा सँ बेशी बरियाती। गामसँ योगा भैया आ गुणा सब एकटा बस केने छलाह जाहिमे करीब 40 गोटे बरियाती छलाह। सभक यात्राक टिकट हमहीँ देलहुँ। अन्य बरियाती अपन खर्च पर आएल रहथि। बाबू साहेब (सनकोर्थ) जी हमर क्लास संगी बम्बइसँ अपन व्यवस्था पर आएल छलाह। डी.आर.एम. मालदह द्वारा भागलपुर स्टेशन पर हम 2-3टा सूट आरक्षित केने रही जतऽ कलकत्तासँ नागी आ पप्पू इत्यादि आबि रहल छलाह। बहुत धूम-धामसँ सौरभक विवाह भेल। एकटा होटलमे सबटा व्यवस्था छल। लोक कहैत छल जे ओ होटल राजनेता शाहनवाज हुसैनक छल।

सौरभक अवस्था तीससँ ऊपर भऽ गेल छलनि। हुनका जूरिख गेना बहुत दिन भेल छलनि। भूमंडलीकरणक बिहाड़ि जे भारतकेँ उनटा देने छल ताहि कारणे बेशी धिया-पुता सब विदेशक रुखि लऽ लेने छल। आइ.टी. क्षेत्रमे भारतक बसात भारतकेँ सुन्न कऽ देलक। सौरभ सेहो पूनामे Cognizantमे काज करैत छला। 'हिंजवाड़ी'मे ऑफिस छलैक आ एकटा घर सेहो बुक कऽ लेने छला कल्पतरु बिल्डरक। स्मिताक घर सेहो संगे छल। मुदा कनिञे दिनमे ओकर पदस्थापन जूरिख Credit Swisse प्रोजेक्टमे भऽ गेल रहैक। ओ ओतऽ न्यू औरिलकौनमे अपन घर ताकि लेने छल। हमरा सभक इच्छा छल जे ओकर विवाह शीघ्र होअय। मुदा ओ एहि विषय पर गप्पे

ने करए। फोनक अलावे कोनो आसरा नहि छल। सम्वादहीनता बनैत रहल। ओ ओहि समय कोके IT प्रोजेक्टमे काज करैत छल। बेरि-बेरि विवाह गप्प सुनलासँ ओकरा तामस भऽ जाइत छलैक।

हम सभ मंदिरे-मंदिरे सब भगवानकेँ प्रार्थना करियनि जे एकर मोन फेरि देथि जाहिसँ ई भारत आबि विवाहक लेल तैयार भऽ जाए। कैकटा कथा आएल–एकसँ एक मिथिलाक विशिष्ट लोक सभक। मुदा से सब ओकरा लेल कोनो अर्थक नहि। दिल्लीसँ दूर गेलाक बाद ओ हमर गामो-घरसँ अनभिज्ञ भऽ गेल। एक बेर शिरडी जाए साईं बाबाक दर्शन केलहुँ। कना गेल छल प्रार्थना करैत।

एक बेर दिल्ली आएल आ एतहिसँ बंगलोर चलि गेल कोनो संगीक भेट करबाक लेल। दिल्लीमे सेहो पुरान संगी-साथी संग समय बितओलक। बंगलोरमे जखन अपन एक पुरान संगीके भेट करऽ गेल ताहि समय ओहि संगीक विवाह भऽ गेल छलैक तेँ ओ काफी व्यस्त छल। सौरभ आपस अएला पर जल्दीए निकलि गेल। अपन विवाहक विषयमे गप्प नहि केलक। किछु दिनक बाद जूरिखसँ फोन कयलक जे अहाँ सब विवाहक चर्चा कऽ सकैत छी। हम सभ खुश रही जे एहि काजमे लागि जाइ। किछु नीक कथा ओकरा लेल पठओलहुँ मुदा ओकर सहमति नहि भेटल।

एक बेर शादी डॉट कॉम (Shadi.com) परसँ आएल एक कथाक बारेमे ओएह कहलक। हम स्मिताक मन्तव्य सेहो लेलहुँ। कन्या बी.ई. (एलेक्ट्रोनिक्स)क बाद मद्रासक लोयला कॉलेजसँ एम.बी.ए. केने छलीह। दोसर कन्या ग्वालियर स्थित पत्रकारक पुत्री सेहो कार्यरत छलीह। कन्या सभक आरम्भिक निरीक्षणक बाद वार्ता भेल। मधुमिताक पिता डा. तुलाकृष्णझाजी जे भागलपुर विश्वविद्यालयमे संस्कृत विभागक डीन छलाह, सेहो हमरा घर आएल छलाह। बहुत विद्वान व्यक्ति। हुनक बालक विन्धेश आइ.आइ.टी दिल्लीसँ बी.टेक. कयलाक बाद सैमसङ, द. कोरियामे छलाह एवम् ओहि समयमे दिल्लीमे कोनो व्यवसाय करैत छलाह। डा. तुला बाबूक सार विवेकानन्द मिश्रजी सिंगरौलीमे कोनो पावर कम्पनीमे कार्यरत छलाह। बहुत तेज आ गप्प-सप्पमे बहुत चर-फर।

विवाहक गप्प ठीक भेलाक बाद सौरभ कनिञाक पासपोर्ट आ वीजा इत्यादिमे लागि गेल। मधुमिता काज छोड़ि देने छलि। जूरिच जाए दोसर काज ताकबाक छलनि। विवाहसँ पूर्व विवाहक प्रमाण पत्र आर्य समाज विधिसँ 19.5.2012 कऽ बनि गेल। विवाह मिथिला पद्धतिसँ भेल दिनांक 24 जून 2012 भागलपुरमे। 26.6.2012 दिन हम सब दिल्ली आपस भऽ गेल रही। 30.5.2012 दिन हमर रेलवेक सेवा अंतिम दिन छल, रवि दिन। तेँ 29.6.12 दिन बड़ौदा हाउस जाए अपन चार्ज

छोड़ि देने रही। ओना हमर फेयरवेल एक दिन पूर्व जखन ऑफिसक कार्य दिवस छल तहिए भऽ गेल। उच्चाधिकारी द्वारा उ.रे.क समारोह कक्षमे एवम् भंडार विभागक अधिकारी आ कर्मचारी द्वारा भंडार विभागमे। ओहिमे हमर पुरना ऑफिस (कोफमोव)सँ सेहो लोक सब आबि गेल रहथि।

30.6.2012क साँझ हम सौरभक विवाहक रिशेप्शन रखने रही जाहिमे हमर परिचित रेल अधिकारी एवम् अन्य लोकनिक संग दिल्ली स्थित बहुत गोटे आएल छलाह। बिहार लोकमंच, जनकपुरीसँ रामचन्द्रझाजी (अध्यक्ष, केन्द्रीय जल आयोग) टी.के. मिश्राजी (श्री Y.P. Singh) मान बाबू आ डी.एन.झाजी संग घनश्याम जी छलाह। जानकी एपार्टमेण्ट, द्वारकाक सब व्यक्ति। प्राणमोहनझाजी जे हमर वरिष्ठ प्रिय सेहो छलाह। हुनकर विशेष कृपा रहन्हि। हमर मित्र दिनेश कुमार सिंह परिवार सहित छलाह। बड़ौदा हाउसक अधिकारी आ कर्मचारी सब मिलि नीक इन्तिजाम केने छलाह। हमर पूर्व परिचित कमलकान्त मित्तल (आइ.ए.एस. आसाम) संग प्रो राकेश त्रिपाठी सेहो छलाह। श्री केशव चन्द्रा (सदस्य यां.) आ श्री वी.के. गुप्ता (G.M./NR) बड़ी काल छलाह।

वर-वधूक समारोह आनन्दपूर्वक वातावरणमे एस.पी.रोड क्लबमे सम्पन्न भेल।

***** ***** *****

मधुश्रावणी पावनि धरि मधुमिता दिल्लीएमे छलीह। सौरभ ज्यूरिक चलि गेल छल कारण ओकरा छुट्टीक अभाव छलैक। पावनि तिहारक बाद मधुमिता ज्यूरिक चलि गेलीह। हम सब हुनका दिल्ली एयरपोर्ट पर छोड़ि अयलियनि। हुनक माए एवम् पिताजी सेहो ओतऽ छोड़ऽ आएल छलाह।

रेलवेसँ अवकाशक बाद हमहूँ स्वतंत्र भऽ गेल रही। ने कोनो काज ने विशेष आमद। पेंशनक सहारा भेटल जे मासक अंत तक भेटि जाइत छल। सबसँ पहिने आम आदमी जकाँ बस, रिक्शा आ मेट्रो इत्यादिमे सफर करैत पूरा दिल्लीक सर्वेक्षण केलहुँ। घर पुरान भेल छल तेँ तकर मरम्मति करेलहुँ। हमर पत्नीकेँ पैघ घरक लिलसा नहि छलनि, आने ओ विकासपुरी छोड़ैक नाम लेथि। सबटा क्रिया-कलाप एही ठाम स्थित छल। हुनकर मुहेँ बेशी काल सुनी—जीना यहाँ मरना यहाँ। तेँ आन ठाम घर नहि लेलहुँ, यद्यपि वर्तमान घर (द्वितीय तल) पर लिफ्ट नहि छल। आब जखन हुनका पैरमे दर्द रहैत छनि तखन लिफ्टवाला घर इच्छा होइत रहैत छनि। घरक दाम दिनानुदिन बढ़ले जाइत अछि। घर लेबाक सकरता सेहो कम भऽ रहल अछि। एहि बीच हम कतेको संस्था सभक संग जुड़ि गेल रही। IIPA (भारतीय प्रशासन

प्रबन्ध संस्थान) आ ए.आइ.एम.ए. (ऑल इण्डिया मैनेजमेण्ट एसोसिएसन) दिल्लीक लाइफ मेम्बर बनलहुँ जाहिमे प्रतिमास सेमिनार वार्ता आ कार्यक्रम सब होइत छल– प्रबन्ध विषयक पब्लिक प्रोक्योरमेण्ट (पी.पी.जी.) दिल्लीक सदस्य हम अवकाश प्राप्तिसँ पहिने बनि गेल रही, श्री के.पी. वर्मा जीक कहला पर। ओहिमे हम सचिव पद सेहो प्राप्त केने रही। ओकरा द्वारा विभिन्न सरकारी विभागक लेल परामर्श एवम् 'लोकक्रय' विषयक प्रशिक्षणमे सेहो समय गुजरैत छल। बादमे PPGक चयनित प्रेसीडेण्ट बनि गेल रही।

जनवरी 2013मे हमरा एम.एच.ए. (गृह मंत्रालय)क पी.एम.डी. (पुलिस मोडर्नाइजेशन डिविजनमे परामर्शदाताक पद पर एकटा काज भेटल। जैसलमेर हाउस, मानसिंह मार्ग पर ऑफिस छल। स्वतंत्र कमरा, सहयोगी कर्मचारीक संग। आइ.ए.एस. अधिकारी श्रीमती मीना छलीह ज्वाइण्ट सेक्रेटरी। ओ हमरासँ बहुत प्रभावित छलीह। ओतऽ 9टा पी.एम.एफ. (पारामिलिट्री फोर्स)क संगठन सी.आइ.एस.एफ., सी.आर.पी.एफ., बी. एस.एफ., आइ.टी.बी.पी., असम राइफल्स, एस.एस.बी., एन.एस.जी. इत्यादिक केन्द्रीय क्रयक प्रक्रिया संचालित होइत छल। सी.बी.आइ. आओर आइ.बी. सेहो एहि अन्दरमे अबैत छल। क्रय-प्रक्रियामे ओ विभाग सब बहुत कमजोर छल तेँ देरी आ गलती होइत छल। ओकर सभक प्रत्यक्ष क्रय शक्ति 5 करोड़ रहैक जाहिसँ डी.जी. स्तरक अधिकारी अपन काज चलाबथि। हम प्रस्ताव देलियनि जे ई वित्तीय शक्ति 20 करोड़ कऽ देल जाए आ विशेष प्रशिक्षण हुनक कर्मचारी सभकेँ देल जाए। गृह सचिव एहि लेल तैयार भऽ गेलाह मुदा सी.बी.आइ. आ आइ.बी.क क्रय शक्ति 5 करोड़सँ बेशी नहि देलथिन। हुनका मते सी.बी.आइ. आ आइ.बी.क व्यावसायिक ज्ञान आ क्षमता क्रयक लेल उपयुक्त नहि छल। सी.बी.आइ.क निदेशक रणजीत सिन्हाक बेरि-बेरि आग्रहक बादो गृह सचिव एहि लेल तैयार नहि भेल रहथि।

एहि बीच डी.एफ.सी.सी.आइ.एल. (DFCCIL) जे रेलवेक उपक्रम बनल छल ओहिमे एक यू.एस.ए. स्थित परामर्शदातृ कम्पनीक आवश्यकता रहैक-वर्ल्ड बैंकक निविदा तैयार करक हेतु। एहि लेल हमरा अस्थाइ रूपेँ नियुक्त केलक 10.000/- प्रति दिन। हम किछुए दिन ओहिसँ संलग्न रहलहुँ।

एहि बीच एकटा मामला आएल छल रेलवेक पटियाला वर्कशॉप (डीजल मोटिव वर्क्स)मे-एफ.टी.ए. वॉल्वक आपूर्तिकर्त्ता तीन फर्म पर 82 करोड़क दंड (पेनैल्टी) लगाओल गेल छल सी.सी.आइ. द्वारा, कारण ओ सब कार्टेलमे रत पाओल गेल छलाह। डी.जी., सी.सी.आइ. द्वारा प्रताड़ित तीनू कम्पनी ESCORTS, STONE INDIA आ FAIVELY TRANSPORT मिलि COMPAT के अपील केने

छल। ओहिमे एकटा कम्पनी, फेविली ट्रान्सपोर्टक भारतीय प्रतिनिधि हमरासँ आग्रह केलनि जे एहि विषयमे हुनका सहयोग करियनि। पता लागल जे कोनो रेलवेक वरिष्ठ महाप्रबन्धक हमर नाम हुनका देने छलाह। चूँकि हम कानूनक डिग्री नहि प्राप्त केने रही तेँ ओ हमरा 'नौलेज एडवाइजर' बनाए एकटा छोट कण्ट्रैक्ट देलनि। एहि लेल ओकर मामलाक मसौदा पर वरिष्ठ वकील निशा बागची एसोसिएट, डा. दुष्यन्त दवे इत्यादि संग वार्ता करऽ पड़ल। ओही सिलसिलामे स्व. सोली सोराबजीसँ वार्ता करैक मौका सेहो भेटल। ओ कहलनि जे प्रतिस्पर्धा कानून 2009क बादे उपयोगमे आएल, (2002सँ 2009 तक लम्बित पड़ल छल) तेँ हुनका एहि विषयक अनुभव ज्यादे नहि छलनि। हम सब वकीलक सम्मिलित बैसक दिल्ली हाइकोर्टमे कराबी। कम्पनी सभक सी.एम.डी. एवम् न्यायिक अधिकारी सब सेहो रहैत छलाह। ई मामला हम सब कॉमपैटसँ जीति गेल रही आ 82 करोड़क पैनेल्टी खारिज भऽ गेल। तकरा बाद सी.सी.आइ. रेलवेक कोनो मामलामे हस्तक्षेप करबासँ पूर्व विशेष ध्यान देबऽ लागल।

***

अध्याय–15

अवकाश प्राप्त यायावर

रेलवेक सेवासँ अवकाश प्राप्त (30.6.2012) भेलाक बाद सरकारी काजक व्यस्ततासँ आराम भेटि गेल। सौरभ आ मधुमिता किछु दिनक बाद ज्यूरिक (स्वीटजरलैण्ड) चलि गेलीह। सागर (निशांत)क पढ़ाइ एन.एस.आइ.टी. द्वारकामे चलैत छल। ओ 2015मे बी.टेक. पूरा कयलक इलेक्ट्रानिक्स मे। के.पी.एम.जी. नामक संस्थामे बौद्धिक सम्पदा (IPR) शाखामे कार्यरत भऽ गेल गुरगाँवमे। ओ पुनः एम.बी.ए.क तैयारी करऽ लागल आ 2016मे एक्स.एल.आर.आइ., टाटानगर चलि गेल। पहिल बेर छात्रावास गेल छल। तेँ एक बेर हम सपरिवार स्मिता आ विश्वजीतक संग टाटानगर ओकर विद्यालय आ छात्रावास गेलहुँ। आनन्दमय वातावरण छल। सागरकेँ खूब मोन लगैत छलैक। ओ ओहिठाम फुटबॉल खेलमे सक्रिय छल। एन.एस.आइ.टी.क टीममे सेहो अग्रिम छल। जमशेदपुर बजार जाए सागरक पसिन्नक एकटा लैपटॉप (लेनोवोक) कीनि देलियैक। ओकर कॉलेजक फीस बेशीकाल सौरभ भरि दैत छल।

समय कतेको तरहक उपक्रममे बीतल। एक ठाम नहि। बेशीकाल भ्रमणमे गाम, पटना, वाराणसी, बम्बइ, कलकत्ता, सिंगापुर आ ज्यूरिकक यात्रामे।

हम पी.पी.जी. (पब्लिक प्रोक्योरमेट ग्रुप)क ट्रेनर आ सलाहकार सेहो रही। देश-विदेशक सरकारी संस्थानक वरिष्ठ अधिकारी सबके प्रशिक्षण दैक मौका भेटल। वर्ल्ड बैंक, ए.डी.बी. आ अन्य वित्तीय संस्थानक लेल 'लोकक्रय आ संविदा' सम्बन्धी विषयक प्रशिक्षण। वरिष्ठ अध्यक्ष (पी.पी.जी.) श्रीनिवासन जे वाशिंगटनसँ अबैत छलाह अपन 45 सालक अनुभवक संग ओ हमरा बड्ड मानथि आ कहलनि जे अहाँ स्वतंत्ररूपें ई प्रशिक्षण दैत रहू। भारतमे पी.पी.जी.क प्रेसिडेण्ट वर्माजीकेँ वाशिंगटन डी.सी. द्वारा सम्वाद अयलनि जे भारतमे कोनो विश्वसनीय विश्वविद्यालयक संग एम.ओ.यू. करी जाहिसँ एकर स्तरीय प्रशिक्षण भऽ सकय। भारतमे 'लोकक्रय'क प्रशिक्षण कोनो

संस्थानमे नहि होइत छल। एकटा वरिष्ठ आइ.ए.एस. अधिकारी छलाह डा. सन्दीप वर्मा जे राजस्थान कैडर (IAS) सँ दिल्लीमे रक्षा मंत्रालयमे पदस्थापित छलाह। ओ वाशिंगटन डी.सी. यूनिवर्सिटीसँ ''लोकक्रय''क विषयमे पी-एच.डी. केने छलाह। ओहो पी.पी.जी. सँ जुड़ऽ चाहलनि। बादमे ओ जयपुर चलि गेलाह।

हमर समय रेलवे RITES, आ मेट्रो रेल कम्पनीक सम्विदाक विवाद-निष्पादनमे मध्यस्थक (Arbitrator) भूमिकामे बीतल। विभिन्न रेलवे जोनक वाणिज्यीय विवादक मध्यस्थता करैक मौका भेटल। रेलवेक संविदाक कमी आ कमजोरीक पता ओही बीच लागल। रेलवेक संविदा विषयक अनुभवहीनता आ कमीके उघार करैक मौका भेटल। संविदाक विवाद निवारण भारतक बड़ पैघ समस्या बनि गेल अछि। देशक उच्च स्तरक कोर्ट (हाइ कोर्ट/सुप्रीम कोर्ट) सबमे लाखो मामला पड़ल अछि। निचला कोर्टमे तँ करीब 5 करोड़ मामला लम्बित छल। इन्क्वारी आ विवादक मध्यस्थताक क्रममे दिल्लीसँ बाहर, पटना, कलकत्ता, चित्तरंजन, इलाहाबाद, जयपुर इत्यादि शहर जाइत रही।

2016मे जुलाइ मासक बाद सागर टाटानगर चलि गेल छल एक्स.एल.आर.आइ. क प्रबंधक प्रशिक्षण हेतु। ओतऽसँ निकलि ओ जुलाइ 20मे रिलायंस इण्डस्ट्रीज लिमिटेडक बम्बइ (धनसौली) स्थित ऑफिसमे आसीन भेल। तकरा डेढ़ सालक बाद दिस. 2019मे ओ अमेजनक हैदराबाद मुख्यालयमे ज्वाइन कऽ लेलक। हमर परिवार पाँच ठाम बँटि गेल। विश्वक पाँच भूभागमे–1. माए छलि गाममे (मेघौल मधुबनी), 2. हम सब दिल्ली (विकासपुरी)मे 3. स्मिता अपन परिवारक संग सिंगापुरमे अवस्थित भऽ गेल, नव घर कासाफिनामे जे बेडोक रोड पर छल, 4. सौरभ न्यू औलिकोन, ज्यूरिकमे अपन मधुमिता आ बेटी 'इरा'क संग, 5. सागर (निशांत) हैदराबादमे (गच्ची बाउलीमे)।

समय-समय पर ए.आइ.एम.ए. (ऑल इण्डिया मैनेजमेण्ट एसोसिएसन)क कार्यक्रममे भाग ली। ओहिमे बेशी लोक औद्योगिक परिवारक छलाह। हम एकटा कार्यक्रम ए.आइ.एम.ए.क संगे पी.पी.जी.क लेल तैयार केलहुँ जाहिमे दुनू संस्थाके नीक आमद भेलैक। ओहिमे हमर सहयोगी आनन्द (जे एखन टेक महीन्दरामे कार्यरत छथि)क विशेष भूमिका रहल। पी.पी.जी.क लेल एकटा विशिष्ट कार्यक्रम "जी.एफ.आर. जेमक ट्रेनिङ कराओल, सरकारी विभाग आ पी.एस.यू. सभक लेल। स्वास्थ्य सम्बन्धित लोक क्रयमे पी.पी.जी.क श्री राजीव नाथ (अध्यक्ष, AIMED) केँ जोड़ि 'मेडिकल डेवाइसक' क्रयक प्रक्रिया पर विशेष कार्यक्रम करौलहुँ। सभ कार्यक्रम अति प्रशस्त आ लोकप्रिय भऽ गेल छल। अवकाशप्राप्तिक बाद कतेको

सामाजिक संस्था सभसँ जुड़ैक मौका भेटल।

अवकाश प्राप्तिक बाद एक दिन मिथिलांचलक करीब 15-20टा नवयुवक अएलाह। हमरा संग एक बैसक भेल, YMCA भवनक लौबीमे। ओ लोकनि मैथिलीकेँ प्रोत्साहन देबाक लेल मिथिलाक दिल्ली स्थित प्रवासी लोकनि सभक सङोर कऽ कैटा संस्था संग मिलि काज करऽ चाहैत छलाह। ओ एकर नाम 'मिथिला सेना' रखने छलाह। हम कहलियनि जे शब्द 'सेना' हटाए एकटा साहित्य आ संस्कृतिसँ सम्बन्धित संगठन बनाउ जे नव आ पुरान प्रवासी मैथिलकेँ जोड़ि सकय। एकरा बादे पहिल मैथिली साहित्य महासभामे साम संस्था बनल। किछु कारणे ई संस्था विभक्त भऽ कतेक रूपमे काज करऽ लागल। ओम्हर बिहार लोक मंचक हमर पुरान सहयोगी सब हमरा बलजोरी 'अध्यक्ष' बना देलनि। बिहार लोक मंच, दिल्लीक सबसँ पुरान संस्था (1978मे मर्यादित) छल जाहिमे सरकारी-गैरसरकारी आ सामाजिक सब तरहक लोक जुड़ल छलाह। दुर्गापूजा जनकपुरीमे होइत छल। होली मिलन सेहो होइत छल, जनकपुरी डिस्टि ्क पार्कमे। ओही संस्थासँ निकलल 'जानकी कॉपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी', द्वारका जतऽ 200सँ बेशी परिवार रहैत छथि। बिहार लोक मंचसँ कतेको राजनेता (श्री भागवतझा आजाद, रामेश्वर ठाकुर, जगदीश मुखी आ ब्यूरोक्रेट श्री मंत्रेश्वर झा, विनोद झा, तंत्रनाथ ठाकुर, ए.एन. झा इत्यादि जुड़ल छलाह। हमरा लोकनि (श्री आर.सी. झा, टी.के. मिश्रा, मान बाबू, डी.एन. झा) कतेको गोटे एहिसँ निकटतम रूपेँ सम्बद्ध रही। अखिल भारतीय मिथिला संघ आ मिथिला एपार्टमेण्टसँ लोक आबथि जनकपुरी, दुर्गापूजाक विशेष कार्यक्रममे सहभागिता लेल। हमर विचार रहय जे एकटा 'छात्रक काउन्सलिंग' आ 'लोक स्वास्थ्य जाँच'क नियमित केन्द्र बनाओल जाय। मुदा एकर प्रबन्धमे लागल सब सदस्य अपन काजमे व्यस्त छलाह, तेँ मूर्त्तरूप नहि देल गेल। ओना संगठन 'दुर्गापूजा', होली मिलन, सहभोज इत्यादिमे अनवरत लागल रहैछ।

दिल्ली आ एन.सी.आर.मे आब कतेको (100सँ बेसी) संस्था बनि गेल अछि। उत्साही व्यक्ति आ युवा उर्जाक द्वारा संचालित संस्था सब अपन कार्यक्रममे लागल रहैत अछि। हम मौका पाबि सभमे सहभागिता दैत रहलहुँ। सभ संस्थाक समग्र उर्जा आ धनक समायोजन जँ कोनो निश्चित लक्ष्यक लेल होइत तँ मिथिलांचलक उद्धार भऽ जाइत। ज्यादेतर संस्था स्थानीय स्तर पर भजन-कीर्तन आ भोज-भातमे निमग्न रहैत अछि। मैथिली भाषा आ साहित्यक सम्बर्धन लेल कम्मे काज होइछ।

'मैथिली' भाषा भारतीय संविधानक अष्टम सूचीमे 2004मे स्थान पओलक। 92क संशोधन बिल 2003मे बोडो, डोगरी, मैथिली आ सन्थाली भाषाकेँ एहि सूचीमे

स्थान भेटल, जाहिसँ एकरा शिक्षा, सरकारी कार्य आ ऑफिसक लेल उपयुक्त भाषा मानल गेल। यू.पी.एस.सी.क Civil Service परीक्षाक लेल सेहो वैकल्पिक विषय भऽ गेल। कतेको मैथिली प्रेमीकेँ मौका भेटलनि शीर्ष सेवाक लेल चयन होएबाक। मैथिलीक विद्वान लोकनिकेँ अवसर भेटल पढ़ब आ पढ़एबाक। पुस्तक बिक्रेता सभकेँ सेहो आर्थिक लाभ भेटल हयतनि।

तथापि कोनो विश्वविद्यालयमे मैथिली 'अध्ययन केन्द्र' नहि खुजि पाओल। भोजपुरी मात्र डायलेक्टक अछि, बिना व्याकरण आ डिक्सनरीक आ तकर मान्यता सेहो नहि छैक, मुदा एकरा लेल केन्द्रीय विश्वविद्यालय (बी.एच.यू.)मे 'भोजपुरी अध्ययन केन्द्र' खूजि गेल। ई सौभाग्य मैथिलीकेँ एखन धरि नहि भेटल जखन कि मैथिलीमे अपन व्याकरण, डिक्सनरी आ विशाल साहित्य-वैभव अछि—पुरान आ नव।

दिल्लीक पुरान 'अखिल भारतीय मिथिला संघ' सालमे एकटा कार्यक्रम करैत रहल। नव संस्था वैदेहीक जानकी प्राकट्योत्सव' नव प्रकल्प छल। साहित्यक लेल बनाओल प्रकल्प 'चौपाड़ि' मैथिली युवा-युवतीक नव पौध छनि। एन.सी.आर. आ दिल्लीक कोन-कोनमे कोनो-ने कोनो उपक्रम होइत छल। मुदा मिथिलांचलक लोक आ प्रवासीके राजनैतिक शक्ति आ सामाजिक सुधार नहिएँ जकाँ। एहिमे नेतृत्वक अभाव रहल आ आपसी विद्वेषक प्रवृत्ति। मिथिलांचलक विशिष्ट व्यक्ति सब एहि सभसँ विचलित भेल कात भऽ गेल छथि। ओ सब अपन-अपन प्रकल्पमे लागल छथि।

हमर सम्बन्ध बी.एच.यू. अलुम्नी एसोसिएसन आ मालवीय मिशनसँ बढ़ैत गेल। सालमे सरस्वती पूजा (जखन बी.एच.यू.क स्थापना भेल छल), मालवीय जी आ वाजपेयीक जन्म दिन (25 दिसम्बर) आ कतेको व्याख्यान आ स्मरणीय कार्यक्रम होइत रहल। हमर क्लास संगी (आइ.टी. बी.एच.यू. 1974)क एकटा विश्वस्तरीय समूह अछि जकर संचालन, यू.एस.ए.सँ नरेश गोयल आ इटलीसँ नारंग करैत रहलाह। आब ओकर संगठन फैजाबादसँ अनिल कुमार आ दिल्लीसँ विनय कुमार करैत छथि। प्रतिवर्ष विशेष कार्यक्रम होइत गेल। एक बेर ई मिलन काठमाण्डू, नेपालमे भेल जकर देख-रेख ओतुक्का मिलन विक्रम साह आ रमेश नेपाल कयलनि। ओतुक्का उद्योगपति (तोदी, B.Techक संगी हमर) सभकेँ अपन विशाल घर पर बजाए रात्रि भोज देलनि। भारतमे बंगलोर आ मैसूरमे 3-4 दिनक कार्यक्रम भेल जकर कर्त्ताधर्ता रहलाह श्रीनिवास शास्त्री। केरापात पर भोजन आ यक्षगणक प्रदर्शन अद्भुत रहल। लखनउक कार्यक्रममे भेट-घाट आ नैमिषारणक दर्शनक संग शहरमे 'भरत मिलन'क नाटिका दर्शनीय रहल। वाराणसीक दीप-दिवाली आ बी.एच.यू. परिसरक खेल-खूद पुरना छात्र जीवनकेँ उद्वेलित करैत रहल। सभ ठाम विनोदझाजी

(केमिकल) अपन पत्नी प्रतिभाक संग अबैत छलाह। खूब गप्प होइत छल। डा. विनोद सिंह जे यू.एस.ए.क क्रोमएल्वाएमे प्रेसिडेण्ट छल, नहि आएल। ओ एक बेर भारत आएल छल धातुकी विभागक मिलनमे, हमरा फोन कैलक जे ''हम भारत आएल छी, कतऽ भेट हयत?' हम गाममे रही आ कोनो छुतकाक कारण गामसँ बाहर जाइमे असमर्थ रही। ओ पटना तक आबि घूरि गेलाह। कहलनि जे ओ अपन काजसँ अवकाशप्राप्त केलाक बाद बोईंग हवाइ जहाजक परामर्शदाता छथि। USA लौस एन्जेल शहरमे छथि। आबक लेल विशेष आग्रह केलनि।

हमर बम्बइक मित्र जयन्त मेहता जे EIL आ एच.पी.सी.एल. छोड़ि अमेरिकामे कार्यरत छल, अवकाश प्राप्त भेलाक बाद न्यू जर्सीमे रहैत अछि। ओकरा हम पारसनाथ मंदिर आ गयाक दर्शनमे अपन टीमके लगाए घुमा देने रही। ओ सेहो न्यू जर्सी आबक लेल बेरि-बेरि आग्रह करय।

एहि बीच लेखन नहि भऽ सकल। पढ़ी आ छोट-छीन साहित्यो लिखी मुदा ओकर प्रकाशनक रस्ता नहि बुझाए। लेखनक नाम पर रेलवेक इन्क्वायरी रिपोर्ट आ मध्यस्थताक अवार्डमे बेशी समय लगैत छल। विभिन्न रेलवे जोन, RITES आ DMRCक विवाद-निष्पादनक मौका भेटल।

एक बेर एक लघु उद्योगी शर्मा जी (85 YR)क विवाद जे प्रायः दस सालसँ लम्बित छल, तकरा पूर्ण करैक मौका भेटल। एवार्डक बहुत दिनक बाद एक दिन एक सज्जनक (डा. दीपक पंण्डित) फोन आएल। ओ शर्माजीक पुत्र छलाह। कहलनि ओ गुरुग्रामक एक अस्पतालसँ बजैत छलाह जतऽ हुनक पिताक मृत्यु भऽ गेल छलनि। कहलनि जे "मृत्युसँ पूर्व हमर पिता एकटा समाद अहाँ तक पठाबऽ कहलनि। ओ ई जे जाहि विवादकेँ धैर्य रूपेँ सुनि अहाँ न्यायपूर्ण निष्पादन कएल, से न्याय हमरा सुप्रीम कोर्टसँ सेहो नहि भेटितए"। हम फोन पर भावुक भऽ गेल रही।

***** ***** *****

2017 भारतक अर्थतन्त्रक लेल बहुत क्रियाशील (eventful) छल खास कऽ आर्थिक नीति (लोकक्रयक) लेल।

01.7.2017 दिन जी.एस.टी. एक्ट पारित भऽ गेल छल आ देशक अर्थतन्त्र पर एकर विशिष्ट प्रभाव मानल गेल। ओही बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीक कार्यकालमे 'मेक इन इंडिया'क एकटा महत्वपूर्ण नीति आएल 'पब्लिक प्रोक्योरमेण्ट' जाहिमे भारतीय उद्योगकेँ बाहरी उद्योगसँ विशेष प्राथमिकता देल गेल, खास कऽ लोक क्रयक काजमे। ओहि समयमे लोकक्रयक मैनुअल मात्र डी.जी.एस.इ.डीक छल जे पुरान भऽ गेल छल। वित्त मंत्रालय द्वारा जी.एफ.आर. 2017केँ केन्द्रीय खरीदक लेल मान्यता

देल गेल। डी.जी.एस. एण्ड डी.क मैनुअलक आधार पर एकटा मैनुअल (नियमावली) बनाओल गेल जे भारत सरकारक सब विभागक लोकक्रयकेँ दिशा निर्देशित करैत।

हम पूर्णतः 'मध्यस्थ'क भूमिकामे रत रही। उत्तर रेलवे आ 'कॉफमो'क बहुत मामला छल। एकटा मामला आएल डी.एम.आर.सी. वर्सेज Kone एलीवेटर प्रा. लि. क जाहिमे सी.पी.डब्लू.क 2टा अवकाशप्राप्त अतिरिक्त डी.जी. श्री ए.के. त्रिवेदी आ श्री ओ.पी. भाटिया, दुनू गोटे मिलि हमर नाम अध्यक्ष (मध्यस्थता)मे दऽ देने छलाह। ओहिसँ पहिने हम डी.एम.आर.सी.क लेल पार्श्वनाथ बिल्डरबला मामिलामे सह-मध्यस्थ रही जाहिमे 2टा आओर मध्यस्थ छलाह श्री वी.के. जैन, पू.अ. सदस्य रेलवे बोर्ड आ श्री ए.के. झा प्रमुख अभियंता, पू. रेलवे कलकत्ता।

डी.एम.आर.सी.क मामला समयबद्ध छल। हम सब ओकरा दू मास पूर्वे तारीख दऽ दैत रही। KONE (जे जर्मनीक कम्पनीक सबसिडरी छल)आ ओकर विधि सहयोगी फर्म (रामास्वामी एसोसिएट) प्रति सप्ताह अपन टीमक संग मद्राससँ दिल्ली आबथि। मेट्रो भवनमे एकर सुनवाइ होइत छलैक। डी.एम.आर.सी.क वकील श्री एम.यू. खान DMRCक प्रतिनिधित्व करैत छलाह।

24.11.2017 कऽ हमरा स्वीटजरलैण्ड जेबाक छल। स्विस एयर लाइनमे टिकट बुक भेल छल। ताहिसँ पूर्व हम सब मध्यस्थताक कार्रवाइ पूरा करऽ चाहैत रही। मामला ततेक पेंचीदा बनाओल गेल डी.एम.आर.सी. द्वारा, जे हमरा साँझ भऽ गेल। 23.11.17 तक ततेक भीड़ छल जे हम अपन गाड़ी ड्राइवरकेँ छोड़ि, मेट्रोसँ विकासपुरी चलि गेल रही जाहिसँ अगिला दिन ज्यूरिकक लेल प्रस्थानक तैयारी करी।

***

अध्याय–16

विदेश यात्रा

सिंगापुरक यात्रा

अगस्त 2013मे हमर यात्रा बनल सिंगापुरक जतऽ स्मिता आ विश्वजीत रहैत छलाह। हम अपन पत्नीक संग करीब एक मासक लेल ओतऽ गेल रही। यूरोप जकाँ स्वच्छ, भारत जकाँ वातावरण आ सुविधापूर्ण जीवन छल सिंगापुरक। हम सब ओतुक्का प्रचलित स्थानक भ्रमण कयल–रात्रि सफारी, सेण्टोशा बीच आ मरीना वे (नौका सदृश्य महल) इत्यादि। ओना तँ विश्वजीत अपन गाड़ीसँ सब ठाम घुमैत छलाह मुदा ओतुक्का टैक्सी सेवा सेहो नीक छल। पब्लिक ट्रान्सपोर्टमे मेट्रो रेल छल आ बस इत्यादि बहुत उपयोगी छल। हमर पहिला सिंगापुर यात्रामे स्मिता सब एक विशाल कोन्डोमीनियममे सातम तल पर छल। आगाँ समुद्रक किनार आ ताहिमे जहाजक बेड़ा। रमणीय दृश्य रहैत छल। ओतुक्का प्रथम प्रधानमंत्री छलाह ली किउयान जे सिंगापुरकेँ विश्व पटल पर अनलनि। साफ-सुथरा, भ्रष्टाचार रहित, अन्तरराष्ट्रीय व्यपारक केन्द्र सिंगापुर अपन व्यापारिक नीति आ शक्तिसँ दुनिञामे अपन नाम कयलक।

सिँगापुरक आधिकारिक भाषा अछि–इंगलिश, मलय, मन्दारिन आ तमिल। ओना भारतीय भाषा हिन्दी सेहो प्रचलित अछि कारण बहुतो प्रवासी भारतीय मूलक छथि जे सिंगापुरमे अपन जीविका आ जीवनमे रत छथि। मैथिली भाषा-भाषी सेहो भेटलाह ठाम-ठाम पर।

सिंगापुर एक शहर-राष्ट्र थीक। छोटछीन देश, साफ वातावरण आ सुसङ्गठित जीवन। व्यावसायिक अनुशासित जीवन जिबैत अछि लोक सब। ओतुक्का 'लिटिल इंडिया' बजार भारतीय वस्तुसँ भरल अछि। बुझायत नहि जे भारतमे नहि छी। मुस्तफा सुपर बजार विशाल आ सर्वप्रचलित बजार अछि जतऽ एकहि छतक नीचाँ दुनिञाक सभ उपभोक्ता सामग्री भेटत–फल, कपड़ासँ लऽ कऽ घड़ी,

मोबाइल, टीवी, कम्प्यूटर आ आधुनिक सामग्री सब।

सब देशक खाद्य-पदार्थक अनुभव भेल। भारतीय खाद्यक अलावे यूरोप बजारमे 'थाइ' खाना नीक लागल। नाव जकाँ बनल तरणताल जे मरीना वे पर देखल आ अद्‌भुत अनुभव भेल। Unescoक धरोहरि 3टा पार्क बोटानिक गार्डेनमे देखल। सिंगापुरक समय अविस्मरणीय रहल।

स्वीटजरलैण्डक यात्रा

9 मार्च 2017 दिन सौरभक पुत्री (हमर पौत्री) 'इराक जन्म भेल छल ज्यूरिकमे। सौरभ न्यू ओर्लिकोनमे इलेन वाइडेनमे रहैत छल। घरमे दू टा बेडरूम आ एकटा बड़का ड्राइंग रूम छल। खिड़कीसँ पश्चिम देखी तँ बड़का पार्क आ तकरा आगाँ बड़का बिल्डिंग, दुइ कम्पनीक ऑफिस छल–ए.बी.बी. आ बम्बार्डिअर। ई दूनू कम्पनी भारतीय रेलक रौलिंग स्टॉकक विशेष आपूर्त्तिकर्त्ता छल। हमर रेलवेक कार्यकालमे एहि कम्पनी सभसँ पत्राचार होइत छल। एतऽ एकर औद्योगिक इकाइ देखबाक मौका नहि भेटल कारण ओ जर्मनीमे छल।

जाइत काल दिल्लीसँ स्विस एयरलाइनक फ्लाइट एल.एक्स 147 छल। 24.11. 2017, जे 8 बजे रातिमे टी.-3 हवाइ अड्डा, दिल्लीसँ चलल। बहुत दिनक बाद ई दोसर यात्रा छल। सौरभ अपन परिवार संग स्थिर भऽ गेल छल। 'इरा'क जन्मक समय हमर समधि आ समधिन भागलपुरसँ गेल रहथि। किछु मासक बाद प्रायः अगस्तमे ओ सब घुरि गेल छलाह।

स्वीटजरलैण्डक सुन्दरता अछि एक ड्रीम देशक। जतबा सुन्दर शहर आ बजार, ततबे सुन्दर वातावरण। आल्पस पहाड़सँ अबैत विमंदित हवा, स्विसक ठंढा मौसमकेँ सिहका दैत छल। ओतऽ बाहर निकलैत काल विशेष जैकेट छल। ठंढा असह्य छल। दिन भरि घूमि कऽ आबी तँ खूब निन्न होअए। रातिमे जल्दी निन्न टूटि जाइत छल। उठि कऽ कविता आ गीत लिखी। कहबी छैक जे आदमीक जीवनमे धन, समय, शक्ति आ ज्ञानक आवश्यकता पड़ैत छैक। एकरा सभकेँ जतेक हो ततेक बनाबी, बढ़ाबी, बचाबी आ अपना संग राखी। समुचित उपयोग करबाक चाही।

भोर कऽ माँ सरस्वतीकेँ वन्दना प्रस्फुरित भऽ गेल–

वन्दना हम कऽ रहल छी वन्दनीयाँ शारदे।
तार वीणा केर झंकृत, कऽ दियऽ आकाशमे
वाद्य सङ्गीतक स्वरें, धुनि लऽ उठय उल्लासमे
तोड़ि निद्रा-आलसको, माँ प्रेरणा दी शारदे॥

एक दिन तँ घरक सामनेबला पार्क बर्फसँ झँपा गेल छल। लागय जे उज्जर दप-दप बनि गेल गाछ-बिरीछ। दछिनबरिया मैदान सेहो बर्फक ओछाओन जकाँ बनि गेल। मोनसँ निकलल छल ई शब्द–

रातिमे जे मेघ लागल,
बर्फक फाहा उड़ौलक
लागि गेल पथार बर्फक,
पसरि आङन बीच अटकल।
ओढ़ि चानी केर चद्दरि
स्वेत दप-दप पसरि सब तरि,
बाल वृन्द नहा रहल अछि,
झुण्डमे सब चलल झटकल।

कहियो मैथिलीमे भाव आबय, तऽ कहियो हिन्दीमे।

स्वीटजरलैण्डक पहिल यात्रामे तँ बेशी चीज देखि लेने रही। एहि बेर दोसर यात्रा छल आ पारिवारिक काज सभ सेहो रहय। ओना बेशी काल सौरभ अपन गाड़ीसँ शहर आ दर्शनीय स्थलक यात्रा बनाबय। सामान कीनऽ लेल जर्मनीक बोर्डर स्टुटगार्ड तक जाइत रही। ओतऽ सामान स्वीटजरलैण्डसँ सस्ता छल।

ओहि रम्य वातावरणमे जखन एकान्त भेटि जाए, तँ लगैत छल जे हमहूँ कालिदास बनि जाइ। सोआइत पुरना जमानाक लोक आ विद्वान सभ एतेक ज्ञान-विज्ञान आ साहित्य लिखलनि। ने केओ पूछऽवला, ने रोकऽवला। आइ-काल्हि तँ लोक ततेक सामाजिक भऽ गेल अछि जे केओ कखनो ककरो ओतऽ जाए आवश्यक सेवा तकैत रहैत अछि। तेँ भारतमे 'अतिथि' भेला ओ जे बिना तिथिक आबथि। हमर एकटा मित्र छलाह श्री. ए.के. सिंह जे रेलवे सलाहकार, बर्लिन ऑफिसमे पदस्थापित छलाह। जे केओ पैघ अधिकारी रेलवे बोर्डसँ जाइत छलाह हुनका यूरोप दर्शन वैह करबैत छलाह। ओ कहलनि जे एक बेर रेलवे बोर्डक एक 'अध्यक्ष' फ्रेंच रेलवेक अध्यक्ष संग एकटा समय रखलनि। समय पर पहुँचलाह आ एस.एन.सी.एफ.क 'अध्यक्ष' हुनका कॉफी पीबाक आग्रह केलथि आ कहलथिन जे "बाजू की प्रस्ताव अछि भारतीय रेलवेक जे हम किछु कऽ सकी।" भारतीय रेलक अध्यक्ष कहलथिन जे "हम मात्र अपनेसँ औपचारिक भेटक लेल आएल छलहुँ। हमरा कोनो प्रस्ताव पर वार्ता नहि करबाक अछि।" ई सुनि एस.एन.सी.एफ.क अध्यक्ष कहलथिन–"हमरा आश्चर्य अछि जे अपने एतेक दूर आ एतेक समय हमरासँ भेट करय बिना कोनो ठोस प्रस्तावक संग आएल छी। ई हमरा सभक समयक बर्बादीक

लक्षण छी।” तकर बाद रेलवेक कोनो अधिकारी ओतऽ जाथि तँ पूरा तैयारीक संग।

15.1.2018 दिन, ज्यूरिकसँ दिल्ली विदा होइक पहिने, कतेको शहर देखल। ‘बर्न’ गेल रही सौरभक गाड़ीसँ दिनांक 3.12.2017 कऽ जखन बाहरी तापमान छल 1^0c। ज्यूरिकसँ बर्न-स्वीटरजरलैण्डक राजधानी करीब 120 किमी. छल। बीचमे बासल आ बरलिनक रस्ता फूटल रहय। विश्व प्रसिद्ध नोवारटिसक (NOVARTIS) दवाइक कारखाना ओतहि अछि। रास्तक काते-कात लोहाक फेसिंग जंगली जानवरसँ बचबैक लेल छल। सभटा रस्ता समेटल, योजनाबद्ध आ दिशा-निर्देशित करैत। करीब सवा घण्टामे बर्न रेलवे स्टेशन लग पहुँचलहुँ जतऽ बाजार रंग-बिरंगी इजोतसँ पूर्ण छल। एकसँ एक ब्राण्डक वस्तुजात। रेल, बस आ ट्रामक एकीकृत सेवा। एकटा टिकट लियऽ आ कोनो गाड़ीमे चढ़ि जाउ। एतहि इस्टर्नमे विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक ‘आइंस्टीन’ रहैत छलाह अपन घरमे। इ.टी.एच., ज्यूरिकमे ओ पढ़बैत छलाह। ओतहि शान्त वातावरणमे सापेक्षताक सिद्धान्त निकलल। ओतऽ हम सब भारतीय भोजन (भात, दालि, पालक, पनीर, आ सलाद) खयलहुँ। बर्नमे एकटा विज्ञापन देखलहुँ Politisare जकर उपरका मंजिल पर राजनीतिक मंच छल। ओतऽ सामान्य नागरिकक लेल राजनीति विषयक इभेंट मैनेजमेण्ट होइत छल, जे देशक राजनीति आ व्यक्तित्वसँ लोककेँ परिचित करबैत छल।

एक दिन ‘इरा’के लऽ कऽ मधुमिताक संग हम यूनिवर्सिटी अस्पताल गेल रही जतऽ गेट (नोर्ड-1) खूजल। इरा स्टॉल पर बैसल छलि, तेँ सीढ़ी चढ़बामे असमर्थ। लिफ्टक दरबाजा बन्न भेलाक बाद बड़ी काल धरि ठाढ़े रहल। हम सब दरबाजा पीटऽ लगलहुँ। मधुमिता एलार्म स्वीच देलनि। 2 मिनट तक कोनो जवाब नहि आयल। फोन पर सेहो कोनो प्रतिक्रिया नहि। जोरसँ फोनक घण्टी टिपलाक बाद आवाज आएल, “दू मिनट रूकि जाऊ”। मोनेमोन भगवानके गोहड़ाबय लगलहुँ जे जान बचय। ‘इरा’ बेचारी टुक-टुक तकैत छल। ओकरा लेल धन्न-सन। हमर पत्नी संग रहितथि तँ कतेको तीर्थक कबुला-पाती भऽ गेल रहैत।

पता नहि लिफ्टक एहने स्थिति ज्यूरिक अस्पतालमे किऐक? ओ.टी.आइ.एस (OTIS) ब्राण्डक लिफ्ट छल। इलिसा ओ.टी.एस. सर्वप्रथम 1852 इ.मे लिफ्टक सेफ्टी फीचर आ ब्रेकक आविष्कार केने छलीह। ओना 1802 इ.मे लिफ्ट बिजली द्वारा चालित भऽ गेल छल सौंसे यूरोपमे। पहिल ओ.टी.आइ.एस (OTIS) लिफ्ट 1874 इ. मे न्यूयौर्कमे लागल छल। हमरा सभक बेरि-बेरि लिफ्टक देबार पिटलाक बाद 2-3 मिनटमे इंजीनियर आएल आ मोटका देबालकँ तोड़लक। हमरा सबकेँ बाहर निकाललक। तकरा बाद हमरा सबकँ ऊपर दोसर मंजिल पर डाक्टरक लग लऽ गेल।

दिनांक 16.12.2017 कऽ हम सब द्रुतगामी रेलमे (टी.जी.बी.) पेरिसक लेल विदा भेलहुँ (420 किमी. प्रति घण्टासँ दौड़ैत दुनियाक सर्वश्रेष्ठ द्रुतगामी रेल)। हमरा संग हमर पत्नी आ सौरभ, मधुमिता तथा 'इरा' छल। 4 घण्टामे पेरिस शहर। अत्यन्त सुखद अनुभूति रहल। फ्रांसक राजधानी पेरिस पहिनहुँ आएल रही मुदा एहि बेर अपन पूरा परिवारक संग। एतऽ मोटर गाड़ीक लेल पार्किंग नहि छल। सब लोक रोडे पर गाड़ी लगबैत छल। नेयोलियनक समय बनल छल ई शहर, जखन गाड़ीक आविष्कार नहि भेल छलैक।

19.12.2017 दिन हम सब 'बर्साय' (Versaille) गेल रही, विश्व इतिहासक प्रसिद्ध नगर। करीब 20 किमी. रस्ता टपैत बर्साय चलि गेल रही। राजमहलक कातमे एकटा पैघ स्टैचू ओतुक्का राजा लुइस 14 बनौने छलाह। 1632-1768तक ओ राजा अपन वंश संग ओहि महलमे छलाह। हजार लोकक भीड़ प्रतिदिन ओतऽ दर्शनार्थ अबैत छल। बेशी लोक 15सँ 40 वर्षक। वस्तुयिक राजमहल अन्दरसँ सोनासँ जड़ल छल। देबाल आ छत पर विशिष्ट पेंटिंग बनाओल छल आ डेग-डेग पर झुम्मरिवला बिजली। ओहिमे युद्ध (वार) आ शांति (पीश)क लेल अलग-अलग ड्राइंगरूम बनल छल। सीसाक झाड़-फानूस जाहिमे मोमबत्ती जरैत रहय। काते-कात सोनाक गमलामे स्वर्णपरी सब शीशाक मोरमे मोमक बत्ती जरओने ठाढ़।

सब कमरामे एकटा नम्बर देल गेल जाहि द्वारा हस्त नियंत्रित ध्वनियंत्र पर ओहि चित्र सभक टिप्पणी प्रसारित होइत छल। जखन आ जतऽ मोन हो से सूनि लियऽ। दर्शकक भीड़मे जापानी, चाइनीज आ यूरोपियन भाषाक प्रसारणक इन्तिजाम छल। सभ दर्शनार्थी सोनाक महलक फोटो लेबऽ लेल बेहाल। हमहूँ सब अपन परिवारक फोटो लेलहुँ।

दुइ फ्लोरक महलमे सीढ़ी बड़ उच्च छल। लिफ्ट नहि छल ओहि महलमे। ग्राउण्ड फ्लोर पर चित्रपट द्वारा राजमहलक इतिहास आ राजाक गाथा देखाओल जा रहल छल। दोसर महल पर राजाक सुतबाक कमरा आ बैसऽ-उठक लेल कमरा सब। ई महल 1979मे विश्व हेरिटेज घोषित कैल गेल। एतऽ राजा अपन रानी मैरीक अनत्वानेतक संग रहैत छलाह। प्रजाक विपन्नताक कारण राजाकेँ सूली पर चढ़ाओल गेल छल। प्रजाक शोषणक इतिहास गुनैत एतहि फ्रांसक क्रांतिक शुरूआत भेल छल। लुइस 16 फ्रांसक अंतिम राजा भेलाह। 1774 युद्ध प्रयासक समाप्तिक लेल एतहि युद्ध संधि पर दस्तखत भेल छल 28.6.1919 दिन, एलाङ्गस एसोसिएट पावर आ जर्मनीक बीच।

***

अध्याय–17

उद्योग मंत्रालयमे योगदान

जुलाइक प्रथम सप्ताहमे एक दिन भोजनोपरान्त निन्न लागि गेल छल। बीचमे एकटा फोन आएल–उद्योग मंत्रालयसँ केओ एकटा ज्वाइण्ट सेक्रेट ्रीसँ गप्प करओलनि। ओ अपन परिचय दैत कहलनि जे एकटा विशेष बैसक करऽ चाहैत छलाह ''लोकक्रय नीति पर आ सचिव (उद्योग) सेहो गप्प करताह। समय आ तिथि निर्धारित करैत हम ''उद्योग भवन'' पहुँचि गेलहुँ। ओतऽ 12 नं. गेटसँ इण्ट्री छल आ हमर गाड़ी (इ.टी.ओ.एस.) डी.एल.-10सी.इ. 1742क नम्बरक पास गेट पर अंकित छल।

एक गोटे गेटसँ संगे मंत्रालय लऽ गेल। रूम नं. 236मे श्री राजीव अग्रवाल जी (संयुक्त सचिव) (आइ.ए.एस. यू.पी. कैडर)क संग वार्ता भेल। कहलनि जे सचिव (उद्योग) श्री रमेश अभिषेक सेहो भेट करताह। ओ अपन पीड़ा कहलनि जे भारत सरकारमे मेक इन इंडियाक प्रोत्साहनक लेल प्रधानमंत्रीक विशेष आदेश पर 'पी.पी.पी. एम.आइ.आइ. नीति बनल 15.7.1917क दिन', मुदा भारत सरकारक बेशी विभाग ओकर अनुपालन नहि करैछ। छोट आ पैघ उद्योगपति सब अपन शिकायत पठबैत रहैत अछि जकर निवारण ठीकसँ नहि भऽ पबैत अछि। ओ कहलनि जे नीतिमे कोनो परिवर्तन हो वा ओकर प्रशिक्षण देबाक हो तँ एकटा डिविजन गठन करबाक होयत। हम कहलियनि जे हम एहि तरहक प्रशिक्षण सरकारी विभाग आ पी.एस.यू.केँ दैत छी। ओ कहलनि जे ''अहाँ पूर्णतः मंत्रालय आबि एकर कार्य सम्हारी। एतऽ सब सुविधा रहत।'' सचिव सेहो उत्साहित भेलाह। ओहि ठाम मंत्रालयक वित्त सलाहकार पाण्डेयजी (आइ.ए. एवम् ए.एस.) सेहो भेटलाह। सब गोटे उत्साहित भेलाह। हम जुलाइ अन्तमे ओतऽ (उद्योग भवनमे) जुड़ि गेलहुँ। पुनः एकटा नव ऑफिस आ नव वातावरण।

मंत्रालयक काज असंगठित छल। एकटा निदेशक (अरुण महेन्द्रू) आ अवर सचिव (वी.एस. नायक) छलाह। शाखामे प्रेम बहादुर (ए.एस.ओ.) आ ओकर सहायक सभ। संयुक्त सचिव बेशी काल विदेशक यात्रा पर रहथि आ ह्वाट्सएप पर काज करथि। ओतुक्का कार्यतंत्र कमजोर छल। एक बेर तँ सचिव स्तर पर पैघ बैसक भेल जाहिमे वरिष्ठ अधिकारी सब छलाह। सचिव (उद्योग) अपन चिंता जतौलनि जे उद्योग सभक शिकायत बढ़ैत जा रहल अछि आ सभ विभागमे शिकायत निवारणमे देरी होइछ, तकर कारण की? हम कहलियनि जे 'लोकक्रय'क लेल सब विभागमे विकेन्द्रित शिकायत केन्द्र रहबाक चाही जे पहिने डी.जी.एस. एण्ड डी.मे छल। विद्यालंकार कमिटीक सिफारिशक बाद शिकायत आ लोक सम्बन्धक लेल अलग शाखा खोलल गेल, जे एकटा निदेशकक नियंत्रणमे छल। ओ सभ शिकायत निपटान आ निवारणक प्रक्रियामे लागल रहैत छलाह। 1991 इ.मे लोक-क्रयक विकेन्द्रीकरणक बाद कतहु एहि तरहक व्यवस्था नहि अछि। हम सलाह देलियनि जे 3 वा चारि निदेशक स्तरक अधिकारी आनल जाए। सक्षम अधिकारी कतऽ भेटता आ कोना अजोता, से समस्या छल। हमरा बूझल छल जे डी.जी.एस. एण्ड डी.क विकेन्द्रीकरणक बाद भारतीय पूर्ति सेवा आ भारतीय निरीक्षण सेवाक अधिकारी सब कार्यविहीन घरमे बैसल मासिक तनख्वाह पबैत छलाह। सचिव स्तर पर निर्णय भेल जे वाणिज्य विभागक सचिवकेँ अनुरोध कऽ किछु गोटेकेँ एतऽ पदस्थापित करी।

चारिटा नाम चुनल गेल जाहिमे प्रथम रूपमे हम 2टा अधिकारीक नाम देने रहियनि–राजेश गुप्ता, निदेशक (पूर्त्ति) जे हमरा संग डी.जी.एस.2डी.मे असिस्टेण्ट डाइरेक्टरक कार्य करैत छलाह आ दोसर राकेश कुमार जे पहिने पटना DGS&Dमे सहायक निरीक्षण अधिकारी छलाह। हुनका लोकनिक काजसँ हम अनभिज्ञ नहि रही। तत्पश्चात् नीचाँमे सहायक लेल किछु युवा इजकुटिव जे इंजीनियरिंग/एम.बी.ए.क डिग्री केने छल तकर बहाली भेल। अंजू, वर्तिका सहित, तनु, ऐश्वर्या आ अनुराग। कतेको यंग प्रोफेशनल ज्वाइन केलक। सभकेँ प्रशिक्षण आ कार्य-कलापक विवरण देलहुँ। ओ सभ मेधावी युवा कार्यकारी सभ कम्प्यूटरमे निपुण छल। शाखा आ डिवीजन संगठित भऽ गेल। रेलवे, मेट्रोकम्पनी, आयुध विभाग, उर्जा विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग इत्यादिक मामलामे बेशी काल बैंकिंग/एस.बी.आइ./पी.एन.बी./आइ.डी.बी.आइ.) तथा शैक्षणिक संस्थान (आइ.आइ.टी, आइ.आइ.एम., बी.एच.यू., जामिया विश्वविद्यालय)क टेण्डरक शिकायत सेहो अबैत छल। शिकायतक निवारणक लेल गुगल ड्राइव पर मोनिटरिंग शुरू भऽ गेल। नीति-विषयक निर्णयक लेल विशेष प्रस्ताव आ विमर्श होइत रहल। समय-समय पर सचिव स्तर पर मीटिंग

होइत छल। नियमानुसार सचिव (उद्योग) अध्यक्ष रहथि आ सचिव (वाणिज्य), सचिव (आइ.टी.), संयुक्त सचिव (व्यय) आ जे.एस. (डी.आइ.पी.पी.) ओकर प्रतिनिधि छलाह। जाहि विभागक शिकायत रहैक तकर सचिव आ प्रमुख अधिकारी ओहि बैसकमे रहैत छलाह। हमहूँ ओहि बैसकक विशिष्ट अङ्ग रही। बहुतो उद्योगक शिकायतक निवारण भेल। उद्योग समूहमे एकर भारी चर्चा भेल। भारत सरकारक सब विभागमे जागरण आबि गेल छलैक। 'मेक इन इण्डिया'क एहि नीतिकेँ लऽ कऽ। उद्योग जगतमे ई बहुत लोकप्रिय बनि गेल।

तकरा बाद हम एकटा पैघ प्रशिक्षण कार्यक्रम डी.पी.आइ.आइ.टी द्वारा उद्योग भवनमे आयोजित करओलहुँ जखन नव ज्वाइण्ट सेक्रेट्री मनमीत नन्दाजी (IAS प. बंगालसँ) आएल छलीह। सचिव डा. बी.एन. महापात्रा ओकर उद्घाटन कैलन्हि। ओहिमे देशक विभन्न भागसँ रेलवे, मेट्रो आ रेलक पी.एस.यू.क अधिकारी सब भाग लेलनि। तहिना डिफेन्स (रक्षा विभाग) आ स्वास्थ्य विभागक कार्यशाला आयोजित कयल गेल।

हमरा लोकनिक टीम (पब्लिक प्रोक्योरमेंट) उद्योग विभागमे प्रमुख भूमिका दैत रहल। उद्योग सचिवक विशेष बैठकमे एकर उपयोगिताक चर्चा होइत रहल।

एहि कार्यभारमे हमरा पूरा भारतवर्षक राज्य सभक आर्थिक आ औद्योगिक गतिविधिकेँ देखैक अवसर भेटल। डी.पी.आइ.आइ.टी. पहिने DIPP नामे जानल जाइत रहय। एकटा केन्द्रीय बिन्दु छल जतऽ सभ राज्यक उद्योग डाटा अबैत छल। 'मेक इन इण्डिया' आ 'स्टार्ट अपक' केन्द्र। एक बेर रायपुरमे क्षेत्रीय राज्यक उद्योगक बैसकमे गेल रही डी.पी.आइ.आइ.टी.क दिशसँ। ओहिमे छत्तीसगढ़क मुख्यमंत्री (श्री एस.पी. बघेल), उ.प्र.क मुख्यमंत्री (श्री आदित्यनाथ योगी), म. प्र.क मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ आ उत्तराखण्डक मु.मं. श्री टी.एस. रावत छलाह। सब राज्यक मुख्य सचिव आ उद्योग विभागक प्रतिनिधि छलाह। एहि कार्यक्रममे चारि राज्यक औद्योगिक क्रिया-कलाप, ओकर चुनौती, बोटलनेक आ समाधानक प्रस्ताव आएल छल।

एहि तरहक एकटा Online (आनलाइन) मीटिंग डी.पी.आइ.आइ.टी. द्वारा आयोजित भेल पूर्वांचलक राज्य सभक संग। बिहारक कोनो मंत्री आ सचिव ओहिमे नहि जुटलाह।

बिहारमे 38टा जिला अछि। ओकर 24टा जिला मिथिलांचलमे गनल जाइत अछि जतऽ मैथिली भाषाक प्रभाव अछि। झारखण्डक 6टा जिला मिलाकऽ तीसटा भऽ जाइछ जतऽ मैथिली भाषा आ संस्कृत प्रभावी अछि। बिहारक प्रति व्यक्ति आय (2020)मे करीब रु. 54000/- प्रतिवर्ष छल जे आन राज्यक अपेक्षा बहुत कम।

गोवा आ सिक्किमक प्रति व्यक्ति आय (4,72,000/-)क तुलनामे किछु नहि। दिल्लीक प्रति व्यक्ति आय (2021-22)मे 3,89,529/- छल। तेँ बेशी लोक बिहारसँ पलायन कऽ दिल्ली आबि जाइत अछि। ओना बम्बइ, बंगलोर आ गुजरातमे सेहो काफी लोक काज करैक लेल चलि गेल अछि। बिहारमे उद्योगक नाम पर चीनी मिल छल। ओ सब बन्द भऽ गेल। छोट-छोट उद्योग चलैत अछि। बरौनीक आइ.ओ.सी. कारखानाक अलावे कोनो पैघ उद्योग नहि। बिना कोनो पैघ उद्योगक राज्यक आर्थिक स्थिति ठीक होइक सम्भावना कम।

एक बेर 2017मे मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगामे प्रभात फाउण्डेशन द्वारा व्याख्यान राखल गेल—रेलवे प्रोजेक्ट द्वारा मिथिलाक विकास पर। हमहूँ गेल रही। हमरा संग हमर पुरान सहकर्मी श्री दयानन्द झा जे रिटायर्ड ए.जी.एम/एन.एफ.आर. छलाह तिनको हम संग केने रही। बेशी विद्वान सभ स्थानीय छलाह। अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष आ पुरान एवम् नव भाइस चांसलर सब। ओ लोकनि रेलवे द्वारा मिथिलांचलमे उद्योग लगेबाक विचार पर वक्तव्य देथि आ चीनी मिलक पुनर्निर्माण पर। हमर कथन छल जे चीनी मिलक उद्योग आब अप्रचलित (Obsolete) भऽ गेल। लोकसब कुसियारक खेती सेहो बन्द कऽ देने जा रहल छल। दुनिया भरिमे 'फैट टैक्स' लागि रहल छल किऐक तँ लोक चीनी खएबामे कमी केने जा रहल छल। तेँ नव तरहक उद्योगक कल्पना कएल जाए—जेना इथनॉल (जे कुशियार आ मकइसँ बनत)। मिथिलांचलमे एकर संभावना ज्यादे छल।

रेलवेक कारखाना जे छपरा, मधेपुरा आ मढ़ौरामे खूजल ताहि लेल बिहारमे इकोसिस्टम नहि बनल छल। एक बेरि पटनामे एम.एस.एम.इ.क एक परिचर्चामे ओहि समयक संघक मंत्री श्री गिरिराज सिंहजी मंचसँ नीचा उतरि हमर हाथ पकड़ि कऽ ओतुक्का अधिकारी सबकेँ कहऽ लगलन्हि—"हिनका पकडू"। केओ गोटे इशारामे हमर नाम हुनका कहने हेथिन्ह कारण हमरा ओ व्यक्तिगतरूपेँ नहि जनैत छलाह। मंचासीन किछु अधिकारी हमरा जनैत छलाह।

जाबत धरि कोनो पैघ उद्योग मिथिलांचलमे नहि आएत ताबत धरि औद्योगिक परिदृश्य नहि बदलत। छोट-छोट उद्योग जे राज्य सरकारक सबसिडी आ प्रोत्साहन राशिसँ चलैत अछि से मात्र छोट उद्योगपतिक चारागाह। दिल्लीक एकटा विशिष्ट अद्योगपति अपन अनुभवक आधार पर कहने छलाह जे कोनो राज्यमे उद्योग ताबत धरि नहि बढ़त जाबत धरि सरकारक 'उद्योग विभाग' ओकर संचालन करत। जापान आ चेकोस्लावियाक उद्योगक मादे ओ कहलनि जे ओतऽ कोनो उद्योग विभाग नहि होइत अछि। मात्र नीति-निर्माणमे सरकार द्वारा जमीन आ टैक्सक विवरण दऽ देल

जाइछ। उद्यमी सब अपन-अपन धन आ ज्ञानसँ उद्योग चलबैत छथि।

मिथिलाक संस्कृति 'जल'सँ प्रभावित अछि। जलक विशेषताक कारण धान आ कुसियारक खेती बेशी होइछ। कैकटा नदी (भारत आ नेपालक) एतऽ बहैत अछि आ जनजीवनकेँ प्रभावित करैछ। एतुक्का भोजन चूड़ा, दही आ चीनी सेहो जल संस्कृतिक वस्तुसँ बनल अछि। ई प्रदेश शांतिप्रीय लोक सभक आ विद्वान सभक केन्द्र रहल अछि। जँ सांस्कृतिक धरोहरिके प्रोत्साहित करैत एतऽ पर्यटनक लेल आधारभूत संरचना कयल जाए तँ छोट-छीन उद्योग अबैमे समय नहि लागत। संगहि संगठित रूपेँ आइ.टी. पार्क आ खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एतऽ नीकसँ संचालित भऽ सकैछ। हाजीपुरक औद्योगिक क्षेत्रमे हिन्दुस्तान लीवर आ क्वालिटी आइसक्रीमक संग कतेको उद्योग चलि रहल अछि। पूर्णियाँक प्लाइउड आ जयनगरमे 'खस'क उद्योग चालित अछि। आइ.टी.सी. मुंगेर सिगरेटक बड़ पैघ उपक्रम अछि। जा कतऽ भसिया गेलहुँ से नहि जानि। मिथिलांचल आ बिहारक विकास हो, तकर जवाबदेही हमरा तँ नहि। एहि लेल सरकार बनल अछि जे बरखो-बरखसँ काज कऽ रहल अछि। ओना बिहार पर भगवान बुद्धक शाप छनि जे ई प्रदेश तीन तरहक बाधासँ उरीन नहि हयत—बाढ़ि, आगि आ अन्तवर्गीय युद्ध। दूर रहलाक कारण आ ओतऽ रहैत अपन लोक-वेदक स्थिति देखैत मोनमे चिंता आ भावमे विह्वलता आबऽ लगैत अछि, तेँ ई विचार उत्पन्न भेल।

***

अध्याय–18

‘इरा’क मुंडन

5 मार्च 2020क दिन ‘इरा’क मुंडनक मुहूर्त छल। हमर माएक कबुला छलैक जे जनकपुर जाए मूड़न होअए। सौरभ आ मधुमिता आएल रहथि इराक संग। हम सब एक दिन पहिने गाम पहुँचि गेल रही बिहार सम्पर्क क्रांतिसँ दरभंगा तक आबि। सौरभक ससुर आ सासु सेहो 4 मार्च कऽ हमरा गाम आबि गेल छलीह।

5 तारीखक भोरमे हम सब तीनटा गाड़ी ठीक कयलहुँ। गामसँ दरभंगा होइत जनकपुरक यात्राक लेल। दरभंगामे ‘विनोद’ संग भऽ गेल। भोला बाबू लहेरियासरायमे औषधक व्यापारी छलाह। विनोद छथि हुनक जेठ बालक। बड़ व्यावहारशील। ओ नेपालमे सिपला (CIPLA) कम्पनीक एजेंसी लेने छथि। बेशी काल ओतहि रहैत अछि। हमरा सभक अगुआ बनि गेला। दरभंगासँ जनकपुरमे एकटा होटल सेहो ठीक केने रहथि जतऽ विराम कऽ सकी।

गामसँ भोरे 6 बजे विदा भऽ गेल रही आ जनकपुर बॉर्डर पर 10-11 बजे तक पहुँचि गेल रही। ओतऽ कस्टमक औपचारिकता करैत नेपालक अन्दर पहुँचलहुँ। जनकपुरमे जानकी मंदिर पर जाए सब गोटे स्थिर भेलहुँ। ओतहि हजामसँ गप्प केने छलाह विनोद। मंदिरक परिसरमे ‘इरा’क मूड़न भेल। गीत-नाद भेल। केश कटलक हजाम। राम-जानकीक दर्शन कयल सभ गोटे। होटल आबि सभ केओ भोजन कऽ बजार दिश जयबाक उपक्रम बनौलक मुदा सौरभ हड़बड़ीमे छल। ओकर मोबाइल पर कोनो सम्वाद अबैत रहैक। ओ बेरि-बेरि आपस विदा होइक लेल कहैत रहय। गाम आपस आबि अगिला दिन पूरा टोलकेँ भोज देलहुँ। सभ आनन्दित भऽ गेल। दिनांक 7.3.2019 भोरे सौरभ आ मधुमिता इराक संग एकटा पैघ गाड़ीसँ भागलपुरक लेल विदा भऽ गेल। हमर समधि तुला बाबू सेहो समधिनक संग अपन ललका मारुतिसँ ड्राइवरक संग विदा भऽ गेलाह।

हम सब सौरभक दिल्ली पहुँचबासँ पहिने दिल्ली चलि गेल रही। सौरभक परिवारक टिकट छलैक, दिनांक 15.6.2020 रातिमे। बेरि-बेरि ओ हवाइ जहाजक समाद देखैत छल। विदा भऽ गेल समय पर। ओकरा ज्यूरिक पहुँचैत-पहुँचैत 16 जूनक भोर भऽ गेल छलैक, कोरोना महामारीक भयसँ ओही दिन स्वीटजरलैण्डक बॉर्डर बन्द भऽ गेल छल। यूरोपक सब देश अपन-अपन बॉर्डर बन्द करैत गेल। पहिने इटली तखन जापान आ फ्रांस। एतावता पूरा यूरोप लॉकडाउनमे चलि गेल।

***

अध्याय–19

भारतमे लॉकडाउन

हम दिल्लीमे उद्योग भवन जाए अपन काजमे व्यस्त भऽ गेल रही। सचिव (उद्योग)कैँ प्रधान मंत्रीक सलाह रहनि जे चीन आर्थिक रूपैँ भारतक उद्योगकैँ धक्का दऽ रहल अछि। बोर्डर पर सेहो आघात करैत छल। प्रधानमंत्रीक इच्छा रहनि जे एहि पर किछु कार्रवाइ हो। हमरा कहल गेल जे अन्तःराष्ट्रीय व्यापारमे लोकक्रयमे भारतकैँ की समस्या छैक ताहि पर अध्ययन करी। हम अपन टीमकैँ काज बाँटि देलहुँ–यू.एस.ए. आ यू.के.एस. डाटा। सूचना निकालऽ लगलहुँ। बाइ यू.एस. लॉ (BUY US Law)क पूरा अध्ययन कएल। नव बाइडेन सरकार जे अपन डाइरेक्टर (एक्विजीसन) नियुक्त केने रहय तकर नीतिक तुलनात्मक अध्ययन केलहुँ। भाविकाकैँ इ.यू.क नीतिक सभ व्यापार साहित्यक संक्षिप्त विवरण तैयार करऽ देलहुँ। 'वर्तिका'कैँ South East Assian आ USA संग व्यापार साहित्यमे सहयोग करऽ कहलियैक। अँजूके चीन पर विशेष अध्ययन करक जवाबदेही देलहुँ। पूरा विश्वक व्यापारिक साहित्य खास कऽ 'लोकक्रय'मे भारतक संग तुलनात्मक विचार आ नीतिक अध्ययन कएल। लागल जे सभसँ बेशी प्रतिबन्धित/अवरोधी आ भेदभावपूर्ण शर्त्त छल चीनक। भारतक उद्योगकैँ ओ सभ तरह-तरहक अवरोध उत्पन्न करैत छल। भारतक उद्योग अपन अभिलाषा रखैत छल जे चीनसँ व्यापार करी मुदा ओकरा संग प्रतिस्पर्द्धा बड़ कठिन छल।

2018 इ.क अगस्तमे स्मिता सिंगापुरसँ विदा भऽ कऽ मैड्रिड चलि गेल छल। स्पेनमे हमर जमाय विश्वजीतक ऑफिस बनि गेल छल। ओ यूरोपक लेल सी.इ.ओ, डबोल्ड छलाह। पूरा परिवार मैड्रिडमे पैघ घर लऽ लेने छल। इसिता आ ध्रुव ओतहि स्कूलमे नाम लिखा लेने छल। ओकरा सभ लेल स्पेनिस भाषा सीखब जरूरी छलैक। करीब डेढ़ सालक बाद कोविड 19क आगमनसँ ओतहु लॉकडाउन लागि गेल।

स्पेनक स्थिति सभसँ खराब। टी.भी. पर समाचार सुनी तँ डर लागय। ओ सब कोनहुना दिस. 2020 तक ओतऽ रहल आ तकरा बाद सिंगापुर चलि आएल।

कोविड-19 चीनक बुहान शहरसँ 2019मे आरम्भ भेल छल। ई संक्रामक बीमारी कोरोना सारस कोविड-2 नामक वायरस द्वारा पसरल। पूरा विश्वमे ई बीमारी पसरि गेल जे 21म सदीक सबसँ पैघ आ घातक बीमारी छल। कोनो इलाज नहि विकसित भेल छल। भारत एकर विस्तार रोकबाक लेल सरकारी चारि बेर लॉकडाउन लगौलक।

1. 25.3.2020सँ 14.04.2020 (21 दिन)
2. 15.4.2020सँ 3.5.2020 (19 दिन)
3. 4.5.2020सँ 17.5.2020 (14 दिन)
4. 18.5.2020सँ 31.5.2020 (14 दिन)

लॉकडाउनमे सभ सार्वजनिक कार्यालय आ रोड सेवा बन्न भऽ गेल। रेल-बस आ हवाइ जहाज सेवा ठप्प। पूरा देश ठमकि गेल। उद्योग भवनमे एकटा कण्ट्रोल रूम बनल जतऽसँ प्रत्येक राज्यक पुलिस आ ट्रान्सपोर्ट विभाग नियंत्रित होइत रहल। ओतहिसँ आदेश निकलल जे कोन तरहक व्यापार बन्द कएल जाए आ ककरा खोलल जाए। एहि बीच एकटा आदेश निकलल जे बिजलीक सामान सभक दोकान सेहो रहय। हम एकटा अधिकारीकेँ, कहलहुँ जे बिजली एक आवश्यक वस्तु अछि तेँ ओकरा निषेध क्षेत्रसँ बाहर करी।

लॉकडाउनक प्रथम चरणमे हम सब घर धऽ लेलहुँ। वरिष्ठ लोक (सीनियर सिटीजेन) के छूट देल गेल छल। डब्लू.एफ.एच. (वर्क फ्राम होम)क कार्यक्रम शुरू भऽ गेल छल। ई-मेलसँ वा फोन पर सब काज अबैत छल आ लैपटॉप पर काज करी। मीटिंग सब जूमपर होमऽ लागल। अजीब तरहक कार्य-संस्कृति उत्पन्न भऽ गेल।

घरमे दाइ-वाइ (मेडक)क आएब बन्द भऽ गेल छल। हमर पत्नी घरक काजसँ तङ्ग भऽ गेलीह। घरक खिड़कीक बाहर रोड पर एम्बूलेन्सक आवाज, अजीव कर्कश स्वर आ सुनसान शहर। किछु दिन तँ ज्वाइण्ट सेक्रेटरीसँ उपरका अधिकारी सभ डिपार्टमेण्ट सभ जाइत रहल लेकिन तकरा बाद सभ घरेमे रहि काज करय। सरकारक स्तर पर प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) तक बहुत कर्मठ भऽ काज होइत रहल। ऑक्सीजन पूर्त्तिक लेल डी.पी.आइ.आइ.टी.क भूमिका प्रमुख छल। बीच-बीचमे जखन सामान्य होअऽ लागल तँ बहुत दिनक बाद ऑफिस गेलहुँ।

स्विटजरलैण्डमे बैसल सौरभ हमरा सभक लेल चाउर, गहूम आ घरक सामान अमेजन द्वारा कीनि पठा दैत छल। घरसँ बाहर नहि निकली। मात्र साँझ कऽ छतक ऊपर चलि जाइ जतऽ हाथ पैर डोलेबाक मौका भेटए। सागर हैदराबादमे अमेजनमे

ज्वाइन कऽ लेने छल। अवसादसँ पीड़ित भेल, से नहि कहलक। भेक्सिन लेलाक बाद सभ निश्चिंत भेल। ई घटना विश्वक लेल एक्कैसम सदीक सभसँ पैघ दुर्घटना छल। एकर आरम्भमे चीनक पैघ भूमिका छल, तेँ ओकरा सभ देश बारि देलक। भारतमे 20 जुलाइ 2020 दिन एकटा आदेश निकलल गेल जे ओकरा संग व्यापार तखने हो जँ ओतुक्का कम्पनी एतऽ रजिस्टर्ड हो। हम सभ सलाह देने रही जे डिप्लोमेटिक स्तर पर काज होयबाक चाही। पूर्णतः चैनीज कम्पनीकेँ हटायब दुष्कर छल। ओकरासँ बहुत किछु सीखैक आवश्यकता छल। चीनक कम्पनीक प्रति लोककेँ उदासीनता भऽ गेल छल।

कतेको गोटे दिल्ली छोड़ि गाम चलि गेलाह। कतेकोक नौकरी चलि गेल। एही बीच हमर संस्था पी.पी.जी.क भाड़ा बढ़ैत गेल आ काज कम भऽ गेल। हम तथापि पंजाब सरकारक ड्रिकिंग वाटर प्रोजेक्ट पर ओकरा इंजिनीयर सभकेँ ट्रेनिङ देबऽ लगलहुँ। हमरा संग हमर पूर्व परिचित श्रीअनिल गुप्ता (ए.डी.जी/क्यू.ए) छलाह। ओहिमे शिवेन्द्र कुमार (रिटा. जी.एम./आइ.सी.एफ.)मे पी.पी.जी.क सदस्य छलाह। हुनका द्वारा वर्ल्ड बैंकक टीमक सहयोग भेटल। एहिसँ जे राजस्व आएल ताहिसँ भाड़ा देलहुँ। हरिमोहन कृष्णन कोचीनसँ जूम पोर्टल द्वारा सहयोग करैत छलाह। एहि बीच पी.पी.जी.क किछु सदस्य जिनका हाथमे बैंकक चेक बनेबाक शक्ति देने छलियनि, ओ लोकनि कोनो कारणे सहयोगसँ वंचित कएलनि। हमरा लेल अगिला प्रोग्रामक रूपरेखा बनाबऽमे दिक्कत भऽ गेल। तेँ हम एकटा इ.जी.बी.एम. मीटिंग करैक लेल नोटिस देलहुँ सभ सदस्यकेँ। बेशी सदस्य देशसँ बाहर छलाह। जे क्रियाशील छलाह ताहिमे वर्माजी अध्यक्ष आ श्री वार्ष्णेय (सचिव) कोनो तरहक सहयोग देबासँ हाथ खींचि लेलनि। ओ सब बैंकक Signatory (हस्ताक्षरकर्त्ता) सेहो छलाह। हम एक मासक नोटिस दैत एकटा ऑनलाइन मीटिंग रखलहुँ आ अपन मन्तव्य देलहुँ जे ऑफिसक भाड़ा पी.पी.जी.क राजस्वकेँ घटा रहल छलतेँ कोनो नव प्रोजेक्ट शुरू करबाक पूर्व पुरान देनदारी सबकेँ खत्म कएल जाए। किनको सहयोग नहि भेटल। तेँ हम पी.पी.जी.क प्रेसिडेंण्टक पदसँ रिजाइन कऽ देलहुँ। ओ क्षण बहुत चिंतनीय छल, कारण हमर इच्छा छल जे एहि तरहक विशेष संस्थान जे भारतक प्रतिष्ठित अवकाशप्राप्त अधिकारीक छल ओहिमे नव-नव लोककेँ जोड़ैत रही जाहिसँ सरकारी या गैरसरकारी सब संस्थानके 'लोकक्रय' विषयक जानकारी आ अनुभव भेटैक।

हम अपन सेवा उद्योग मंत्रालयके पूर्णतः देबऽ लगलहुँ। संगहि मध्यस्थताक काजमे संलग्न रहलहुँ। उद्योग विभाग डी.पी.आइ.आइ.टी.क सचिव डा. महापात्रा कोविड-19सँ संक्रमित होइत एम्समे भर्ती छलाह। एक मासक बाद ओ दुनिञासँ चलि गेलाह।

हुनका समयमे हम ‘लिफ्ट’क नव मानक स्पेशिफिकेशन बनबौलहुँ बी.एस.आइ. द्वारा। कतेको प्रोजेक्टक शिकायतकेँ सम्मिलित प्रयाससँ दिशा देल गेल।

एम.एस.एम.इ. मंत्रालयक संग अनेक बैसक आ पत्राचार भेल। डी.सी. (एम.एस.एम.इ.)केँ कहल गेल जे अपन ‘लोकक्रय’ नीतिक पुनर्वीक्षण करथि जाहिसँ देश भरिक छोट उद्योगकेँ ओकर लाभ भेटैत। मात्र 3.2% लघु उद्योग सरकारी क्रयमे लाभान्वित होइत छल जखन कि भारत सरकारक नीति छल जे कमसँ कम 25%क भागीदारी हो।

अक्टूबर 2021मे हमर कार्यकाल बीति गेल आ हम 70 वर्षक नजदीक आबि गेलहुँ। सोचलहुँ जे प्रतिदिन ऑफिस जाइक जे व्यस्तता छल से कहियो तँ समाप्त करैये पड़त, तेँ किएक ने एखने समाप्त करी। तेँ कोनो प्रयास नहि कयल। स्वतंत्र रूपेँ कैकटा काज (रेलवेक इन्क्वायरी आ मध्यस्थता) हमरा लग लम्बित छल जे पूरा करबाक छल।

***

अध्याय–20

भरत वाक्य

मधुबनी (पूर्वमे दरभंगा) जिलान्तर्गत एक छोट गाम, मेघौल (जे भवानीपुर पंचायतक अङ्ग अछि)सँ निकलि पटना विज्ञान महाविद्यालय तकक यात्रा दुर्लभ मुदा जीवन्त रहल। हमरा गामक प्राथमिक विद्यालयक हेड मास्टर साहेब 'बूढ़ा मास्टर' बड़ मानैत छलाह। भवानीपुरक माध्यमिक विद्यालयक हेड 'करिया पंडितजी' छलाह तँ बड़ करगर मुदा हमरा एहि लेल मानैत छलाह जे संस्कृत शब्द रूप आ धातु रूप रटिकऽ पूरा सुना दियनि। हमर उच्च विद्यालय, बलौड़ (मनीगाछी लग) गामसँ 3-4 किमी. दूर छल। बाधे-बाधे जाइ अपन ग्रामीण संगी सभक संग। ओतऽ हेड मास्टर छलाह श्री कामेश्वर लाल दास–हमर संगी धीरेन्द्र कु. दासक पिता। ओ अनुशासनक बड़ पक्का। ओतऽ चनौरक महेश बाबू आ बचनू पंडितजी सेहो नीक शिक्षा देलनि। स्थानीय शिक्षक विनोद बाबू अंग्रेजी पढ़ाबथि आ लोकप्रिय शिक्षक गिरिजा बाबू हिन्दी आ सामान्य विज्ञान। योगेन्द्र बाबू इतिहास आ श्री रामप्रीत यादवजी विज्ञान पढ़ाबथि। भवानीपुरक गुणानन्द बाबू बलौड़मे रसायन विज्ञानक विशिष्ट शिक्षक छलाह आ ड्रामामे निपुण। हमरा कहलनि–"कलाकेँ नुका कऽ नहि राखी। जखन मौका हो तँ अवश्य अभिव्यक्त करी।" ओ हमरा 'श्रीकृष्ण' नाटकमे सेहो पार्ट दिअओलनि।

गामक वातावरण कृषक परिवारक छल। दादा (हमर पिता)क संगे खेत आ खरिहान जाइ। गाछी-बिरछीक आम ओगरय आ तोड़य जाइत रही। नवकी पोखरिक उजहियामे माछ बीछऽ सेहो जाइ कहियो-कहियो। पोखरिक महारपर बनल अखाड़ामे कुश्ती सेहो लड़ी आ पोखरिक पुबरिया महार पर बनाओल अपियारीसँ माछ सेहो बिछैत रही। हमरा टोलमे सब हमरा बड़ मानैत छलाह। दाइ (हमर विधवा काकी)क बारल लालटेमसँ साँझ आ भोर खूब पढ़ी। भोरुका ट्रेनक पुक्की आ सकरी मिलक सीटी। सायरेन निन्नसँ जगबैत छल–वैह छल हमर घड़ी।

मोनमे जड़ैत रहल दीप, जे कोनो काज करब से उच्च कोटिक। क्लास-1सँ नीचा नोकरी नहि करब आ नीक विद्यालयक शिक्षकसँ पढ़ब। दादा ज्यादे पढ़ल नहि छलाह तेँ कहैत छलाह "जे मोन होइए, से पढ़ू"। ओ एकटा नेसफिल्ड इंगलिश व्याकरण आ यादव चन्द्र चक्रवर्तीक गणितक किताब जरूर देलनि। कहलनिन्ह पढ़ि अपन खाली समय बिताउ।

पटना विश्वविद्यालयसँ काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक सफर बहुत उत्साहपूर्ण आ आँखि खोलऽबला छल। राज्य आ देशक विभिन्न भाषा-भाषी आ विभिन्न संस्कृतिमे पलल समवर्ती छात्र सभसँ भेट-घाँट आ मित्रता भेल। एखनहुँ हमर आइ.टी., बी.एच. यू. 1974क विशाल समुदाय ह्वाट्सअप आ फोन पर सम्वाद-विनिमय करैत रहैत अछि। एकर पचासम वर्ष अक्टूबर 2024मे बनारसमे मनाओल गेल।

रेलवेक सेवा संसार विशिष्ट रहल। सभ क्षेत्रक अधिकारीक संग नीक संबंध रहल। भंडार विभागक हमर कैडर रहितो, यांत्रिक, विद्युत, इजीनियरिंग, ट्रैफिक, वित्त, सिग्नल आ कार्मिक विभागक उच्च अधिकारी सभक संग नीक विचार-विनिमय होइत रहल। रेल सेवामे बहुत तरहक अनुभव, वैयक्तिक, व्यासायिक आ सामाजिक भेटल। भारतीय पूर्ति सेवा (आइ.एस.एस.)क संग जे आरम्भमे समय बीतल सेहो अविस्मरणीय। तेँ वाणिज्य विभागक अधिकारी सब एखनो व्यक्तिगतरूपेँ सम्बद्ध छथि। दिल्ली, बम्बइ, कलकत्ता आ पटनामे काजक दौरान जे समय बीतल ताहिमे बिहारक आ खास कऽ मैथिली भाषा-भाषी लोक आ संस्थासँ आत्मीय सम्बन्ध भऽ गेल।

अपन मातृभाषा 'मैथिली'क प्रति सम्वेदना सब दिन रहल। गोट-पगरे लिखी। ज्यादे मौका नहि भेटल लिखबाक आ पढ़बाक। सेवासँ अवकाश प्राप्तिक बाद ई मौका भेटल। मोनमे कचोट रहिए गेल जे मैथिलीमे पत्रकारिता बढ़ैत आ नव-नव लेखनकेँ प्रोत्साहन होइत। 'मिथिला मिहिर'क गरिमा देखल छल। सभ शनि कऽ गामसँ भोरे मनीगाछी जाइत रही आ मिथिला मिहिरक प्रति कीनि आनी। कहियो-कहियो हमर रचना सेहो छपैत छल। मिथिला मिहिरक बाद 'मिथिला दर्शन' बहुत दिन तक पढ़लहुँ मुदा दुर्भाग्यवश ओ सेहो बन्न भऽ गेल। चेतना समितिक 'घर-बाहर' नियमित रूपेँ अबैछ। हैदराबादसँ श्री चन्द्रमोहन कर्णजीक 'देसिल बयना' आ आभासी पत्रिका इ.विदेह (गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा सम्पादित) समय-समय पर अबैछ। भारत सन विशाल देशमे जतऽ मिथिलांचलक प्रवासी सभ ठाम जीवन्त छथि, मैथिली पत्रिकाक निरन्तरता व्यावसायिक वा स्थापित सामाजिक संस्था मात्र द्वारा कएल जा सकैछ जाहिसँ गाम आ शहरक बीच भाषा-साहित्यक विकास आ प्रकाश दुनूमे मदति

हो। एहिसँ समाजक राजनैतिक चेतना सेहो बढ़त। पलायनक एहि युगमे परिवारसँ कटैत युवा मैथिल बच्चा जे कोनो वर्ग, जाति आ लिङ्गक हो, तकर स्वाभिमान बढ़तैक। एहि काजमे प्रवासी सभकेँ मिथिलांचलक (एम्बेसेडर) सांस्कृतिक दूत बनि काज करऽ पड़तनि। मिथिलामे भाषाक चेतना जाग्रत तखने होयत।

मैथिली भाषा, संस्कृति आ मिथिलांचलसँ जुड़ल किशोर आ युवामे प्रेरणा, चेतना आ कुशलताक वृद्धि होइक तकर असीम आवश्यकता अछि। एकर सम्भावना सेहो बहुत। नव-नव लोक सभ अपन ज्ञान आ रचनात्मक काजसँ भारतक निर्माणमे संलग्न छथि। एकरा एक नीक दिशा दिस निर्देशित कयल जा सकैछ।

जँ अभाव अछि तँ सक्षम नेतृत्वक आ प्रबुद्ध समाजकेँ ओकर मुख्यधारामे अनबाक। भाषा, संस्कृति आ समाजक लेल बनल निजी संस्था सब आन्तरिक रूपेँ कलुषित कल्पित रहैछ। आपसी वैमनस्य आ निष्पक्ष नेतृत्वक अभाव अछि। ओना कोनो संस्था जे किछु काज करैछ, से सराहनीय, तेँ मौका पाबि सब ठाम जाइत रहैत छी।

मिथिलाक विद्वत् समाजमे कौशल (Talent)क कमी नहि अछि। अनपढ़ गृहिणी सेहो अपन बाल-बच्चाकेँ शिक्षा आ कौशल द्वारा आगाँ बढ़ाबक प्रयासमे रत रहैत छथि। मिथिलांचलसँ निकलल युवा-शक्ति राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर बहुत क्रियाशील छथि। भारतक भूमंडलीकरण (1990 ई.)मे पलायन बहुते भेल। 2008 ई.मे एकर प्रक्रिया जखन उनटल, तकरा बादो पलायन चलिते अछि। जँ पिछड़ि गेल तँ मैथिली भाषा जकर पढ़निहार आ बजनिहार कम्मे होइत गेल। एकर दूरगामी प्रभाव समाज पर पड़वे करत। भारतमे दक्षिण क्षेत्र (तमिल, मलयालम, तेलुगु आ कन्नड़), महाराष्ट्र आ बंगाल अपन भाषाक प्रति बहुत जाग्रत अछि, आ तेँ ओतऽ सामाजिक आ आर्थिक स्थिति उत्तर भारत सँ नीक। यूरोपक प्रगतिमे सेहो ओतुक्का भाषा (फ्रेंच, जर्मन, लैटिन) इत्यादिक महती योगदान रहल अछि। जापान आ चीनक लघु प्रौद्योगिकी आ माइक्रो एलेक्ट्रॉनिक्सक (miniature technique) उद्भव आ विकास तखनहि भेल जखन ओ विस्तृत विश्व-व्यापार सँ दूरी कएलक आ भाषाक द्वारा अवरोध (Barrier) बनौलक। ओना विश्वसँ व्यापारिक विस्तारक क्रममे 'भूमण्डलीकरण' आ 'स्वदेशीकरण'क चक्र (cycle) आ आवर्तन चलिते रहत। समय-समय पर एकर रूप बदलिते जायत। ताहि बीच वैह देश-प्रदेश ठाढ़ रहत जे आत्मनिर्भरताक आ सौजन्यता द्वारा अपन व्यक्ति, समाज, संस्कृति आ राष्ट्रकेँ सुरक्षित राखत।

***** ***** *****

अपन व्यावसायिक काजसँ विराम पाबि किछु लिखऽ लगलहुँ–मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे। अंग्रेजीमे प्रबन्ध विज्ञान पर सेहो। बहुत दिनसँ छोटका कका (केदार बाबू) जे अपन वयक चारिम खण्डमे 6टा मैथिली उपन्यास लिखलनि–'चमेली रानीसँ लऽ कऽ अवारा नहितन' धरि, कहैत रहैत छलाह जे अहूँ अपन रचना प्रकाशित कराउ। ओ अपन पब्लिशर इंडिका इन्फोमीडियाक अरविन्द गुप्ता जीसँ सेहो परिचय करौने छलाह। केदार बाबूक देहावसानक खबरि भेटल हमरा ट्रेनमे, जखन हम बिहार सम्पर्क क्रांतिमे दरभंगासँ दिल्ली अबैत रही। गुप्ताजीकेँ कहि एकटा प्रथम मैथिली कविता संग्रह 'सनेस' प्रकाशित कएल। एहिमे पुरान आ नव सब कविताक संग्रह अछि। एकर लोकार्पण भेल दिल्लीक साहित्य अकादेमीक सभागारमे, जाहिमे वैदेही फाउण्डेशन दिल्लीक अमरनाथ झा, कुमकुम, श्रीविमलझाजी इत्यादि सक्रिय छलाह। कुमकुम जीक पति श्री रवीन्द्रनाथ झाजी रिटायर GM, DOT हमर पुरान मित्र। सभागारमे प्रो. पंकज मिश्र (एच.ओ.डी., सेण्ट स्टीफन कॉलेज, DU); हमर पब्लिशर अरविन्द गुप्ताजी, बैद्यनाथझा; हमर पुरान सहकर्मी श्रीरमेशकुमारझा, श्रीसंजीवकुमार, डा. सुस्मिताझा, डी.के. सिंह, डी.डी. झा, अनिलझा, सुधीरनाथझा एवम् कतेको साहित्य प्रेमी छलाह। 'सनेस'क लोकार्पणक समय डा. शेफालिका वर्मा भावसँ अभिभूत भऽ गेलीह। डा. गङ्गेश गुंजनजी आ श्री नारायण कुमार, भू.पू. प्रो., गुवाना विश्वविद्यालय द. अमेरिका आ मानद निदेशक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद, अपन वक्तव्यसँ प्रेरित कयलनि। एहि अवसर पर रवीन्द्र ना. मिश्र उपन्यासकार एवम् बदरीनाथ झा (कवि) सेहो उपस्थित छलाह। अध्यक्ष श्रीप्रकाशचन्द्रझाजी रिटायर्ड (सीमा शुल्क) विशेष रूपेँ छलाह। ई हमर प्रेरणास्रोत सेहो छथि बाल्यावस्थेसँ।

'सनेस'क लोकार्पण–

– सभा बीच हमर निम्न गीत श्रोता सबकेँ बड़ नीक लगलनि–

– पप्पा, पूरी गोल किए।

– हे कृष्ण अहाँ वृन्दावनमे...

– नीक निपुत्रे रहब ओहिसँ बेटा जँ भऽ गेल बदमास

– गीतसँ भरि दी गगनकेँ।

आदरणीय मन्त्रेश्वर जीक सुझाव छल जे एहि गीत सबहक श्रव्य या दृश्य (Audio, Video) रिकॉर्ड बनाए प्रचार कएल जाए। डॉ. शेफालिका वर्मा जीक कथन छल जे 'सनेस'क किछु गीत बच्चा सबहक स्कूलमे सिखाओल जाए।

व्यावसायिक सभ काजक समाप्तिक बाद खाली समय किछु सार्थक करैक इच्छा रहैछ। जीवन यात्राक क्रममे कतहु अटकऽ पड़ि रहल अछि। फेर सोचैत छी जे मोनमे आबय तकर अभिव्यक्ति आ प्रकाश अवश्य हो। यैह हैत अपन धर्म। 'स्वयं दीपो भव'क पुरान विचारक अनुसरण करैत दीप जरा रहल छी। आ दीपक संग दोसर दीप बारैत दीपमालाक रूपमे जगजियार करैत अपन धर्म निमाहि रहल छी। सबकेँ बारऽ पड़ैछ अपन-अपन हिस्साक दीप–तेँ लिखलहुँ ई लघु पुस्तिका 'अपन-अपन दीप' आ ओहि दीपक इजोतमे ताकि रहल छी आगाँक बाट। इति शुभम्।

***

ज्यूरिख झील, स्विट्जरलैंड

विवाहक दिन, 1970

कार्यालय, डीजीएस एंड डी, बम्बई

पारिवारिक फोटो

बीएचयू के घनिष्ठ मित्र

हमर परिवार

हमर पारिवारिक नेटवर्क, बम्बई

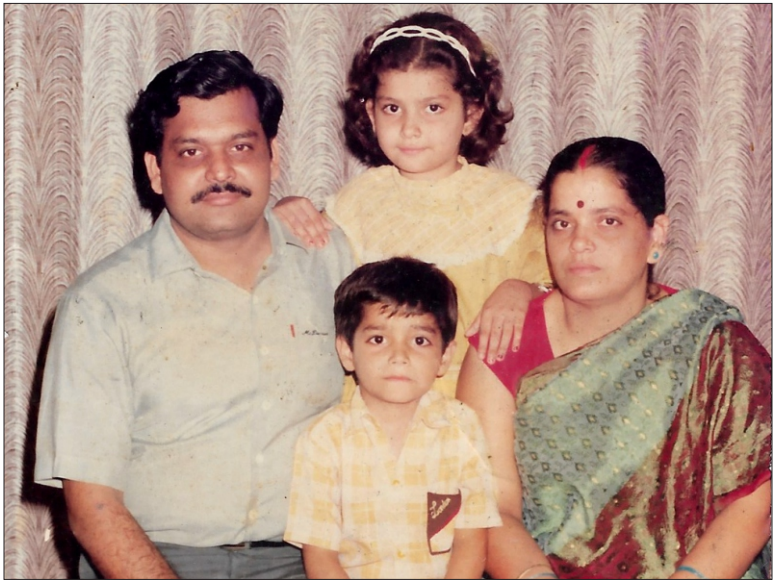

हमर परिवार

हमर परिवार

स्मिताक विवाहक समय हमर परिवार

स्मिता, सौरभ, सागर के सङ्ग हमर परिवार

बैंगलोर भ्रमण

बम्बईमे

मिथिलाहाटमे

पोती इराक सङ्ग, गाम मेघौलमे

पेरिसक महल वर्सायमे

फ्रांस के पेरिस के लूव्रे संग्रहालयमे

सिंगापुरमे अपन नातिन आ पत्नी सङ्ग

सिंगापुरमे हमर नाइत ध्रुव के सङ्ग

साहित्य अकादेमी सभागारमे ‘सनेस’ पुस्तकक विमोचनक अवसर पर मैथिलीक विदुषी लेखिका शेफालिका वर्मा आ प्रख्यात साहित्यकार गंगेश गुंजनजीक सङ्ग

‘सनेस’क लोकार्पण कार्यक्रममे उपस्थित विद्वत्जन

बीएचयू आईटी-1974 पूर्व छात्र, देहरादूनमे